ISSN-0971-8397

योजना

अप्रैल 2019 | विकास को समर्पित मासिक | ₹ 22

भारत में हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग

प्रतिभावान हाथों का जादू - हस्तशिल्प कलाकारों का सशक्तीकरण
शांतमनु

हस्तशिल्प कलाकारों का आर्थिक सशक्तीकरण
हेना नक़वी

हस्तशिल्प और कपड़ा निर्यात - वर्तमान और भविष्य
रंजीत मेहता

विशेष आलेख
महिलाएं, हुनर और उम्मीद के करघे
सैयदा हमीद

फोकस
कौशल से निखरती कारीगरी
गौरव कपूर

प्रकाशन विभाग की 350 से अधिक ई-पुस्तकें

अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं

play.google.com और **amazon.in**
से खरीदें

सभी प्लेटफॉर्म जैसे Android, iOS, Kindle
आदि के अनुरूप

सभी ई बुक्स की सूची यहाँ उपलब्ध है: **publicationsdivision.nic.in**

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली .110003

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :

फोन : 011-24367260, 24365610 ई-मेल : **businesswng@gmail.com**

ट्विटर पर फॉलो करें @ DPD_India

योजना

वर्ष : 63
अंक : 04

अप्रैल 2019
चैत्र-वैशाख, शक संवत् 1941

मूल्य : ₹ 22
पृष्ठ : 56

वेबसाइट www.yojana.gov.in

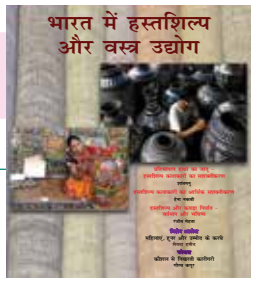

प्रधान संपादक : शमीमा सिद्दीकी
वरिष्ठ संपादक : कुलश्रेष्ठ कमल
संपादक : डॉ. ममता रानी

संपादकीय कार्यालय
648, सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली-110 003
दूरभाष (प्रधान संपादक): 24362971

संयुक्त निदेशक (उत्पादन): वी के मीणा
आवरण: गजानन पी धोपे

योजना का लक्ष्य देश के आर्थिक विकास से संबंधित मुद्दों का सरकारी नीतियों के व्यापक संदर्भ में गहराई से विश्लेषण कर इन पर विमर्श के लिए एक जीवंत मंच उपलब्ध कराना है।

योजना में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। जरूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से संबद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो।

योजना में प्रकाशित विज्ञापनों की विषयवस्तु के लिए योजना उत्तरदायी नहीं हैं।

योजना में प्रकाशित आलेखों में प्रयुक्त मानचित्र व प्रतीक आधिकारिक नहीं है, बल्कि सांकेतिक हैं। ये मानचित्र या प्रतीक किसी भी देश का आधिकारिक प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

योजना **मंगवाने की दरें**
एक वर्ष: ₹ 230, दो वर्ष: ₹ 430, तीन वर्ष: ₹ 610

पत्रिका न मिलने की शिकायत के लिए pdjucir@gmail.com **पर ईमेल करें, योजना की सदस्यता लेने या पुराने अंक मंगाने के लिए भी इसी ईमेल पर लिखें या संपर्क करें- दूरभाष: 011-24367453**
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–

संपादक (प्रसार एवं विज्ञापन)
प्रसार एवं विज्ञापन अनुभाग
प्रकाशन विभाग,
कमरा सं. 56, भूतल, सूचना भवन,
सीजीओ परिसर, लोधी रोड,
नयी दिल्ली-110003

इस अंक में

प्रतिभावान हाथों का जादू – हस्तशिल्प कलाकारों का सशक्तीकरण
शांतमनु 7

हस्तशिल्प कलाकारों का आर्थिक सशक्तीकरण
हेना नक़वी 11

क्या आप जानते हैं?

भारत में विभिन्न हस्तकलाएं 15

क्षेत्रीय विशेषताओं से भरपूर हस्तशिल्प एवं वस्त्र उद्योग
संजय श्रीवास्तव 19

विशेष आलेख

महिलाएं, हुनर और उम्मीद के करघे
सैयदा हमीद 22

हस्तशिल्प और कपड़ा निर्यात : वर्तमान और भविष्य
रंजीत मेहता 28

फोकस

कौशल से निखरती कारीगरी
गौरव कपूर 33

खादी की यात्रा: गांधी के खद्दर से फैशन का प्रतीक बनने तक
वी के सक्सेना 37

उत्तरपूर्व में विकास का ताना-बाना
जेवी मनीषा बजाज 40

भारत में हस्तशिल्प और दस्तकारी का ऑनलाइन कारोबार
अभिषेक कुमार सिंह 46

हस्तशिल्प – गांवों की खुशहाली का अनुपम स्रोत
अरुण तिवारी 50

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नयी दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011-24367260
दिल्ली	हाल सं. 196, पुराना सचिवालय	110054	011-23890205
नवी मुंबई	701, सी- विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नयी गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवादिगुड़ा सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बैंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2683407
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र-एच, अलीगंज	226024	0522-2325455
अहमदाबाद	द्वितीय तल, अलखनंदा हॉल, भद्रा, मदर टेरेसा रोड	380052	079-26588669

www.publicationsdivision.nic.in
@DPD_India

हिंदी, असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, ओडिया, पंजाबी तथा उर्दू में एक साथ प्रकाशित

CENGAGE

Maximize Your Chances in UPSC

Read EXAM CRACK Series®

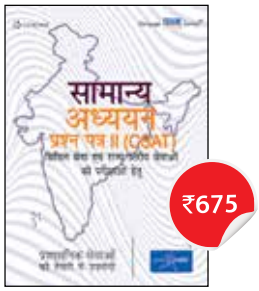

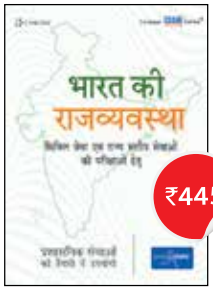

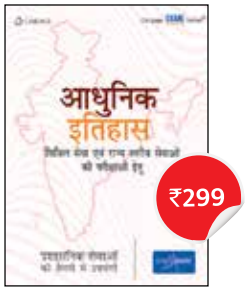

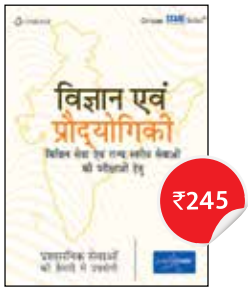

To receive daily updates on WhatsApp about Civil Services Examinations, message your name, city, and email on 7597840000

*Above-mentioned prices are tentative

इस श्रृंखला और डिजिटल समर्थन की मुख्य विशेषताएं

- मुश्किल विषयों पर विस्तारपूर्वक वीडियो
- स्मार्ट उपकरणों द्वारा प्रदर्शन विश्लेषण के साथ प्रारंभिक परीक्षा के लिए दैनिक प्रश्नोत्तरी
- लेखक से प्रतिक्रिया के साथ, उत्तर लेखन अभ्यास
- पुश (Push) अधिसूचना के माध्यम से विषय पर अद्यतन
- मासिक सारांश
- साक्षात्कार तैयारी में सहायता
- पिछली प्रारंभिक परीक्षा के प्रश्नों का अध्यायवार विस्तृत समाधान
- मुख्य परीक्षा उत्तर लिखने के लिए एक पूर्ण और व्यावहारिक दृष्टिकोण
- लेखकों द्वारा यूपीएससी प्रमुख परीक्षा के उत्तर

Cengage Learning India Private Limited,
Fusion Square, Plot No. 5A & 5B, 7th Floor, Sector-126, Noida, Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh-201303
For more information, please contact 9015946334 / 9582854545 (Delhi); 7607857421 (UP); 9386730079 (Bihar & Jharkhand);
Email: asia.infoindia@cengage.com, **Website:** www.cengage.co.in

YH-962/2/2018

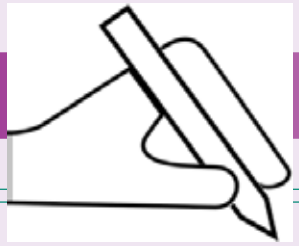

संपादकीय

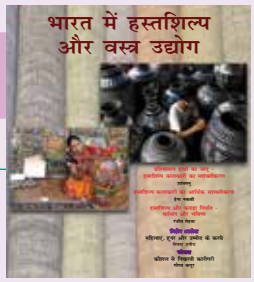

हस्तशिल्प और वस्त्र – भारत का गौरव

भारत के सभी इलाकों में हस्तशिल्प की अपनी-अपनी अनोखी परंपराएं हैं, जिनमें मुख्य रूप से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाता है। यह पूरा क्षेत्र श्रम आधारित है, इसलिए इसके जरिये देशभर में लाखों कारीगरों और कामगारों के लिए रोज़गार उपलब्ध कराया जाता है। एक ओर जहां कई कारीगरों और कामगारों के लिए हस्तशिल्प का काम आजीविका का पूर्णकालिक साधन है, वहीं दूसरी तरफ, खेतिहर मजदूरों के लिए यह आय का वैकल्पिक साधन भी है, जो उन दिनों में जब खेती का काम ज्यादा नहीं रहता, तब इस तरह के काम करते हैं। खेती-बाड़ी के काम से जुड़े परिवारों में महिलाएं इसका उपयोग रोज़गार के साधन के तौर पर करती हैं, जबकि उनके पुरुष खेतों में काम करने जाते हैं। हस्तशिल्प और वस्त्र क्षेत्र देश के तमाम ग्रामीण इलाकों में आजीविका का प्रमुख साधन है।

यह क्षेत्र विदेशी मुद्रा की कमाई के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। दरअसल, इसमें निर्यात की जबरदस्त संभावना है। भारतीय हस्तशिल्प और वस्त्रों की विदेश में काफी मांग है। अपने अनोखे रंग और डिज़ाइन के कारण इनकी लोकप्रियता काफी ज्यादा है। शॉल, जेवर, बैग, लकड़ी से बने सामान, कसीदाकारी वाली सामग्री जैसे भारतीय हस्तशिल्प से संबंधित उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी लोकप्रिय हैं।

भारतीय इतिहास के प्रत्येक विद्यार्थी को मशहूर मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यताओं के अवशेषों में मिली शिल्पकृतियों के बारे में पता है। नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति, जेवर- ये तमाम चीजें इस बात का प्रमाण हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता के काल से ही हस्तकलाएं भारतीय परंपरा का हिस्सा रही हैं। उसके बाद के नस्लों और राजवंशों ने इस गौरवशाली परंपरा को जारी रखते हुए विशेष सामग्री का इस्तेमाल कर निजी शैलियों को अपनाया। चाहे लकड़ी से बनी सहारनपुर की शिल्पकृतियों का मामला हो या आंध्र प्रदेश में बिदरी का काम, सभी इस गौरवशाली परंपरा की झलक पेश करते हैं। भारतीय-ईरानी शैली का सजावट संबंधी नमूना, कांचीपुरम सिल्क में ज़री के काम की समृद्धता, राजस्थान की कठपुतलियां आदि भी इसका उदाहरण हैं।

भारतीय वस्त्रों की विरासत भी सिंधु घाटी सभ्यता के दौर से ही शुरू होती है, जहां घर में कपास का इस्तेमाल कर कपड़ा बुना जाता था। हर क्षेत्र की अपनी पोशाक संबंधी परंपरा है। दक्षिण भारत की कांचीपुरम सिल्क साड़ी, उत्तर-पूर्व का मूंगा और टसर सिल्क, बनारसी साड़ी, चंदेरी कॉटन और सिल्क, कश्मीर का पश्मीना और शाहतूश शॉल, राजस्थान और कच्छ की कसीदाकारी, पंजाब की फुलकारी कढ़ाई, ये सभी चीजें भारत की समृद्ध परिधान परंपरा को दिखाती हैं। भारतीय सिल्क और जूट परिधान दुनिया भर में मशहूर हैं और इनकी मांग भी वैश्विक स्तर पर है।

कारीगरों को कौशल से लैस करने पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। कौशल प्रशिक्षण के जरिये कारीगरों को नई तकनीक और डिजाइन से रूबरू कराने और उत्पाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर का बनाने में मदद मिलती है।

इस क्षेत्र से जुड़े कामगारों की बात करें तो इसमें महिलाओं की बड़ी हिस्सेदारी है। उनके कौशल-युक्त हाथों से बारीक हस्तकला और बेहतरीन वस्त्रों को बनाना मुमकिन होता है- चाहे चन्नापटना के लकड़ी के खिलौने हों, कपड़ों पर कसीदाकारी या कालीन बुनाई का काम - महिलाएं इस क्षेत्र की रीढ़ हैं। इसलिए उनका आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण महत्वपूर्ण है।

इनमें से कई कारीगरों ने अपने पूर्वजों से प्राचीन परंपरा के रूप में अपने कौशल को सीखा और अपनी कला में ऊंचे स्तर पर कौशल और विशेषज्ञता हासिल की। इसके कारण यह उद्योग बाकी क्षेत्रों की तुलना में अलग है, जहां बड़े पैमाने पर कौशल और तकनीक औपचारिक तरीके से कॉलेज और अकादमी में सीखी जा सकती है। अतः, यह बेहद आवश्यक है कि इस प्राचीन परंपरा को खत्म नहीं होने दिया जाए। इससे जुड़े लोगों और अन्य पक्षों को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि यह प्राचीन कला और कौशल फले-फूले और इसके कुशल हाथ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनें। ❑

दृष्टि The Vision

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

- सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक परीक्षा) (19 बुकलेट्स)
- सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) (26 बुकलेट्स)
- इतिहास (वैकल्पिक विषय)
- सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रारंभिक परीक्षा) (27 बुकलेट्स)
- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (31 बुकलेट्स)
- दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय)
- सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (39 बुकलेट्स)
- हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

- सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (43 बुकलेट्स)
- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (33 बुकलेट्स)

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

- सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (36 बुकलेट्स)
- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (28 बुकलेट्स)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (34 बुकलेट्स)

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

- सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (36 बुकलेट्स)
- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (28 बुकलेट्स)

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

- सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) (25 बुकलेट्स)

प्रिलिम्स-2019 के लिये

करेंट अफेयर्स क्रैश कोर्स

ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में उपलब्ध
कुल 30-35 कक्षाएँ (लगभग 100 घंटे)

आरंभ

8 अप्रैल, प्रात: 7:30 बजे — क्लासरूम कार्यक्रम

14 अप्रैल — ऑनलाइन कार्यक्रम

ऑनलाइन प्रोग्राम में एडमिशन लेने के लिये आज ही गूगल प्ले स्टोर से हमारी एंड्रॉएड ऐप Drishti Video Classes इंस्टॉल करें।

For UPSC CSE (in English Medium)

- Prelims (18 GS + 3 CSAT Booklets)
- Mains (18 GS Booklets)
- Prelims + Mains (36 GS + 3 CSAT Booklets)

For UPPCS (in English Medium)

- Mains (19 GS + 1 Essay + 1 Compulsory Hindi Booklets)

Invitation Offer for UPPCS

Free 6 Months Subscription of Drishti Current Affairs Today Magazine for comprehensive coverage of current affairs

For Exciting offers visit our website "drishtiIAS.com" or call 8448485520

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485519, 8448485520, 87501-87501

YH-841/12/2018

प्रतिभावान हाथों का जादू - हस्तशिल्प कलाकारों का सशक्तीकरण

शांतमनु

भारतीय हस्तशिल्प की शुरुआत की कहानी काफी पुरानी है। यह उस दौर से शुरू होती है, जब इंसान गुफाओं में रहता था और पत्थरों पर चित्रकारी के जरिये अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति को रूप देता था। उस दौर से अब तक यह परंपरा कौशल के विभिन्न स्वरूपों, तकनीक, कला स्वरूपों और सौंदर्यबोध की कई अभिव्यक्तियों की यात्रा करते हुए वर्तमान दौर में पहुंची है। भारत के शिल्पकारों और कलाकारों को हमेशा से उनके हस्तशिल्प, डिजाइन और रंगों की समझ के लिए जाना जाता रहा है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से पता चलता है कि ईसा पूर्व से हजारों साल पहले भी भारतीय शिल्पकारों का काम शानदार था और पूरी दुनिया में उनके काम की पहचान थी। उस वक्त कुटीर उद्योग ने न सिर्फ ग्रामीण शिल्पकारों को रोज़गार मुहैया कराया बल्कि समानांतर अर्थव्यवस्था को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। यहां तक कि अब भी लघु और कुटीर क्षेत्र रोज़गार मुहैया कराकर शिल्पकारों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने में मददगार है। यह क्षेत्र बड़ी तादाद में महिलाओं और समाज के कमजोर तबके के लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराता है।

हस्तशिल्प को आम लोगों की कला बताया गया है और भारत में यह महज एक उद्योग नहीं है, बल्कि इसे कलाकारों और शिल्पकारों के सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति माना जाता है। यह न सिर्फ लोगों को रोज़ाना जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि उनकी कलात्मक इच्छाओं को भी पूरा करता है। सुप्रीम कोर्ट ने लुई शॉपे केस में 12 मार्च 1995 को दिए गए अपने फैसले में हस्तशिल्प की परिभाषा कुछ इस तरह से दी है: 'इसका

होशियारपुर, पंजाब के शिल्पगुरु पुरस्कार से सम्मानित श्री रूपन मथरु की काष्ठ पर प्लास्टिक से उकेरी गई शानदार कलाकृति

प्रमुख रूप से हाथ से बना होना जरूरी है। यह मायने नहीं रखता है कि इस प्रक्रिया में कुछ मशीनरी का भी इस्तेमाल किया गया है। यह सजावट, भराई संबंधी कार्य या इसी तरह के अन्य कार्यों में आकर्षक होना चाहिए। इस तरह की सजावट बड़े पैमाने पर होनी चाहिए, न कि सिर्फ इसकी खानपूर्ति हो।'

देश की अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प क्षेत्र की अहम भूमिका है। यह ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी इलाकों में एक बड़े तबके को रोज़गार उपलब्ध कराता है और देश के लिए बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा की कमाई भी करता है। साथ ही, यह देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी सहायक है। हस्तशिल्प में जबरदस्त संभावना है। ये न सिर्फ देश के तमाम कोनों में लाखों शिल्पकारों के अस्तित्व के लिए अहम हैं, बल्कि ऐसी गतिविधियों से जुड़ने वाले नए लोगों के लिए जरूरी हैं।

देश में तकरीबन 70 लाख शिल्पकार हैं। इनमें से 20 लाख कालीन क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। शिल्पकार 500 से भी ज्यादा तरह

देश की अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प क्षेत्र की अहम भूमिका है। यह ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी इलाकों में एक बड़े तबके को रोज़गार उपलब्ध कराता है और देश के लिए बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा की कमाई भी करता है। साथ ही, यह देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी सहायक है। हस्तशिल्प में जबरदस्त संभावना है। ये न सिर्फ देश के तमाम कोनों में लाखों शिल्पकारों के अस्तित्व के लिए अहम हैं, बल्कि ऐसी गतिविधियों से जुड़ने वाले नए लोगों के लिए जरूरी हैं

लेखक केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय में विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) हैं। ईमेल: smanu@ias.nic.in

ओडिशा में कटक के शिल्पगुरु पुरस्कार से सम्मानित श्री कल्पतरु महाराना की पत्थर की कलाकृति

के कौशल के क्षेत्र में काम करते हैं, मसलन ज़री जरदोई, टेराकोटा, पत्थरों को तराशने से जुड़ा कार्य, फुलकारी, लकड़ी संबंधी कार्य, कशीदाकारी, बरतने बनाने का काम आदि। इनमें से 35 कलाओं की पहचान 'लुप्तप्राय कलाओं' के रूप में की गई है, मसलन असमी जेवर, गंजीफा कार्ड, रोगन पेंटिंग, सांझी कौशल, चंबा रूमाल आदि। साथ ही 92 कलाओं का पंजीकरण 'भौगोलिक चिह्न' कानून के तहत किया गया है। इनमें मैसूर का गंजीफा कार्ड, मधुबनी पेटिंग, राजस्थान की कठपुतलियां, ओडिशा का पट्टचरित्र, बनारस की शीशे की मनिका और महाराष्ट्र की वर्ली पेटिंग शामिल हैं। तकरीबन 56 प्रतिशत शिल्पकार महिलाएं हैं।

हस्तशिल्प से जुड़े शिल्पकार मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं। इसके कारण बिचौलियों द्वारा उनका शोषण किए जाने का खतरा होता है। शिल्पकला क्षेत्र के पास कार्यशील पूंजी, नई तकनीक की अपर्याप्त उपलब्धता, पूर्ण बाजार और संस्थागत ढांचे का अभाव जैसी चुनौतियां हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए कई स्तरों पर प्रयास किए गए हैं और अब इस क्षेत्र में उत्पाद विकास, घरेलू स्तर पर बिक्री और निर्यात में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। 12वीं पचंवर्षीय योजना के आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं।

विकास आयुक्त कार्यालय (हस्तशिल्प) कौशल और कौशल आधारित गतिविधियों के लिए भारत सरकार का नोडल एजेंसी है। यह शिल्पकलाओं के विकास, निर्यात और मार्केटिंग में मदद मुहैया कराता है। इस संबंध में सहायता तकनीकी और वित्तीय मदद के रूप में दी जाती है। इसके तहत जमीनी स्तर पर कई तरह की योजनाओं को भी लागू किया जाता है।

विकास आयुक्त नोडल एजेंसी के तौर पर शिल्पकला क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार की कोशिशों में अग्रणी भूमिका निभाता है। विकास आयुक्त कार्यालय मुंबई, कोलकाता, लखनऊ, चेन्नई, गुवाहाटी व नई दिल्ली और अपनी 53 क्षेत्रीय इकाइयों के जरिये शिल्पकारों और इस क्षेत्र को मदद उपलब्ध कराता है।

देश के विभिन्न हिस्सों में पूरे साल मार्केटिंग संबंधी विभिन्न तरह के कार्यक्रमों के जरिये बाजार का संपर्क भी मुहैया कराया जाता है। गांधी शिल्प बाजार, क्राफ्ट बाजार आदि के आयोजन और देश के प्रमुख शॉपिंग मॉल में शिल्पकला प्रदर्शनी का आयोजन कर घरेलू विपणन मंच उपलब्ध कराया जाता है। पुरस्कार प्राप्त कर चुके शिल्पकारों की अंतरराष्ट्रीय विपणन कार्यक्रमों में सहभागिता सुनिश्चित कर उनके लिए अंतरराष्ट्रीय विपणन मंच मुहैया कराया जा रहा है।

हस्तशिल्प से जुड़े पुरस्कार में शिल्प गुरु पुरस्कार, राष्ट्रीय पुरस्कार, राष्ट्रीय मेधा प्रमाण पत्र और डिजाइन नवाचार पुरस्कार ऊंचे स्तर के पुरस्कार हैं। इन पुरस्कारों का मकसद बेहतरीन कलाकारों-शिल्पकारों को अपना शानदार प्रदर्शन बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना और अपनी पुरानी परंपरा को जीवित रखना है। हर साल 10 शिल्प गुरु पुरस्कार, 30 राष्ट्रीय पुरस्कार (महिला शिल्पकारों के लिए 5 राष्ट्रीय पुरस्कार और लुप्तप्राय कौशल को बढ़ावा देने के लिए 5 राष्ट्रीय पुरस्कार समेत), 40 मेधा प्रमाण पत्र पुरस्कार और 3 डिजाइन नवाचार पुरस्कार प्रतिभाशाली शिल्पकारों को दिए जाते हैं।

भारत विश्व के बाजार में हस्तशिल्प का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। दुनिया के बदलते परिदृश्य में विभिन्न देशों को निर्यात किए जाने वाले इस तरह के उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में लाइफस्टाइल उत्पाद का हिस्सा बन गए हैं। उपभोक्ताओं की बदलती पसंद और मिजाज को देश में मौजूद 70 लाख शिल्पकार भी समझ रहे हैं और इसका असर भी देखने को मिल रहा है। हालांकि, दुनिया के बदलते बाजार में इन शिल्पकारों-कलाकारों को अपनी-अपनी जगहों पर संस्थागत मदद की जरूरत है। इसके तहत विभिन्न जगहों पर शिल्पकला क्षेत्र बनाए जा सकते हैं, ताकि चीन, कोरिया, थाईलैंड आदि देशों के मुकाबले भारतीय शिल्पकारों के उत्पाद का प्रदर्शन ज्यादा बेहतर हो सके। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय शिल्पकारों के उत्पादों और उनके पारंपरिक कौशल की

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में राष्ट्रीय हस्तशिल्प व हथकरघा संग्रहालय

भारी मांग है। अब भारत से कुल ऐसे 199 उत्पादों का निर्यात किया जा रहा है। पिछले कुछ साल में भारत हस्तशिल्प से जुड़े उत्पादों का बड़ा निर्यातक रहा है और इसमें हर साल बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। पिछले 5 साल में हस्तशिल्प से जुड़े सामानों (धातु उत्पाद, लकड़ी के उत्पाद, हाथ की छपाई वाले कपड़े, कसीदाकारी वाले आइटम) का निर्यात जिन देशों को किया गया है, उनमें अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, ब्रिटेन, जर्मनी, नीदरलैंड, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, इटली, कनाडा, लैटिन अमेरिकी देश, जापान और स्विट्जरलैंड शामिल हैं।

साल 2013-14 से भारत हाथ से बनी कालीन का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। फिलहाल विश्व के कुल निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत है। देश में इस तरह के कुल उत्पादन का 85 प्रतिशत हिस्सा 100 से ज्यादा देशों को निर्यात किया जाता है। कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी 45 प्रतिशत है और जर्मनी, ब्रिटेन और संयुक्त अरब अमीरात की संयुक्त हिस्सेदारी 20 प्रतिशत है। चीन व ब्राजील, मेक्सिको, चिली और ईक्वडोर जैसे लैटिन अमेरिकी देश उभरते हुए बाजार हैं। भारत में हाथ से बनी कालीनें अपने खूबसूरत कौशल, पर्यावरण के अनुकूल रंगों, डिजाइन, विविधता और किफायती दरों में उपलब्धता के लिए दुनियाभर में मशहूर हैं। भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसके हाथ से बने कालीनों की रेंज 1,600 नॉट प्रति वर्ग इंच से लेकर 2,500 नॉट प्रति वर्ग इंच तक रहती है और इसमें 10 प्रकार से भी ज्यादा के कच्चे माल का इस्तेमाल होता है। साथ ही, भारत में सभी आकार और रंगों की कालीन बनाई जाती है।

हस्तशिल्प क्षेत्र के जरिये आर्थिक स्वतंत्रता हासिल होने से आजीविका जैसी चुनौतियों से निपटा जा सकता है और इससे ग्रामीण इलाकों में भी आय पैदा होने का मार्ग प्रशस्त होगा। साथ ही, कौशल का उन्नयन और शिल्पकला के क्षेत्र में विकास शिल्पकारों के विकास, गरीबी को कम करने और आय का साधन पैदा करने का शानदार तरीका है, जिससे सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलेगी।

भारत के योगदान को पहचानते हुए उसे दुनिया की सबसे पुरानी और बेहतरीन प्रदर्शनी 'एंबिएंट' में साझीदार देश बनाया गया। जर्मनी ने भारत की साझीदारी के साथ 8 से 12 फरवरी 2019 के दौरान 'एंबिएंट' का आयोजन किया और इसमें 80 देशों की 4,500 से भी ज्यादा कंपनियों ने हिस्सा लिया। इसमें 517 कंपनियों ने भी हिस्सा लिया और क्रिसमस डेकोरेशन, फैशन जेवर, लकड़ी से बनी शिल्पकला संबंधी सामग्री, परिधान, चमड़े के उत्पाद, लैंप आदि का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर जाने-माने शिल्पकारों-कलाकारों ने भारतीय हस्तकौशल का शानदार नमूना पेश किया।

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में मौजूद राष्ट्रीय हस्तशिल्प और हथकरघा संग्रहालय को आमतौर पर शिल्प संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। संग्रहालय के वास्तुविद अनुदेशक मशहूर वास्तुविद चार्ल्स कोरिया हैं। यह शिल्पकारों और बुनकरों की कलाओं को देखने की शानदार जगह है। संग्रहालय का अनुभव सीखने के लिहाज से भी उपयोगी हो सकता है, क्योंकि लोग सीधे विशेषज्ञ शिल्पकारों से मुलाकात कर सकते हैं, सीधा शिल्पकृतियों को खरीद सकते हैं और हस्तशिल्प का प्रदर्शन भी देख सकते हैं। यह संग्रहालय काफी बड़ा है और इसकी गैलरियां हस्तशिल्प और हथकरघा की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करती हैं। ❑

हस्तशिल्प के निर्यात की स्थिति

अमेरिका	32.20 प्रतिशत
यूरोप	21.65 प्रतिशत
बाकी दुनिया	46.14 प्रतिशत

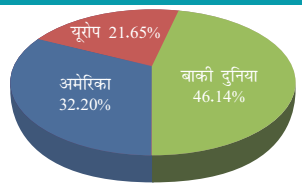

कालीन के निर्यात की स्थिति

अमेरिका	47.40 प्रतिशत
यूरोप	31.53 प्रतिशत
बाकी दुनिया	21.01 प्रतिशत

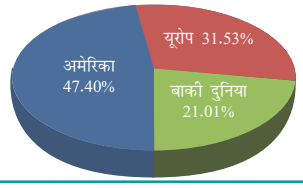

MD.: Niraj Singh

Divyasen Singh (Co-ordinator)

IAS GS World PCS

Committed To Excellence

"बड़े सपनों की बड़ी शुरूआत..."

सामान्य अध्ययन

Foundation Batch Starts...

दिल्ली केन्द्र	लखनऊ केन्द्र	प्रयागराज केन्द्र
29 Apr. | 11:30 am	10 Apr. | 8:30 am	16 Apr. | 5:00 pm (हिन्दी माध्यम)

BPSC

Mains Pattern Test-Series 2018 - 19

(Total Test - 15)

Start On 7 April

CURRENT 360° TEST SERIES

Revise Your Current Through Test and Text.

Medium:- हिन्दी / English

Start On 14 April

IAS MAINS TEST-SERIES-2019

(दिल्ली केन्द्र)

Total Test - 30

7 April

Medium:- हिन्दी / English

ऐसे छात्र जो किसी कारणवश UP PCS Mains Crash Course कक्षा कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकते उनके लिए घर बैठे विशेष दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (DLP)

for more details 8726027579

GS World IAS Institute | gsworldias@gmail.com | t.me/GSWorldIAS

DELHI CENTRE
629, Ground Floor, Main Road,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph.: 7042772062/63, 9868365322

ALLAHABAD CENTRE
GS World House, Stainly Road,
Near Traffic Choraha, Allahabad
Ph.: 0532-2266079, 8726027579

LUCKNOW CENTRE
A-7, Sector-J, Puraniya Chauraha
Aliganj, Lucknow
Ph.: 0522-4003197, 8756450894

YH-1079/2018

हस्तशिल्प कलाकारों का आर्थिक सशक्तीकरण

हेना नक़वी

सुंदर हस्तकलाओं के व्यापक दायरे में हमारे देश की समृद्ध विरासत के सबसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल हैं। चाहे वह गुजरात के कच्छ की कसीदाकारी हो, उत्तर प्रदेश की ज़री-ज़रदोज़ी चिकनकारी, कर्नाटक के लकड़ी के खिलौने या असम में बांस से जुड़ी हस्तकला, राजस्थान की कठपुतली या बिहार की सिक्की, तिकुली व मधुबनी पेंटिंग, ये सभी न सिर्फ अपने-अपने राज्यों की पारंपरिक कलाएं हैं, बल्कि कलाकारों के वैकल्पिक आय का अहम साधन भी हैं। इन तमाम विरासतों के कारण भारत को अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी अलग पहचान स्थापित करने में मदद मिली है।

हस्तकलाओं में हाथ या हाथ और सरल तकनीक, दोनों की मदद से बने उत्पाद शामिल हैं। हमारे देश की अनोखी विविधता की तरह हमारी हस्तकलाएं भी काफी अलग- अलग तरह की हैं और इन्हें कई तरह की श्रेणियों में बांटा जा सकता है। इनमें से कुछ सजावटी, धार्मिक, ऐतिहासिक, रोज़ाना इस्तेमाल के, सांकेतिक आदि हो सकते हैं। इस सेक्टर में ग्रामीण-कुटीर उद्योग, हथकरघा और कालीन क्षेत्र शामिल हैं। हस्तकलाओं को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल के उपयोग के लिए जाना जाता है। इसमें बड़े पैमाने पर प्राकृतिक और कृत्रिम चीजों मसलन बांस, पत्थर, धागे, गन्ना, कपड़े, मोती, धातु, शीशे आदि शामिल हैं।

हमारे देश की तकरीबन 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर है। गैर-कृषि या कम काम वाले मौसम में हस्तकलाएं इस आबादी के लिए आजीविका और खाद्य

हमारे देश में खूबसूरत शिल्पकलाओं की समृद्ध विरासत है। देश के तकरीबन हर राज्य की अपनी अनोखी शिल्पकला है। इस कला से जुड़े उत्पाद संबंधित समुदायों की संस्कृति का अहम हिस्सा हैं। इन शिल्पकलाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित किया गया है और इनमें शिल्पकारों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की भी क्षमता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में इस क्षेत्र का प्रमुख योगदान है

लेखिका बिहार सरकार के सामाजिक कल्याण विभाग के अंतर्गत 'सक्षम' संस्था में संचार व शोध से संबंधित राज्य कार्यक्रम प्रबंधक हैं। ईमेल: hena.naqvipti@gmail.com

असुरक्षा से बचाव का वैकल्पिक साधन बन जाती हैं। इस तरह से हस्तकलाएं भारतीय आबादी के बड़े हिस्से के लिए आजीविका का अहम साधन बन जाती हैं। 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान हस्तकला संबंधी गणना के मुताबिक 68.86 लाख कारीगर थे। इस आंकड़े से इस क्षेत्र की ताकत और व्यापकता का अंदाजा लगाया जा सकता है। यह क्षेत्र कारीगरों को विभिन्न तरीकों से रोज़गार मुहैया कराता है। इस क्षेत्र से जुड़ा एक और उपखंड है, जो एक और समूह के लिए रोज़गार की गुंजाइश बनाता है। ये लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से हस्तकला के निर्यात से जुड़े होते हैं। हस्तकलाओं का निर्यात विदेशी मुद्रा की कमाई के अहम स्रोत के तौर पर विकसित हो रहा है।

हस्तकलाओं के निर्यात का प्रचलन बढ़ रहा है और देश के कुल निर्यात में इसकी हिस्सेदारी ठीक-ठीक होने की तरफ बढ़ रही है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, 2015-16 में हाथ से बनी कालीन समेत हस्तकलाओं का कुल उत्पादन 41,418 करोड़ रुपये का था, जबकि हस्तकला से जुड़ी चीजों का निर्यात 30,939 करोड़ रुपये था। ये आंकड़े भारतीय अर्थव्यवस्था में इस क्षेत्र की भूमिका को साबित करते हैं।

घरेलू और विदेशी पर्यटकों द्वारा निशानी के तौर पर भारतीय हस्तकलाओं की खरीदारी एक परंपरा सी रही है। हस्तकलाएं पर्यटकों के ठिकानों के महत्व को थोड़ा सा और बढ़ाती हैं और यह पर्यटकों को भी अपनी तरह लुभाती है। इससे न सिर्फ स्थानीय कलाकारों की आमदनी बेहतर होती है, बल्कि आसपास के छोटे सेवा प्रदताओं को भी लाभ मिलता है। चूंकि ज्यादातर विक्रेता और सेवा प्रदाता असंगठित क्षेत्र से हैं, इसलिए हस्तकला क्षेत्र के माध्यम से उन्हें होने वाली आमदनी के बारे में किसी तरह का आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। बहरहाल, यह स्पष्ट है कि देश के पर्यटन क्षेत्र में हस्तकला का अहम योगदान है। इन प्रमुख उत्पादों के विपणन पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है। हस्तकला निर्यात संवर्द्धन परिषद (ईपीसीएच) उत्पाद आधारित प्रदर्शनियों का आयोजन करती है। इसके अलावा परिषद साल में दो बार 'भारतीय हस्तकला और उपहार मेला' भी आयोजित करती है। इन उत्पादों को विदेश में बढ़ावा देने के लिए कलाकारों/कारीगरों द्वारा उत्पादों की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है।

शिल्पकलाओं से कलाकारों को मिलती है ख्याति

मधुबनी या मिथिला पेंटिंग से जुड़ी बुजुर्ग शिल्पकार गोदावरी दत्ता को हाल में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। जाहिर तौर पर उन्होंने यह पुरस्कार प्रदान करने का मकसद बिहार की इस मशहूर शिल्पकला को सम्मान मुहैया कराना रहा है। गोदावरी दत्ता पिछले 50 साल से इस कला के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने कई देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। मधुबनी पेंटिंग को लेकर श्रीमती दत्ता और कुछ अन्य कलाकारों के समर्पण के परिणामस्वरूप बिहार में इस कला को नए स्वरूप में देखा जा सकता है। मधुबनी रेलवे स्टेशन से लेकर पटना में विभिन्न जगहों पर दीवारों पर इसकी झलक देखी जा सकती है।

बाजार विकास सहायता (एमडीए) और बाजार की उपलब्धता संबंधी पहल (एमएआई) जैसे कदमों के जरिये इन उत्पादों के बेहतर विपणन का खाका तैयार किया गया है। मेले, प्रदर्शनी और उत्पादक-खरीदार की बैठकों के जरिये विपणन को बेहतर बनाने की बात है। विपणन से जुड़ा ऑनलाइन मार्केटिंग पोर्टल 'इंडियन हैंडलूम बाजार' खरीदारों और विक्रेताओं के बीच सीधा संवाद के जरिये हस्तकलाओं के विपणन पर आधारित है। अक्टूबर 2017 में 200 जिलों में तकरीबन 400 हस्तकला सहयोग शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों के जरिये बड़ी संख्या में बुनकरों और कारीगरों को अपने छोटे उद्यमो को मजबूत करने में मदद मिली।

अब ज्यादा ध्यान इस बात पर है कि कारीगर और उनके उद्यम उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग कर हमारी अर्थव्यवस्था और समुदाय की सामाजिक-आर्थिक बेहतरी में योगदान करें। अपने उत्पादों की विश्वसनीयता बढ़ाने की खातिर कारीगरों और उनके संघों को भौगोलिक चिह्न (जीआईटैग) हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। जीआई का ठप्पा उत्पाद की उत्पत्ति के क्षेत्र के बारे में बताता है। जिन हस्तकलाओं पर जीआई का ठप्पा होता है, उनमें कांगड़ा पेटिंग, वाराणसी ज़री और साड़ी, बस्तर की लकड़ी से संबंधित कलाएं, पक्की मिट्टी (टेरेकोटा) से बने उत्पाद शामिल हैं। बड़े परिदृश्य के हिसाब से बात करें तो इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों से इस सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और आजीविका के संभावित साधन के तौर पर इसे अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने में मदद मिलेगी। साथ ही, बारीक स्तर पर बेरोज़गारी, गरीबी, पलायन और कर्ज जैसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक मुद्दों से निपटा जाएगा। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और इस तरह से भारतीय समाज की हालत को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। ❑

GUIDANCE IAS

MORE THAN A COACHING

सामान्य अध्ययन (फाउंडेशन कोर्स) कक्षा कार्यक्रम

प्रांभिक व मुख्य परीक्षा 2020

सामान्य अध्ययन के सभी **MODULE** भी उप्लब्ध हे

सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा **ANSWER WRITING** कार्यक्रम

अंग्रेजी माध्यम का प्रसिद्ध

भूगोल (वैकल्पिक) **@500+** प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

June 2019 by **HIMANSHU SIR**

भूगोल (वैकल्पिक) कक्षा कार्यक्रम 2020

भूगोल (वैकल्पिक) टेस्ट सीरीज़ (Offline/Online)

FLEXI* - वर्ष भर उप्लब्ध कार्यक्रम

* अपनी सुविधा अनुसार टेस्ट लिखे तथा टेस्ट की चर्चा का **video online** उप्लब्ध होगा

भूगोल (वैकल्पिक) विषय मुख्य परीक्षा 2017 के शीर्ष चार अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र हमारे **GUIDANCE IAS** से है

PRATHAM KAUSHIK - 327 Marks

DHRUV MISHRA - 318 Marks

SAI KIRAN D.N. - 316 Marks

DHEERAJ AGARWAL - 315 Marks

And Many Others Scored Above 290+

HIMANSHU SIR के निर्देशन मे सफल विद्यार्थी CSE 2017

B/12 MUKHERJEE NAGAR, Opp. MEERUT Wale Shop, DELHI-09

011-40539024 / 8750778855

YH-1083/2018

भारत में विभिन्न हस्तकलाएं

ज़री एक धागा है जो आमतौर पर शुद्ध सोना और चांदी से तैयार किया जाता है। इसका इस्तेमाल भारत, पाकिस्तान और ईरान में बनने वाले पारंपरिक कपड़ों और पर्दों आदि में किया जाता है। भारत में 4 तरह की ज़री तैयार होती है- अस्थावर ज़री, अर्द्ध-अस्थावर ज़री, कृत्रिम ज़री और प्लास्टिक ज़री। अस्थावर यानी वास्तविक ज़री चांदी और सोने से बनी होती है, जबकि अर्द्ध-अस्थावर ज़री में सोने की परत और तांबे की परत वाली

चांदी का इस्तेमाल किया जाता है। भारत में ज़री उद्योग का प्रमुख केंद्र सूरत है। ज़री उद्योग के बाकी केंद्रों में बरेली, वाराणसी, आगरा, हैदराबाद, लखनऊ, वडोदरा, लातूर, जयपुर, बाड़मेर आदि शामिल हैं।

चमड़े के जूते-चप्पल और अन्य उत्पाद

जूता-चप्पल समेत चमड़े का पूरा उद्योग भारत में सबसे पुराने उद्योगों में से एक है। भारत में इसके प्रमुख उत्पादन केंद्रों में तमिलनाडु का चेन्नई और रानीपेट, महाराष्ट्र का मुंबई, उत्तर प्रदेश स्थित आगरा, लखनऊ और कानपुर शामिल हैं। इसके अलावा, पंजाब में जालंधर, दिल्ली, हरियाणा में करनाल और फरीदाबाद, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, राजस्थान में जयपुर, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा और केरल में कालीकट भी चमड़ा उद्योग के प्रमुख केंद्र हैं। भारत अपने चमड़े के उत्पादों के लिए भी दुनियाभर में जाना जाता है। जैकेट, पाउच, बैग, बेल्ट, बटुआ, खिलौने जैसे चमड़े के

उत्पाद बड़ी मात्रा में भारत से निर्यात किए जाते हैं। देश के कुल निर्यात में चमड़े के बैग और बटुए का बड़ा हिस्सा है।

कालीन

कालीन उद्योग देश का एक बेहद पुराना उद्योग हैं और यह मुख्यतौर पर निर्यात से जुड़ा है। विभिन्न तरह के कालीनों में ऊनी दरी, हाथ से बनी ऊनी दरी, रेशमी दरी आदि शामिल हैं। कालीन उत्पादन के प्रमुख केंद्रों में भदोही, वाराणसी, मिर्जापुर, आगरा, जयपुर, बीकानेर, कश्मीर, पानीपत, ग्वालियर, पश्चिम बंगाल और उत्तराखंड और कर्नाटक के कुछ शहर और आंध्र प्रदेश का एल्लुरू शामिल है।

कंबल और दरी

भारत कंबल का प्रमुख उत्पादक देश है। भारत में विभिन्न तरह के कंबलों का उत्पादन होता है। इनमें नमदा, गब्बा, सूती के कंबल आदि शामिल हैं। इसके उत्पादन का प्रमुख केंद्रों में आगरा, भदोई, मिर्जापुर, जयपुर, पानीपत, कश्मीर आदि इलाके शामिल हैं। दरी के लिए मशहूर केंद्रों में पानीपत, भवानी (तमिलनाडु), नवलगंड (कर्नाटक), वारंगल (आंध्र प्रदेश), बाड़मेर और जैसलमेर (राजस्थान) प्रमुख हैं।

हथकरघा (हैंडलूम)

भारत हैंडलूम का प्रमुख उत्पादक देश है। विश्व में इसके कुल उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 85 प्रतिशत है। देश में कपड़ों के कुल उत्पादन (ऊन, रेशम और कच्चे धागे को छोड़कर) में हैंडलूम की हिस्सेदारी 14.6 प्रतिशत है। देश में कुल 470 हथकरघा केंद्र हैं, जिनमें से 230 मं 1,000 से भी ज्यादा करघे हैं। 41 क्लस्टर में 25,000 से भी ज्यादा करघे हैं। भारत में इसके प्रमुख केंद्रों में बहराइच, भुज, करीमनगर, पाटन, वाराणसी, नवान, शाहेर आदि हैं। हथकरघा उद्योग भारत में कृषि क्षेत्र के बाद रोज़गार पैदा करने वाला दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है,

कपड़ों पर हाथ से बनी कसीदाकारी

इस तरह की कसीदाकारी में कपड़ों पर धागों और कभी-कभी कुछ अन्य चीजों से सजावट की जाती है। अलग-अलग जगहों की कसीदाकारी मसलन लखनऊ की चिकनकारी और ज़रदोज़ी, बंगाल का कथा, पंजाब की फुलकारी, गुजरात की कुची कसीदाकारी और कश्मीर की कसीदाकारी प्रमुख हैं। ज़रदोज़ी पारंपरिक रूप से लखनऊ और इसके आसपास के 6 जिलों बाराबंकी, उन्नाव, सीतापुर, राय बरेली, हरदोई और अमेठी में प्रचलित है।

कपड़ों पर हाथ से छपाई

यह एक ऐसी कला है, जिसमें कपड़ों की रंगाई और किसी तरह के आकार के जरिये छपाई की जाती है। इस तरह की छपाई में बाटिक, कलमकारी, बंधनी आदि प्रमुख हैं। इस कला के कुछ अहम केंद्रों में हैदराबाद, मछलीपट्टनम, वाराणसी, फरुखाबाद, बाग, इंदौर, मंदसार, बुरहानपुर, अहमदाबाद, राजकोट, कच्छ, बागरू, चितरौली, सांगनेर, जयपुर, जोधपुर शामिल हैं।

बेंत और बांस

बेंत का प्रमुख रूप से इस्तेमाल फर्नीचर बनाने में किया जाता है, जबकि बांस का उपयोग सजावटी वस्तुएं मसलन लैंप-स्टैंड, छाते

का डंडा, स्क्रीन, फूलों के गमले, बास्केट, छड़ी, सीढ़ी, खिलौने, पंखे, कप, मग, चटाई आदि बनाने में होता है। असम (लखीमपुर, बंगाईगांव, गुवाहाटी आदि) और त्रिपुरा (अगरतला, नीलाघर आदि) बेंत और बांस से बने उत्पादों के प्रमुख ठिकाने हैं। असम में बांस की तकरीबन 50 किस्में पाई जाती हैं। बेंत और बांस हस्तकला के प्रमुख केंद्रों में मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल और ओडिशा हैं।

महीन जाली का काम व चांदी की वस्तुएं

महीन जाली का काम एक बेहद प्राचीन तकनीक है, जिसका इतिहास करीब 4,000 साल पुराना है। यह काम चांदी पर किया जाता है और इसमें काफी बारीक और तकनीकी कुशलता की जरूरत होती है। इस कार्य से जुड़े देश के दो प्रमुख केंद्र आंध्र प्रदेश के करीमनगर और ओडिशा के कटक में हैं। करीमनगर की यह परंपरा तकरीबन 200 साल पुरानी है। हालांकि, आंध्र प्रदेश के वारंगल में इसका चलन है। इसमें कच्चे माल के रूप में जो चीजें इस्तेमाल की जाती हैं, उनमें चांदी के तार, तांबा, चारकोल आदि शामिल हैं।

धातु से बने सामान

सोना, चांदी, पीतल, तांबा आदि से शानदार मूर्तियां, जेवर और अन्य उपयोगी सामान बनाने में भारतीय धातु कला का शानदार प्रदर्शन रहा है। इन धातुओं से हाथ के जरिये बनी विभिन्न वस्तुओं में मुरादाबाद का पीतल से बना सामान, मध्य प्रदेश, ओडिशा आदि राज्यों में भी धातुओं से जुड़े विभिन्न उत्पाद शामिल हैं। भारत दुनिया में पीतल से बनी वस्तुओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। इन धातुओं से बने सामानों के प्रमुख केंद्रों में मुर्शिदाबाद, मुरादाबाद, मदुरै, सलेम,

कटक और हरियाणा शामिल हैं।

बिदर की धातु हस्तकला की शुरुआत कर्नाटक के बिदर के रियासत में हुई, जो अब भी इस अनोखे धातु हस्तकला का प्रमुख केंद्र है। इसमें कई कई धातुओं की परत होती है, जहां एक धातु की परत को दूसरी धातु के ऊपर चढ़ाया जाता है। बिदरी उत्पादों में हुक्का, कटोरे, बक्से, मोमबत्ती स्टैंड, ट्रे, जेवर और बटन शामिल हैं। यह कला 13वीं सदी में ईरान से राजस्थान के अजमेर पहुंची और वहां से होते हुए बीजापुर आई और दक्षिणी सल्तनत के शासन के दौरान फली-फूली। महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले और आंध्र प्रदेश के हैदराबाद में इससे जुड़ा काम किया जाता है। बिदरी के लिए जिस धातु का इस्तेमाल किया जाता है, वह जस्ता और तांबा का मिश्रण रहता है।

जेवर

भारत में जेवर तैयार करने को सबसे विशिष्ट और बेहद कलात्मक कौशल माना जाता है। पारंपरिक और आधुनिक डिजाइन, दोनों लिहाज से भारत के पास हाथ से बने जेवर की स्थापित क्षमता है। देश में हाथ से बने जेवर के प्रमुख केंद्रों में दिल्ली, मुरादाबाद, संभल, जयपुर, कोहिमा, नेल्लोर, मैसूर, नालगोंडा, निजामाबाद आदि शामिल हैं। भारत में तकरीबन 5,00,000 स्वर्णकार और हीरे का जेवर बनाने वाले 6,000 कारीगर होने का अनुमान है।

मिट्टी से बने बरतन और अन्य चीजें

भारत में मिट्टी से बने विभिन्न वस्तुओं की व्यापक रेंज है। भारत में देशभर में मिट्टी से बने उत्पादों की कला रही है। असम में अशारीकंडी भारत का सबसे बड़ा केंद्र है, जहां टेराकोटा और मिट्टी के बरतन बनाने की कला का उपयोग होता है। इस तरह के बाकी केंद्रों में भद्रावती, बुलंदशहर, निजामाबाद, पुणे, चंद्रपुर आदि शामिल हैं। भारत में कारीगर समूहों में कुम्हार (मिट्टी का बरतन बनाने वाले) चौथा सबसे बड़ा समूह है। एक अनुमान के मुताबिक, तकरीबन 10 लाख लोग इस हस्तकला से जुड़े हैं। इस हस्तकला के लिए मुख्य कच्चा माल साधारण मिट्टी है।

टेराकोटा

टेराकोटा भी मिट्टी से बरतन बनाने जैसी कला है। इसके तहत कारीगर नदियों के पास मौजूद स्थानीय मिट्टी का इस्तेमाल कर लैंप, मोमबत्ती स्टैंड, देवी-देवताओं और पशुओं की प्रतिमाएं बनाते हैं।

लोक कलाकृतियां

भारतीय लोक कलाकृतियां ग्रामीण कलाकारों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति हैं और इन कलाकृतियों की विषय-वस्तु रामायण

और महाभारत, भारतीय पुराण और दिन-प्रति दिन की घटनाओं से प्रेरित हैं। भारत में अलग-अलग तरह की कुछ शानदार लोक कलाकृतियां हैं। मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति फर्श और दीवार पर कलाकृतियां बनाती हैं। वर्ली महाराष्ट्र में वर्ली जनजाति से जुड़ी रोज़मर्रा की और सामाजिक घटनाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। राजस्थान कपड़ों पर की जाने वाली पेंटिंग के लिए मशहूर है। बाकी कलाकृतियों में गुजरात और मध्य प्रदेश की पिथोरा पेटिंग, बिहार की मधुबनी पेंटिंग, पश्चिम बंगाल की चित्रकार पेंटिंग, ओडिशा की पटचित्र, आंध्र प्रदेश की कलमकारी शामिल हैं।

नारियल रस्सी

नारियल का खोल एक प्राकृतिक,पर्यावरण के अनुकूल, पानी से सुरक्षित और बेहद लचीला फाइबर है, जिसे नारियल के मोटे छिलकों से प्राप्त किया जा सकता है। यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है और इसका इस्तेमाल पर्यावरण के अनुकूल खिलौनों, चटाई, ब्रश, गद्दों, चाबी की रिंग, कलम स्टैंड और घर के सजावट से जुड़े अन्य सामानों में किया जाता है। इस हस्तकला से संबंधित काम मुख्य तौर पर ओडिशा (साक्षी गोपाल, पुरी, पिपली, भुवनेश्वर, बाटा मंगला और केंद्रपाड़ा) में होते हैं। केरल (अर्नाकुलम) में इसका उत्पादन होता है।

नाटक, वेशभूषा और कठपुतली

इसमें वैसी चीजों का निर्माण शामिल हैं, जो त्योहार और नाटकों आदि के इस्तेमाल से जुड़ी होती हैं। कठपुतली ऐसी ही एक कला है। भारत में इसकी समृद्ध परंपरा है। कुल चार तरह की कठपुतलियां होती हैं- दस्ताने की सहायता से नचाई जाने वाली कठपुतलियां, छड़ की मदद से नचाई जाने वाली, धागे से बांध कर नचाने वाली कठपुतलियां और छाया कठपुतलियां। देश के विभिन्न हिस्सों में कठपुतलियां का खेल होता है और सभी की अपनी अलग पहचान होती है। कठपुतलियों का खेल ओडिशा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, राजस्थान, बिहार और केरल समेत कई राज्यों में अलग-अलग नामों से देखने को मिलता है।

घास, पत्ती, बेंत और फाइबर

पारंपरिक तौर पर सभी संस्कृतियों में उपयोग संबंधी सामान बनाने के लिए प्राकृतिक रेशों का इस्तेमाल किया जाता है। विभिन्न तरह की हस्तकलाओं मसलन जूते-चप्पल, बास्केट, चटाई, चिक, बैग, बक्से आदि बनाने में पौधों के अलग-अलग हिस्सों का इस्तेमाल किया जाता है। फाइबर पेड़ों की छाल, तने, पत्तियों, भूसी, बीज, घास आदि से प्राप्त किया जा सकता है। महाराष्ट्र (सीसल),

केरल (ताड़ की पत्तियां, कोराई घास), तमिलनाडु (ताड़ की पत्तियां, कोराई घास), असम (शीतलपट्टी), मेघालय (शीतलपट्टी) बिहार (सिक्की और मुंज घास) आदि समेत कई राज्यों में फाइबर पाया जाता है। इस कला के प्रमुख केंद्रों में अल्मोड़ा और देहरादून (उत्तराखंड), गोवा, अर्नाकुलम (केरल), कुल्लू (हिमाचल प्रदेश), मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) आदि शामिल हैं। ❑

स्रोत- handicrafts.nic.in

पिछले 10 वर्षों से IAS टॉपर्स देने की परम्परा को जारी रखते हुए

पिछले पाँच वर्षों में Ethics (GS Paper-IV) में 300 से भी अधिक विद्यार्थी IAS/IPS/IFS इत्यादि सेवाओं में चयनित

Chief Mentor
Amit Kumar Singh

संस्थान की गुणवत्ता का आईना रिजल्ट है जो पिछले कई वर्षों से इग्नाइटेड माइन्ड्स, इसे सिद्ध करता आ रहा है।

Rank - 23rd
Anil Dhamelia

Rank - 27th
Mihir Patel

Rank - 35th
Shishir

Rank - 44th
Himanshu Jain

Rank - 45th
Mamta

Rank - 46th
Gaurav Singh Sogarwal

Rank - 61st
Milind Bapna

Rank - 67th
Parikh Mirant

Rank - 70th
Rajendra Patel

Rank - 81st
Rajarshi Shah

Rank - 82nd
Prateek Jain

Rank - 86th
Prateek

Rank - 99th
Namrata Jain

Rank - 106th
Prathit Charan

Rank - 153th
Sourav

And Many More...

मुख्य मार्गदर्शक अमित कुमार सिंह के निर्देशन में

दिल्ली केन्द्र

PHILOSOPHY

Video Class Available
(Section Wise)

Registration Open

अन्य कक्षा कार्यक्रम

निबंध

दर्शनशास्त्र

एथिक्स (GS-IV)

प्रयागराज केन्द्र

ETHICS
(GS-IV)

15 अप्रैल
2:00 PM | 6:30 PM

उत्तरलेखन कार्यक्रम
केश स्टडी

स्पेशल बैच प्रारम्भ

ANSWER WRITING PROGRAM

UPPCS के GS के प्रत्येक खण्ड की 8-10 दिवसीय कक्षाऐं
कक्षा के पूर्व नामांकन अनिवार्य

एथिक्स हमसे क्यों पढ़ें?

- क्योंकि हम एकमात्र संस्थान है जो एथिक्स की विशेषज्ञता का दावा अपने परिणामों के आधार पर कर रहे हैं, केवल खोखले प्रचार के आधार पर नहीं।
- क्योंकि एकमात्र हमारे शिक्षक को विश्वविद्यालय में एथिक्स पढ़ाने के साथ 24 वर्षों से एथिक्स के पठन-पाठन का अनुभव है।
- क्योंकि हम PCS के पाठ्यक्रम में एथिक्स शामिल होने पर रातों-रात एथिक्स के विशेषज्ञ नहीं बने हैं, बल्कि पिछले 6 वर्षों से लगातार दिल्ली-इलाहाबाद में एथिक्स का स्वतंत्र माड्यूल पढ़ाने वाले एकमात्र संस्थान है।
- क्योंकि हमारी कक्षाओं की गुणवत्ता इतनी बेहतर है कि देश के श्रेष्ठ कोचिंग संस्थानों से G.S. की कोचिंग लेने के बावजूद अंग्रेजी और हिन्दी दोनों माध्यम के विद्यार्थी हमारी कक्षाओं में एथिक्स पढ़ने आते रहे हैं।

IGNITED MINDS
A Premier Institute for IAS/PCS

DELHI CENTER (HQ)
A-2, 1st Floor, Comm. Comp. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
011-27654704, 9643760414, 8744082373

ALLAHABAD CENTER www.ignitedmindsces.com
H-1, 1st Floor, Ram Mohan Plaza, Madho Kunj, Katra
9389376518, 9793022444, 0532-2642251

YH-840/12/2018

क्षेत्रीय विशेषताओं से भरपूर हस्तशिल्प एवं वस्त्र उद्योग

संजय श्रीवास्तव

माना जाता है कि 5000 साल पहले सिंधू घाटी सभ्यता में रहने वाले अपने कपड़े खुद बनाते थे और इसका इस्तेमाल करते थे। हमारे देश में हथकरघा न केवल प्राचीन है बल्कि रोज़ाना के कामों से लेकर धार्मिक और सांस्कृतिक कामों में भी इसका प्रयोग होता था। इस तरह के कपड़े बनाने वाले विशेष कारीगर होते थे, जो विशेष तौर पर प्राकृतिक संसाधनों से धागे बनाने की कला सीख चुके थे। तब से लेकर अब तक हमारे हैंडलूम ने एक लंबा सफर तय किया है। हालांकि एक समय ऐसा जरूर आया था, जब लगने लगा था कि भारत की ये प्राचीन कला कहीं विलुप्त नहीं हो जाए लेकिन न केवल ये बचा रहा है बल्कि अब ये कहीं ज्यादा खूबसूरती के साथ देश-विदेश के लोगों को आकर्षित कर रहा है। इसमें तकनीक का इस्तेमाल होने लगा है। हालांकि उसकी राह में चुनौतियां भी कम नहीं।

क्षेत्रीय विशेषताओं वाली समृद्ध विरासत

हमारे देश में अलग अलग राज्यों के हैंडलूम के तरीके भी अलग हैं। उनके फैब्रिक, डिजाइन और रंग भी अलग हैं। लेकिन खासियत यही है कि ये सभी अपने अंचलों की संस्कृति और खासियतों को संजोए हुए हैं। अगर हम देश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक की बात करें तो हर राज्य के हैंडलूम की अपनी खासियतें हैं और अपने तौर-तरीके। लेकिन ये सभी अपने राज्यों की प्राचीन संस्कृतियों और परंपराओं को भी अपने उत्पादों के जरिए प्रदर्शित करती हैं। अगर कश्मीर का पश्मीना शाल और कालीन सैकड़ों सालों से विदेशों में धाक जमाए हुए हैं, तो उनकी बारीक कारीगरी पर हर कोई मुग्ध हो जाता है। समय के साथ उनकी डिजाइन और आकार-प्रकार जरूर बदले हैं लेकिन गुणवत्ता और खासियत वैसी ही।

आंध्र में कलमकारी में दस्तकारी के साथ हिंदू मैथोलॉजी और देवी-देवताओं को उससे दिखाया जाता है। मुगलों ने भी कलमकारी को प्रश्रय देने के साथ उत्साहित करने का काम किया। उत्तर पूर्व के राज्यों के हैंडलूम एकदम अलग तरह के और अलग फैब्रिक के हैं। इसमें ज्यामीतिय संरचनाएं डिजाइन के तौर पर उभरती हैं।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। ईमेल: sanjayratan@gmail.com

असम सिल्क को गोल्डन फाइबर भी कहा जाता है। भागलपुर सिल्क की साड़ियों में टसर कीड़ों के रेशों से बहुत बारीक सिल्क का काम होता है। छत्तीसगढ़ में भी दुर्लभ कोसा कीड़े से कोसा सिल्क तैयार करके उससे उत्पाद तैयार किए जाते हैं, ये दुनिया के बेहतरीन सिल्कों में एक है। हाथ में लेते ही ये अलग अहसास देता है। गुजरात में बंधिनी का काम होता है। तमाम रंगों में रोज़ाना इस्तेमाल के सामान और वस्त्र तैयार होते हैं। कश्मीर की तरह ही हिमाचल में ऊन से बुने जाने वाले कुल्लु शॉल्स की अपनी ख्याति है, झारखंड में कुचाई सिल्क का जादू सिर चढ़कर बोलता है। कर्नाटक अपने मैसूर सिल्क के लिए जाना जाता है, इसकी साज सज्जा, डिजाइन, ज़री, एब्रायडरी विश्व विख्यात है। खासतौर पर इनकी मांग बाहर के देशों में खूब है। देश में तो इसके दीवाने हैं ही। केरल में कसाऊ हस्तशिल्प मन मोह लेती हैं। मध्यप्रदेश के चंदेल क्षेत्र में तैयार होने वाली चंदेरी साड़ियों और उनके फैब्रिक के तो क्या ही कहने। बनारसी साड़ियां अपने सोने और चांदी के काम के कारण सदियों से प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र में पैठनी हैंडलूम को लोगों को मोहता है। कुल मिलाकर हमारे देश में न जाने कितनी तरह की हैंडलूम जमाने से विराजमान हैं।

आठवीं सदी के आसपास जब दुनियाभर में समुद्र व्यापार आकार लेने लगा था और जहाजी व्यापार के लिए दुनियाभर में व्यापारी, व्यापार की वस्तुओं की खोज कर रहे थे, उस समय यूरोप में भारत के मसालों, आभूषणों से लेकर हैंडलूम का डंका बजने लगने लगा था। भारत में बनने वाला सिल्क इतनी उच्च कोटि का होता था कि विदेशों में लोग चकित रह जाते थे कि उन्हें किस तरह तैयार किया जाता है। विदेशों में उनकी खासी मांग थी। ये सब केवल इसलिए था, क्योंकि हमारा हथकरघा बहुत विकसित स्थिति में था। बादशाह से लेकर आम लोगों तक हथकरघा से बने कपड़े पहुंचते थे। उनका बड़ा बाजार था। अंग्रेजों ने इसे काफी झटका दिया। उससे हमारे बुनकरों, कारीगरों और दस्तकारों की कमर ही टूट गई। इनका बाजार खत्म हो गया, उसकी जगह इंग्लैंड से फैक्ट्रियों से बनकर आने वाले कपड़ों ने ली। फिर खुद हमारे देश में बड़े पैमाने पर कपड़ा मिलें खुलनी शुरू हुईं। ये समय हैंडलूम के लिए सबसे कठिन समय था। बड़े पैमाने पर गांव गांव में होने वाला इसका काम लगभग बंद हो गया। पारंपरिक कारीगरों को आजीविका के लिए दूसरे काम करने पड़े।

नवाचार से आकर्षक बनने की राह

आज़ादी के बाद हैंडलूम को फिर विकसित करने का काम शुरू हुआ। कहना नहीं होगा कि अब हमारा हैंडलूम फिर देश-विदेश को लुभाने लगा है। उसमें नवाचार हो रहे हैं। नए डिजाइन और फैब्रिक पर काम हो रहा है। नई तकनीक इस काम में सहायक बन रही है। आमतौर पर ये धारणा फिर मजबूत हो गई है कि भारतीय हैंडलूम न केवल विशिष्ट बल्कि खूबसूरत और आरामदायक भी। इसलिए विदेशों से जब भी कोई भारत आता है तो वो हैंडलूम के बनाए सामानों और हस्तशिल्प को जरूर साथ ले जाना चाहता है।

कुछ समय पहले चिली की राजधानी सेंटियागो में भारतीय हैंडलूम से बने वस्त्रों और हस्तशिल्प की एक प्रदर्शनी लगी तो बड़े पैमाने पर लोगों की भीड़ वहां टूट पड़ी। कोशिश हो रही है कि दुनियाभर में जगह जगह भारतीय हैंडलूम और हस्तशिल्प मेले लगाए जाएं। इससे न केवल इसका व्यवसाय बढ़ेगा बल्कि हैंडलूम सेक्टर बड़ी करवट ले सकेगा।

दुनियाभर में फिलहाल टैक्सटाइल निर्यात में चीन बेशक नंबर वन हो लेकिन बात अगर हाथ से बने कपड़ों की आती है, तो भारत बेशक उसमें उससे आगे है। भारतीय

हैंडलूम की खपत अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, आस्ट्रेलिया, कनाड़ा, जर्मनी स्विटजरलैंड, खाड़ी देशों से लेकर नीदरलैंड्स, बेल्जियम समेत तमाम देशों में है। माना जाता है कि दुनियाभर में हाथ से बने जितने फैब्रिक का इस्तेमाल हो रहा है, उसमें 95 फीसदी भारत के ही हैं।

देशी टैक्सटाइल इंडस्ट्री सेक्टर न केवल देश का पुराना सेक्टर है बल्कि पिछले कुल सालों में ये इंडस्ट्री 150 बिलियन डॉलर के कारोबार तक पहुंच चुकी है। 2022 तक इसके 220 बिलियन डॉलर से ऊपर जाने की उम्मीद जाहिर की जा रही है। हैंडलूम को हालांकि देश में पॉवरलूम से ही बड़ी चुनौती जरूर मिल रही है, इसके बाद भी ये देश के सकल घरेलू उत्पाद में दो फीसदी से ऊपर का योगदान देता है। 2017-18 में टैक्सटाइल एक्सपोर्ट 39.2 बिलियन डॉलर का था, जिसमें हैंडलूम का हिस्सा सबसे बड़ा था। उसी तरह मौजूदा वित्तीय वर्ष के पहले सात महीनों में यह 22.9 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। टैक्सटाइल में हम चीन के बाद दूसरे नंबर पर जरूर हैं लेकिन हमारे हैंडलूम की उत्कृष्टता और गुणवत्ता के साथ खूबसूरती के कारण ये हाथों हाथ लिया जाता है। पिछले कुछ सालों में दुनियाभर में भारतीय हैंडलूम का एक बड़ा बाजार बाहर खड़ा हो चुका है। विदेशों में ये बात लोगों के दिमाग में बैठने लगी है कि भारतीय टैक्सटाइल की एक समृद्ध परंपरा और विरासत रही है। इसे खासतौर पर पर्यावरण के अनुकूल पूरी तरह प्राकृतिक चीजों से तैयार किया जाता है। भारतीय हैंडलूम को 45 फीसदी निर्यात विकासशील देशों में होता है तो 55 फीसदी विकसित देशों को।

केरल देश का अकेला राज्य है, जहां हैंडलूम को बढावा देने के लिए सभी सरकारी स्कूलों में यूनिफार्म के लिए हैंडलूम को अनिवार्य कर दिया गया है।

हैंडलूम सेक्टर में रोज़गार

वर्ष	संगठित रोज़गार	विनिर्माण रोज़गार
2013-14	24,74,903	1,35,38,114
2014-15	25,26,610	1.38,81, 386
2014-15	26,48,238	1,42,99,710
2015-16	26,94,280	1.49,09,052

जीडीपी में हैंडलूम का योगदान

वर्ष	प्रतिशत	विनिर्माण का उत्पाद
2013-14	2.16	18.08
2014-15	2.33	17.14
2015-16	2.22	17.84
2016-17	2.36	18.21

हर क्षेत्र की तरह कंप्यूटर यहां भी डिजाइन से लेकर उत्पादन तक पर गहरा असर छोड़ रहा है। पैकेजिंग और ब्रांडिंग के पहलू पर भी काम होने लगा है। कहा जा सकता है की भारतीय हस्तकला से जुड़े कलाकार नवाचार और नए बदलावों के लिए तैयार हैं।

इससे इस राज्य में हैंडलूम के कारीगरों की स्थिति बदलने के साथ वो इसे समृद्ध भी कर रहे हैं और नए लोग इस पेशे में आने लगे हैं। खासकर वो स्थिति खत्म हो रही है जबकि हैंडलूम से जुड़े कारीगरों के परिवार इसे छोड़कर दूसरे कामकाज की ओर जाने लगे थे। हैंडलूम सेक्टर से देशभर में कुल मिलाकर 43-44 लाख बुनकर, कारीगर और श्रमिक जुड़े हैं। अगर हैंडलूम को बढावा मिलेगा तो ये स्थिति और बढ़ेगी। हैंडलूम को जो रोज़गार है, उसमें गांवों का योगदान 84 फीसदी का है, शहरी योगदान महज 16 फीसदी। हैंडलूम और हस्तशिल्प को जोड़ दें को संगठित और गैर संगठित तौर पर ये सेक्टर 111 करोड़ लोगों की आजीविका का साधन हैं।

पिछले कुछ सालों में भारतीय हस्तकला में डिजाइन, नए आकार-प्रकार, क्रिएटिविटी पर काफी काम हुआ है। हस्तकला से जुड़े कलाकारों को नए तौर तरीकों और डिजाइन से रू-ब-रू ही नहीं कराया जा रहा बल्कि ये भी बताया जा रहा है कि बदलते जमाने के लिहाज से उन्हें अपने हैंडलूम और हस्तशिल्प में क्या बदलाव लाने चाहिए। इसलिए अब देश के कोने कोने में जो भी हैंडलूम तैयार हो रहे हैं- उनमें क्वालिटी से लेकर उत्पादन तक पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। वो अब आकर्षक रंगों और डिजाइन के साथ बेहतरीन फिनिशिंग वाले प्रोडक्ट बन गए हैं, जो आगे भी बढ़ रहे हैं और अंतर भी पैदा कर रहे हैं।

माना जाता है कि इस क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या जानकारी और गुणवत्ता सुधारने के साथ उत्पादकता में वृद्धि का है। किस तरह डिजाइनों में आकर्षक बदलाव किया जा सके। रंगों का इस्तेमाल कैसे हो। उत्पादों में बेहतर फिनिशिंग का क्या महत्व है-इन सब बातों को लेकर आजकल काफी वर्कशाप और सेमिनार हो रहे हैं। हर क्षेत्र की तरह कंप्यूटर यहां भी डिजाइन से लेकर उत्पादन तक पर गहरा असर छोड़ रहा है। पैकेजिंग और ब्रांडिंग के पहलू पर भी काम होने लगा है। कहा जा सकता है की भारतीय हस्तकला से जुड़े कलाकार नवाचार और नए बदलावों के लिए तैयार हैं। ❑

महिलाएं, हुनर और उम्मीद के करघे

सैयदा हमीद

भारतीय योजना आयोग में मेरे दस वर्षों के कार्यकाल के दौरान, मुझे हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई थी। हथकरघा और हस्तशिल्प के बारे में अपने अनुभवों को सांझा करने के लिए मैं दो घटनाओं का ज़िक्र करना चाहूंगी। ये दोनों कहानियां इस क्षेत्र के साथ मेरे आजीवन संबंध को परिभाषित करती हैं।

मेरी पहली कहानी उस महिला के बारे में है जिसने इस क्षेत्र में शानदार सफलता हासिल की है। ये एक ऐसी महिला है जिसने बड़े सपने देखे और हजारों महिलाओं तथा पुरुषों को आजीविका प्रदान की। अहिल्याबाई नाम की यह साधारण सी महिला, महाराष्ट्र के बीड शहर से थी। होल्कर राज्य के शासक महाराजा मल्हारराव ने तीज के त्यौहार पर उसे देखा। महाराजा उसे देखकर बहुत

प्रभावित हुए और उन्होंने उसे अपने छोटे बेटे खांडे राव होल्कर की दुल्हन के रूप में चुना। अहिल्याबाई 1753 में एक बाल-वधु के रूप में महेश्वर में आईं। कुछ साल बाद खांडे राव होल्कर की अचानक मृत्यु हो गई। युवा दुल्हन सती के लिए तैयार थी। जब वह अपने पति के अंतिम संस्कार के समय चिता पर लेटने वाली थी, महाराजा ने उसे रोकते हुए कहा 'मेरे बच्चे, महेश्वर और हमारे सिंहासन के उत्तराधिकारी को तुम्हारी जरूरत है। 'इस प्रकार अहिल्याबाई होल्कर अपने बेटे के लिए राज्याधिकारी बनीं और 1765 से 1795 तक महेश्वर पर शासन किया।

धीरे-धीरे वे अपनी प्रजा के साथ अंतरंग हो गईं। हर दिन सुबह की प्रार्थना के बाद वे अपने किले की प्राचीर पर बैठती और उनकी याचनाएं सुनती। प्रजा की याचनाएं सुनते सुनते वे इतनी द्रवीभूत हुईं कि उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि उसकी रियासत में किसी को भी आजीविका से वंचित नहीं रहने दिया जाएगा। उसने उन तरीकों के बारे में सोचा, जो उनके लिए रोज़गार सुनिश्चित कर सकते थे, जो मौसमी नहीं, बल्कि पूरे साल के लिए था। उसे पता चला कि सौ 'कोस की दूरी पर बुरहानपुर नामक एक शहर है जो हथकरघा बुनाई की समृद्ध परंपरा के लिए जाना जाता है। अहिल्याबाई ने उन्हें अपने करघे के साथ अपनी रियासत में बुलाया और उन्हें महेश्वर के पुरुषों तथा महिलाओं को बुनाई की कला सिखाने का आदेश दिया। इन लोगों ने जल्द ही यह कौशल सीख लिया था, लेकिन अब उन्हें अपने हुनर में कुछ अनोखी कलात्मकता लाने की आवश्यकता थी, जिसे आज उनके यूएसपी (विशेषता) के रूप में वर्णित किया जा सकता है। उन्हें नए नए पैटर्न बुनने की जरूरत थी जिससे उनका व्यावसाय अपनी विशेष छाप छोड़ सके। अहिल्याबाई होल्कर ने भी इस पर मंथन किया। फिर एक दिन जब वह अपने किले के नीचे, साफ और नीले रंग के नर्मदा के प्रवाह को निहार रही थी तो उसने उन तरंगों के साथ हजारों पैटर्न बनते देखे। पूरे साल लोगों का भरण पोषण करने वाले उपजाऊ तटों के कारण 'माता' कही जाने वाली नर्मदा या रेहवा पर अहिल्याबाई होल्कर को गहरी आस्था और विश्वास था। इसी के बल पर उसे नर्मदा की लहरों के विभिन्न मूड और आकार से बुनाई के पैटर्न बनाने की प्रेरणा मिली।

लेखिका पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सामाजिक व महिला अधिकार कार्यकर्ता, शिक्षाविद्, लेखिका, और योजना आयोग, भारत की पूर्व सदस्या हैं।
ईमेल: hameed.syeda@gmail.com

महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने लोगों को आजीविका का एक स्थायी साधन उपलब्ध कराने के लिए 1765 में अपने शहर में बुनकरी की शुरूआत की। मांडू और बुरहानपुर के बुनकरों ने इन लोगों को दिन-रात प्रशिक्षित किया। उसकी कलात्मक दूरदृष्टि से, महेश्वर शहर के सभी घाट, मंदिर और उसके महल में उकेरी गई उत्तम पत्थर की नक्काशी, हजारों बुनकरों के लिए डिजाइन गाइड बन गई। उन्होंने माहेश्वरी साड़ियों पर भी ये डिजाइन बनाकर उन्हें मनमोहक रूप दिया। महेश्वर के महलों और मंदिरों में कोई कीमती पत्थर या सोने की पत्ती का काम नहीं है, फिर भी वहां के लोग इसके दुनिया में सबसे अनोखी और सुंदर वास्तुकला होने का गर्व करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इनके माध्यम से एक परोपकारी रानी ने अपने प्रजा के लिए रोज़ीरोटी की व्यवस्था की। आज, 250 साल बाद भी ये डिजाइन यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि महेश्वर के लोग खाली पेट न रोएं।

इस कहानी ने मुझे मध्यप्रदेश जाने के लिए इतना प्रभावित किया कि मैं महेश्वर में 45 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले अप्रैल महीने में वहां जाने के लिए विवश हो गई। इससे देश में 65 लाख हथकरघा बुनकरों को 'आशा' नामक एक टेम्पलेट प्रदान किया।

वहां घाटों के ठीक ऊपर अहिल्याबाई महल के निकट रेहवा केंद्र बनाया गया है। इसका स्थान प्रतीकात्मक है जो यह दर्शाता

मैं यहां जिन बुनकरों से मिली, वे ऊर्जा और नए विचारों से ओतप्रोत थे। उन्हें इस बात का गर्व था कि वे अपने कौशल के माध्यम से गरिमामय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुछ लोग अपना स्वयं का काम करते हैं और कुछ अपने मालिकों के लिए काम करते हैं। लगभग सभी अपनी-अपनी डिजाइनिंग करते हैं। उन्होंने हमें अपनी सफलता की कहानी सुनाई। तीन दशक पहले महेश्वर में 25 से भी कम करघे बचे थे। बुनकर काम की तलाश में बाहर जाने लगे। फिर 1979 में शाही परिवार के वंशज रिचर्ड होल्कर ने महेश्वर के बुनाई क्षेत्र में जान फूंकने के लिए रेहवा सोसायटी की शुरुआत की

है कि हथकरघा बुनाई का महेश्वर में प्रवेश यहीं से हुआ था।

मैं यहां जिन बुनकरों से मिली, वे ऊर्जा और नए विचारों से ओतप्रोत थे। उन्हें इस बात का गर्व था कि वे अपने कौशल के माध्यम से गरिमामय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुछ लोग अपना स्वयं का काम करते हैं और कुछ अपने मालिकों के लिए काम करते हैं। लगभग सभी अपनी-अपनी डिजाइनिंग करते हैं। उन्होंने हमें अपनी सफलता की कहानी सुनाई। तीन दशक पहले महेश्वर में 25 से भी कम करघे बचे थे। बुनकर काम की तलाश में बाहर जाने लगे। फिर 1979 में शाही परिवार के वंशज रिचर्ड होल्कर ने महेश्वर के बुनाई क्षेत्र में जान फूंकने के लिए रेहवा सोसायटी की शुरुआत की। उन्होंने देश भर में यात्राएं कीं और प्रदर्शनियां आयोजित कर बुनकरों की कारीगरी का प्रदर्शन कर एक ब्रांड नाम खड़ा किया। होल्कर ने पारंपरिक डिजाइनों को बरकरार रखते हुए, नए रंगों को पेश किया और नौवारी (नौ गज) की साड़ी को छह गज में बदल दिया। बस फिर क्या था इस धंधे ने गति पकड़ ली और आर्डर की झड़ी लग गई। आज महेश्वर में 1750 करघे हैं। विविध प्रकार की पोशाक सामग्री, दुपट्टे और साज-सज्जा की वस्तुएं बनाई जा रही हैं। बुनकरों ने गर्व के साथ कहा, ''हमारा शहर देश का एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां नए करघे लगाए जा सकते हैं।'' ''हम आसानी से नए साथियों को समायोजित कर सकते हैं।''

महारानी ने जो अंकुर डाला वह पल्लवित होता गया और रेहवा का जन्म हुआ। जैसे ही मैंने रेहवा केंद्र में प्रवेश किया, मुझे लगा कि मैं पूरी तरह से एक अलग दुनिया में चली गयी हूं। आँगन में एक खूबसूरत पेड़ की छाया में महिलाएं चुपचाप से करघे पर काम कर रही थीं। समिति के 120 कामगारों में 60 प्रतिशत महिलाएं थीं।

ऐसा नहीं है कि महेश्वर में बुनकर गरीब नहीं हैं। यहां के 60 से 70 प्रतिशत बुनकर गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर करते हैं लेकिन उनकी स्थिति बनारस के बुनकरों की तुलना में बहुत बेहतर हैं और हर दिन उनके जीवन में सुधार हो रहा है।

महारानी ने जो अंकुर डाला वह पल्लवित होता गया और रेहवा का जन्म हुआ। जैसे ही मैंने रेहवा केंद्र में प्रवेश किया, मुझे लगा कि मैं पूरी तरह से एक अलग दुनिया में चली गयी हूं। आँगन में एक खूबसूरत पेड़ की छाया में महिलाएं चुपचाप से करघे पर काम कर रही थीं। समिति के 120 कामगारों में 60 प्रतिशत महिलाएं थीं। उनके बच्चे रेहवा द्वारा संचालित क्रेच और स्कूल में जाते हैं। एक बड़ी इमारत में चल रहा अहिल्या स्कूल सभी बुनकरों के बच्चों के लिए खुला है। इसमें उन्हें मध्याह्न भोजन भी दिया जाता है। रेहवा बुनकरों और उनके परिवारों के लिए एक स्वास्थ्य केंद्र है जहां विशेषज्ञ डाक्टर भी आते हैं। समिति हर कर्मचारी को दो कमरे का मकान और दो करघे उपलब्ध कराती है। उनमें से अधिकांश पिछले 15-16 वर्षों से वहां काम कर रहे हैं। वे सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक काम करते हैं और प्रति दिन 100 से 150 रुपये कमाते हैं। जब वे सेवानिवृत्त होते हैं या अक्षम हो जाते हैं तो उन्हें 500 से 1000 रुपये तक मासिक पेंशन मिलती है। इन सामाजिक दायित्वों के निर्वाह पर होने वाले खर्च से इस सवाल का जवाब मिल जाता है कि रेहवा साड़ी महंगी क्यों हैं।

मेरी दूसरी कहानी बॉलीवुड के सबसे पसंदीदा स्टार, आमिर खान के हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने के बारे में है।

''आप हमको कलाकर समझते हैं मगर असली कलाकर तो ये हैं...'' तारे जमीन पर और थ्री इडियट्स के निर्माता आमिर खान कैमरे के सामने थे। करीना कपूर उनके पास खड़ी थीं। पृष्ठभूमि में एक चंदेरी बुनकर हुकुम सिंह और उसके परिवार का साधारण सा मकान था। आमिर एक लकड़ी के करघे की ओर इशारा कर रहे था जिसमें 50,000 धागे तने थे।

यह कहानी इस तरह शुरू हुई–

पांच साल से मैं संघर्ष कर रही थी कि हमारे देश के हुनरमंद बुनकरों और कारीगरों की हालत कैसे सुधारी जाए। मैंने कई हथकरघा केंद्रों - बनारस, महेश्वर, पोचमपल्ली, पैठन, कोटा, कांचीपुरम, बाराबंकी का दौरा किया था। मैंने जोधपुर, मोलेला, मयूरभंज, बदोही, चंबा में कारीगरों को देखा था। हर जगह, मैंने निराशा देखी , वे हाथ जो सपने बुन सकते थे, जो सुंदरता का सृजन कर सकते थे वे बेकार हो रहे थे। युवा अपने पूर्वजों के हुनर को या तो सीख नहीं रहे थे या उनकी हुनर को उजागर नहीं कर रहे थे। वे रिक्शा चला रहे थे, कचरा उठा रहे थे, जिससे उनकी रचनात्मकता खत्म हो रही थी।

मैंने जब भी किसी हथकरघे के कपड़े को छुआ तो मुझे इसकी सुंदरता और लचीलेपन में जादू नजर आया लेकिन मैंने एक अंधकारमय भविष्य देखा, वही कपड़ा बहुत से अनुपयुक्त और अप्रचलित कपड़े के ढेर में धूल खा रहा था। यह गहरी चिंता की बात थी कि आने वाली पीढ़ियां इस ज्ञान से वंचित हो जाएंगी। वे कभी भी हिमरू या कानी शॉल नहीं देखेंगे, वे कभी भी किनख्वाब कपड़े को नहीं छू पाएंगे, जिसमें अरब नाइट्स की कहानियां बुनी गई थीं। अपने जीवनकाल की इस सबसे अधिक निराशाजनक स्थिति में मैं एक ऐसे शख्स से मिली, जिसने इस पन्ने को उलट दिया और हथकरघा क्षेत्र की बर्बादी की भविष्यवाणियों को बदल दिया। उस समय आमिर खान फिल्म तारे जमीं पर में व्यस्त थे।

उन्होंने रात्रि भोज के दौरान कुछ मिनटों तक मुझसे बातचीत की। उन कुछ मिनटों में मैंने उन्हें हमारे सबसे कुशल कलाकारों, बुनकरों की स्थिति में लगातार आ रही गिरावट के बारे में बताया। मैंने उन्हें ढाका की मलमल की कहानी सुनाई, कि कैसे एक अंगूठी से मलमल का पूरा थान पार किया जा सकता है और ब्रिटिश साम्राज्य के वफादार सेवकों ने किस प्रकार इसके बुनकरों के अंगूठे काट दिए ताकि बिरमिंघम की मिलों के कपड़े को इससे प्रतिस्पर्धा का सामना न करना पड़े।

आमिर खान ने इसे घ्यान से सुना। फिर कई महीने बीत गए। एक दिन मुझे एक संदेश मिला कि आमिर मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं एक युवा सहकर्मी के साथ उनसे मिलने गई। मेरा यह युवा सहकर्मी भी समय के साथ इस क्षेत्र का सबसे उत्कृष्ट वकील बन गया है। मैंने आमिर से कहा कि लाखों बुनकरों और कारीगरों का जीवन, हमारे व्यवस्थित समाज के पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक संपदा और धर्मनिरपेक्ष नैतिकता के प्रतीक, इस क्षेत्र पर निर्भर है और यह क्षेत्र विकेंद्रीकृत तथा बिखरा हुआ है। उसने यह कहानी मंत्रमुग्ध होकर सुनी कि पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा की बचत वाली इस कला के कारण भारत ने दुनिया में सर्वश्रेष्ठ स्थान हासिल किया है। मैंने योजना सलाहकार समिति के समूह की बैठक को बनारस के एक पुराने बुनकर निजामुद्दीन के शब्दों के साथ समाप्त किया–

बुनकर सारा जीवन बुनता ही गया
अपना क़फन ही न बुन सका...

कई महीनों बाद, मैं विमान में यात्रा कर रही थी मैंने वहां आमिर की अप्रत्याशित सफलता के बारे में सुना। ''हथकरघों के साथ आमिर पूरे मीडिया में छा गए हैं।'' मैंने जल्दी से यूट्यूब डाउनलोड किया। देखा वे वहां करीना के साथ घूमते हुए, चंदेरी की अंधेरी गलियों में, खूनी दरवाजा के पास, चंदेरी साड़ियों के बुनकर हुकुम सिंह के घर पर पहुंचे। इन दो शीर्ष सितारों ने जब उनके एक कमरे के घर में प्रवेश किया तो सबकी आंखें चौंधिया गईं। आमिर ने सबसे पहल उनसे ''बिन बुलाए मेहमान'' बनने के लिए माफी मांगी।

आमिर ने उनके दिलों के सबसे करीबी इस विषय के बारे में उनसे बातचीत की। उन्होंने उनकी आजीविका, हथकरघा उत्पादों के बाजारों और बिचौलियों के बारे में उनसे पूछा। उन्होंने बताया कि वे प्रतिदिन 50 रुपये प्रतिदिन कमा लेते हैं। उन्होंने बताया, ''हम में

से दो लोग 3 महीने में 6000 रुपये कमा लेते है, लेकिन हम जो साड़ी बुनते हैं, वह खुदरा बाजार में 25,000 रुपये में बिकती है।''

आमिर ने पूछा, ''क्या आप मेरे सूट के लिए कपड़ा बुन सकते हैं।'' ''क्यों नहीं, साहब, हम बिल्कुल बुन सकते हैं।'' फिर आमिर ने पूछा– ''मैं अपनी पत्नी किरणजी के लिए यह (चंदेरी, काली तथा सुनहरी) और एक यह (चंदेरी सफेद और सोना) साड़ी खरीदूंगा। इनके लिए मैं आपको बाजार मूल्य दूंगा, न कि थोक मूल्य 6000 रुपये। जब आमिर बात कर रहे थे तो कैमरामैन ने चुप्पी साधे खड़ी बुनकर, रामवती को कैमरे में कैद कर लिया। एक छोटी बच्ची आमिर का हाथ पकड़े खड़ी थी, उसकी आंखों में सपने थे। आमिर और करीना ने करघे के पास बैठकर, बॉबिन के माध्यम से सूत कातना सीखा, शटर का काम किया और इन दो नौसिखिया बुनकरों ने ताना बाना की पहली पंक्ति बनाई। इस तरह आमिर और करीना ने हैंडलूम की ब्रांडिंग की।

फिल्मी सितारे अपनी एक झलक दिखाने के लिए मोटी रकम वसूलने के लिए जाने जाते हैं। भारत के शीर्ष स्टार आमिर ने लाखों हुनरमंद पुरुषों और महिलाओं के लिए मुफ्त में अपने नाम, समय और प्रतिभा का उपहार दिया। अपने लाखों प्रशंसकों और दर्शकों के लिए उनके अंतिम शब्द थे। आइए हैंडलूम को 21 वीं सदी के भूमंडलीकृत विश्व के युवाओं के फैशन में शामिल करें।'

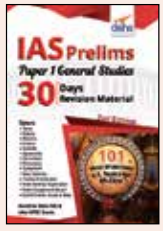

आज हम हथकरघा बुनकरों और हस्तशिल्पियों की कला की, शायर फैज़ अहमद फैज़ के शब्दों में सराहना करते हैं:

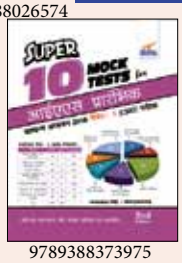

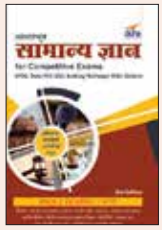

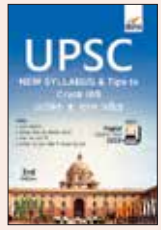

ये हाथ सलामत हैं जब तक
इस खून में हरारत है जब तक
ये शाम ओ सहर ये शाम ओ क़मर
ये अख़्तर ओ कौकब अपने हैं
ये शम्स ओ क़मर ये तब्ल ओ आलम
ये माल ओ हशम सब अपने हैं। ❑

YH-1054/2018

NEXT IAS

BIG LEARNINGS MADE EASY

AN INITIATIVE OF MADE EASY GROUP • UNDER THE GUIDANCE OF Mr. B. SINGH (CMD, MADE EASY GROUP)

CIVIL SERVICES SCHOLARSHIP TEST (CST)

Upto 100% scholarship in tuition fee

Last Date of Registration : 31st March, 2019

Date of Test : 6th April, 2019

There will be 2 Papers; candidate need to choose any one as per his/her convenience.

- Aptitude Based Test
- General Studies Based Test

The test will be conducted in offline mode in 25 major cities across India.

For detailed list of centres, online registration and other details, visit : cst.nextias.com

General Studies Prelims-cum-Main FOUNDATION BATCHES for CSE 2020

- GS + ESSAY
- GS + ESSAY + CSAT

Early Bird Discount of Rs. 10,000/- till 31st March

Batch commencement dates

Old Rajender Nagar : 20th May, 2019 | Time : 8 AM to 11 AM

Saket Centre : 27th May, 2019 | Time : 6 PM to 9 PM

Current Affairs + + Batches for CSE 2019 Prelims

+ Comprehensive yet crisp coverage of Current Affairs & Current Inspired Topics
+ Discussion on 400 most important questions
+ 3 Open Full Syllabus Tests (G.S & CSAT)

Batches from 4th April, 2019 at Old Rajinder Nagar Centre

Duration : 2 weeks | Total Teaching Hrs : 50 Hrs

Admission Open | Live/Online also Available

G.S. Prelims Test Series for CSE 2019

- 10 Full syllabus tests
- Comprehensive test discussion
- Strictly based on UPSC pattern

Admission Open | Also Available Online

Old Rajinder Nagar Centre (Delhi) : Ph : 011-49858612, 8800338066

Saket Centre (Delhi) : Ph : 011-45124642, 8800776445

info@nextias.com www.nextias.com

YH-1068/2018

हस्तशिल्प और कपड़ा निर्यात : वर्तमान और भविष्य

रंजीत मेहता

भारत समृद्ध संस्कृति, इतिहास और परंपराओं का देश है। वह कई दशकों से हस्तशिल्प उत्पादों के प्रमुख उत्पादक और आपूर्तिकर्ता देशों में शामिल है। हस्तशिल्प उत्पादों की आर्थिक और सांस्कृतिक मान्यता के कारण हाल के वर्षों में इनका महत्व बहुत बढ़ गया है। लघु उद्योग – जिनमें हस्तकला भी शामिल है, विकसित और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हस्तशिल्प को उन उत्पादों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो पूरी तरह से हाथों से या उपकरणों की मदद से बनाए जाते हैं। भारत का हस्तशिल्प उद्योग उसकी प्राचीन सभ्यता के सभी पहलुओं को दर्शाता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि 'विविधता में एकता' वाक्यांश हमारे देश के लिए इसीलिए लागू होता है।

प्रत्येक राज्य के अपने विशिष्ट हस्तशिल्प उत्पाद हैं जो भारतीय हस्तशिल्प उद्योग की विविध प्रकृति को दर्शाते हैं। विकेंद्रीकृत होने के कारण समूचा उद्योग, इस विशाल उपमहाद्वीप में फैला हुआ है, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में केंद्रित है। भारतीय हस्तकला उद्योग कुटीर उद्योग की श्रेणी में आता है। इस तथ्य के बावजूद, इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोगों को रोज़गार मिला हुआ है। इनमें 6 मिलियन से अधिक अंशकालिक और पूर्णकालिक कारीगर (कालीन निर्माण क्षेत्र सहित) शामिल हैं, जिनमें महिलाएं और समाज का कमजोर वर्गों के लोग भी हैं। रोज़गार सृजन के अलावा, हस्तशिल्प उद्योग कम पूंजी निवेश के कारण आर्थिक रूप से व्यवहार्य है। इतना ही नहीं विभिन्न हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात की संभावना काफी अधिक है, इसलिए यह हमारे देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जन का भी महत्वपूर्ण स्रोत है।

रोज़गार सृजन के अलावा, हस्तशिल्प उद्योग कम पूंजी निवेश के कारण आर्थिक रूप से व्यवहार्य है। इतना ही नहीं विभिन्न हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात की संभावना काफी अधिक है, इसलिए यह हमारे देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जन का भी महत्वपूर्ण स्रोत है

दुनिया के कुल औद्योगिक उत्पादों के लगभग 95 प्रतिशत का उत्पादन, 100 से कम लोगों द्वारा संचालित छोटे वर्कशॉप में किया जाता है। उदाहरण के लिए, जापान एक विकसित देश है लेकिन वहां 84 प्रतिशत उद्योग छोटे और मध्यम स्तर के हैं। यदि हम भारतीय हस्तशिल्प उद्योग की बात करें तो यह अत्यधिक श्रम प्रधान, कुटीर आधारित और विकेन्द्रीकृत है। इसकी अधिकतर विनिर्माण

लेखक पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री नई दिल्ली में प्रधान निदेशक हैं। ईमेल: ranjeetmehta@phdcci.in

इकाइयां ग्रामीण और छोटे शहरों में स्थित हैं। भारतीय शहरों और विदेशों में, भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री की बड़ी संभावनाएं हैं। भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के कुछ महत्वपूर्ण केंद्र उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद (पीतलनगरी के नाम से भी जाना जाता है- पीतल की कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है), सहारनपुर (लकड़ी की कलाकृतियों के लिए विख्यात) और फिरोज़ाबाद (कांच हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध) में हैं। अन्य महत्वपूर्ण हस्तशिल्प उत्पादक हब राजस्थान में जयपुर (विदेशी रजाई के लिए प्रसिद्ध), बगरू तथा सांगानेर (मुद्रित वस्त्र) और जोधपुर (अपने अद्वितीय लकड़ी व लोहे के फर्नीचर के लिए प्रसिद्ध) हैं। विशेष रूप से उल्लेखनीय कच्छ (गुजरात के तटीय राज्य) अपनी आकर्षक कशीदाकारी हस्तशिल्प और नरसापुर (आंध्र प्रदेश) अपने फीता हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। ये भारत के केवल कुछेक प्रसिद्ध हस्तशिल्प हैं लेकिन वास्तविक सूची बहुत लंबी हैं।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों की भारी मांग है। गुणवत्ता के साथ मांग तथा आपूर्ति का मिलान करने के लिए, अधिक प्रोद्यौगिकीय सहायता और नवाचार की संस्कृति का होना आवश्यक है। भारत में हस्तशिल्प क्षेत्र के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है क्योंकि यह सबसे अधिक रोज़गार देने वाले क्षेत्रों में से एक है। देश के निर्यात में भी इसकी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है और इसमें राज्य तथा क्षेत्रीय दोनों क्लस्टरों का अच्छा खासा योगदान है। इस क्षेत्र में सत्तर लाख से अधिक क्षेत्रीय शिल्पी हैं और घरेलू तथा वैश्विक दोनों बाजारों में क्षेत्रीय कला एवं शिल्प कौशल को बढ़ावा देने वाले 67,000 से अधिक निर्यातक/निर्यात प्रतिष्ठान हैं। वर्ष 2018 में अप्रैल से नवंबर तक भारत से हस्तशिल्प निर्यात 2.42 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। इस अवधि के दौरान, शॉल तथा कलात्मक वस्तुओं (77.50 प्रतिशत), लकड़ी की वस्तुओं (23.57 प्रतिशत) और अन्य विविध वस्तुओं (19.74 प्रतिशत) के निर्यात में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई। भारतीय हस्तशिल्प का निर्यात जिन देशों में किया जाता है उनमें पहले दस स्थान पर हैं- अमरीका , ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमारात, जर्मनी, फ्रांस, लैटिन अमेरिकी देश (एलएसी), इटली, नीदरलैंड, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया।

हस्तशिल्प उत्पादों की प्रचुर मांग वाले विकसित होते ही फैशन उद्योग और रिटेल, रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों के कारण भविष्य में हस्तशिल्प की मांग बढ़ेगी। ई-कॉमर्स और इंटरनेट हस्तशिल्प उत्पादों को बाजार में बेचने के लिए प्रमुख विपणन चैनल के रूप में उभरे हैं। एसोचैम के एक अध्ययन के अनुसार वित्त वर्ष 2020-21 तक भारत का हस्तशिल्प निर्यात 24,000 करोड़ रुपये से अधिक हो जाने की उम्मीद है। ब्रांड इमेज बनाने, लक्षित देशों में क्राफ्ट फेस्टिवल तथा रोड शो आयोजित करने और आकर्षक प्रदर्शन तथा बैनरों के जरिए प्रचार के साथ साथ नवीन तथा आकर्षक पैकेजिंग जैसे विपणन के तरीकों को सरकार और अन्य परिषदों द्वारा बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। सरकार को निजी क्षेत्र की भागीदारी से कौशल प्रशिक्षण, उत्पाद अनुकूलन, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उद्यमिता विकास के लिए स्थानीय केंद्रों जैसी सहायक सेवाएं प्रदान करके एकीकृत उद्यम विकास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

हस्तशिल्प उत्पादों की प्रचुर मांग वाले विकसित होते ही फैशन उद्योग और रिटेल, रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों के कारण भविष्य में हस्तशिल्प की मांग बढ़ेगी। ई-कॉमर्स और इंटरनेट हस्तशिल्प उत्पादों को बाजार में बेचने के लिए प्रमुख विपणन चैनल के रूप में उभरे हैं।

भारतीय वस्त्र उद्योग

भारतीय कपड़ा उद्योग, कच्चे माल और विनिर्माण क्षमता के आधार पर दुनिया के सबसे बड़े देशों में शामिल है। वह दुनिया में कपास का सबसे बड़ा उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है। भारत कपास का प्रमुख उपभोक्ता भी है। घरेलू कपड़ा और परिधान उद्योग का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 2 प्रतिशत, औद्योगिक उत्पादन में 14 प्रतिशत , देश के विदेशी मुद्रा प्रवाह में 27 प्रतिशत और निर्यात आय में 13 प्रतिशत योगदान है। भारत में रोज़गार के मामले में कृषि क्षेत्र के बाद कपड़ा और वस्त्र उद्योग का दूसरा स्थान है। यह 45 मिलियन लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराता है। कपड़ा क्षेत्र में महिला श्रमिकों का वर्चस्व है, जिसमें 70 प्रतिशत कर्मचारी महिलाएं हैं। भारतीय कपड़ा और परिधान क्षेत्र में, वैश्विक बाजारों में सफलता के लिए अपेक्षित स्तर का अभाव है। अधिकांश इकाइयों की विनिर्माण क्षमता कम है जिससे वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा करना उनके लिए कठिन होता है।

विश्व उत्पादन में 50 प्रतिशत का योगदान करने वाला भारत दुनिया में कच्चे जूट और जूट की वस्तुओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत दुनिया में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक भी है। यहां 3,400 कपड़ा मिलें हैं जिनकी स्थापित क्षमता 50 मिलियन से अधिक स्पिंडल और 842,000 रोटार है और इस दृष्टि से दुनिया में यह दूसरे स्थान पर है।

भारत दुनिया में कपास का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। भारत 6.3 बिलियन डॉलर मूल्य के कपास का निर्यात करता है। भारत 2016-17 में 345 लाख गांठ के उत्पादन के साथ दुनिया में कपास का सबसे बड़ा उत्पादक बनकर उभरा है और चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। वर्तमान में, कपास उद्योग 5.8 मिलियन किसानों और प्रसंस्करण तथा व्यापार जैसी अन्य गतिविधियों में लगे 40-50 मिलियन लोगों की आजीविका का जरिया बना हुआ है।

भारत दुनिया में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, जो दुनिया के कुल रेशम का लगभग 18 प्रतिशत उत्पादन करता है। यहां रेशम की मुख्य किस्मों शहतूत, एरी, टसर और मूगा का उत्पादन होता है। यह एक श्रम प्रधान क्षेत्र है। भारत में, कपड़ा उद्योग हजार साल से भी अधिक समय में विकसित हुआ है। यह संस्कृति के साथ जुड़े होने के कारण महत्वपूर्ण हैं, जो सैकड़ों वर्षों से भारतीय समाज को गढ़ रहा है। कपड़ों का इतिहास काबुल, बाल्कन और यूरोपीय देशों के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापार से भी पुराना है।

भारत को प्रचुर मात्रा में कच्चे माल और वस्त्र से संबंधित सभी क्षेत्रों में विनिर्माण की सुविधा का अनूठा लाभ मिल रहा है, इसलिए अब समय आ गया है कि इस उद्योग को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के लिए पुरानी तकनीक को त्याग कर आधुनिक मशीनरी का इस्तेमाल किया जाए।

मार्क्स एंड स्पेंसर, जेसी पेनी और गैप जैसी अंतरराष्ट्रीय ब्रांड की अधिकतर कंपनियां सबसे अधिक भारत से कपड़े खरीदती हैं। भारत के कपड़ा निर्यात में 70 प्रतिशत हिस्सा सूती धागे का है। कुल वस्त्र निर्यात में बुने वस्त्रों का हिस्सा लगभग 32 प्रतिशत है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय वस्त्र उद्योग का, वैश्विक बाजार में 20 प्रतिशत और अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाजार में 61 प्रतिशत का योगदान है।

वित्त वर्ष 2019 की बाकी अवधि के दौरान निजी उपभोग व्यय में जोरदार वृद्धि होने से वस्त्रों की घरेलू मांग मजबूत बने रहने की संभावना है। इसके अलावा, कपड़ा निर्यात भी बढ़ने की आशा है क्योंकि अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये के अवमूल्यन से परिधान निर्यातकों को लाभ हो सकता है। भारत की रेटिंग और अनुसंधान के अनुसार अप्रैल-अगस्त 2018 में प्रमुख परिधान-निर्यातक देशों की मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये में अधिक गिरावट दर्ज की गई। रेटिंग एजेंसी ने वित्त वर्ष 2019 की बाकी अवधि के दौरान सूती और सिंथेटिक वस्त्रों के लिए एक स्थिर प्रत्याशा बनाए रखी है। यह उम्मीद की जाती है कि एजेंसी की अपेक्षा के अनुरूप फरवरी 2018 में इस क्षेत्र की समग्र क्रेडिट प्रोफाइल में धीरे-धीरे सुधार होगा। उत्पादकों द्वारा कच्चे माल की बढ़ी कीमत का बोझ उपभोक्ता पर डालने, मांग में बढ़ोत्तरी, रुपए में गिरावट और संरचनात्मक मुद्दों के असर के कारण धीरे-धीरे सुधार की संभावना है। हालांकि, अनुदार कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं से, बेहतर मांग और लाभप्रदता पर आंशिक रूप से विपरीत असर हो सकता है।

निष्कर्ष और आगे का रास्ता

भारत को प्रचुर मात्रा में कच्चे माल और वस्त्र से संबंधित सभी क्षेत्रों में विनिर्माण की सुविधा का अनूठा लाभ मिल रहा है, इसलिए अब समय आ गया है कि इस उद्योग को

विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के लिए पुरानी तकनीक को त्याग कर आधुनिक मशीनरी का इस्तेमाल किया जाए।

भारतीय कपड़ा और परिधानों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सुधार के लिए उद्योग को नवाचार और मूल्य संवर्धन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। नई प्रौद्योगिकी को अपनाकर जलविहीन रंगाई को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। यदि वैश्विक स्तर पर कारोबार का विस्तार करना है तो हमें नवीन और विशेष उत्पादों के साथ आना होगा। कपड़ा उद्योग की निरंतर वृद्धि और वैश्विक प्रतिस्पर्धा अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा सकती है।

हालांकि, इस क्षेत्र को आपूर्ति और आंतरिक प्रणालियों में सुधार करने, अनुसंधान तथा विकास पर ध्यान देने, लागत अनुकूलन में सुधार करने तथा वैश्विक बाजारों में अधिक प्रतिस्पर्धी बनने और कारोबार में प्रमुखता वाली वस्तुओं के उत्पादन तथा निर्यात में हिस्सेदारी बढ़ाने की भी आवश्यकता है। इस उद्योग को यह सुनिश्चित करना होगा कि उत्पादों में विविधता से भारत का निर्यात बढ़े और नए बाजारों का पता चले। वैश्विक बाजार में निर्यात को बनाए रखने के लिए भारत को मुख्य रूप से गुणवत्ता को बनाए रखना होगा, खासकर जब हम बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हों। आय में वृद्धि के कारण खुदरा उद्योग के निरंतर बढ़ने से भविष्य में मजबूत घरेलू खपत के साथ-साथ वैश्विक बाजारों में बढ़ती मांग के कारण कपड़ा क्षेत्र के फलने फूलने की आशा है।

दुनिया भर के व्यापार जगत के दिग्गजों की निगाहें भारत पर हैं और इसके पीछे महत्वपूर्ण कारण भी हैं। कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय परिधान निर्माताओं ने भारत में निवेश किया है। इनमें टेक्सटाइल मशीनरी निर्माता रीटर और ट्रुट्जस्लर, और जारा तथा मैंगो (स्पेन), प्रोमोद (फ्रांस), बेनेटन (इटली), एस्प्रिट, लेविस और फॉरएवर 21 (यूएसए) जैसे फैशन ब्रांड शामिल हैं। सस्ता कच्चा माल तथा श्रम और कपड़ा प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण भारत कपड़ा और परिधान व्यवसाय में विदेशी निवेश के लिए एक शानदार पसंदीदा गंतव्य बन सकता है। विशेष रूप से लक्ज़री फैशन क्षेत्र के दृष्टिकोण से, दिलचस्प बात यह है कि भारत की कपड़ा गाथा का आधा हिस्सा हथकरघा के बारे में है। हथकरघा वह उपक्षेत्र है जो इस वैश्विक लक्ज़री उद्योग को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभा सकता है। इसके लिए उद्योग का ध्यान भारतीय बुनकरों की अंतर्निहित प्रतिभा को फिर से निखारना होना चाहिए।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि ब्रिटिश शासन के दौरान खादी किस तरह गांधीजी की आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी। वास्तव में यह कपड़ा क्षेत्र कीं शिल्प निपुणता है, जो एक सार्थक संवाद के लिए सही संदर्भ प्रदान करती है। यह एक सार्वभौमिक कहानी बताती है कि हाथ से बने कपड़े आज के समय में कैसे लोकप्रियता पा सकते हैं। उद्योग और सभी हितधारकों को कच्चे माल से लेकर तैयार उत्पादों और हस्तशिल्प तक के लिए भारत को प्रभावशाली स्थिति में लाने के लिए निरंतर प्रयास जारी रखने चाहिएं। ❑

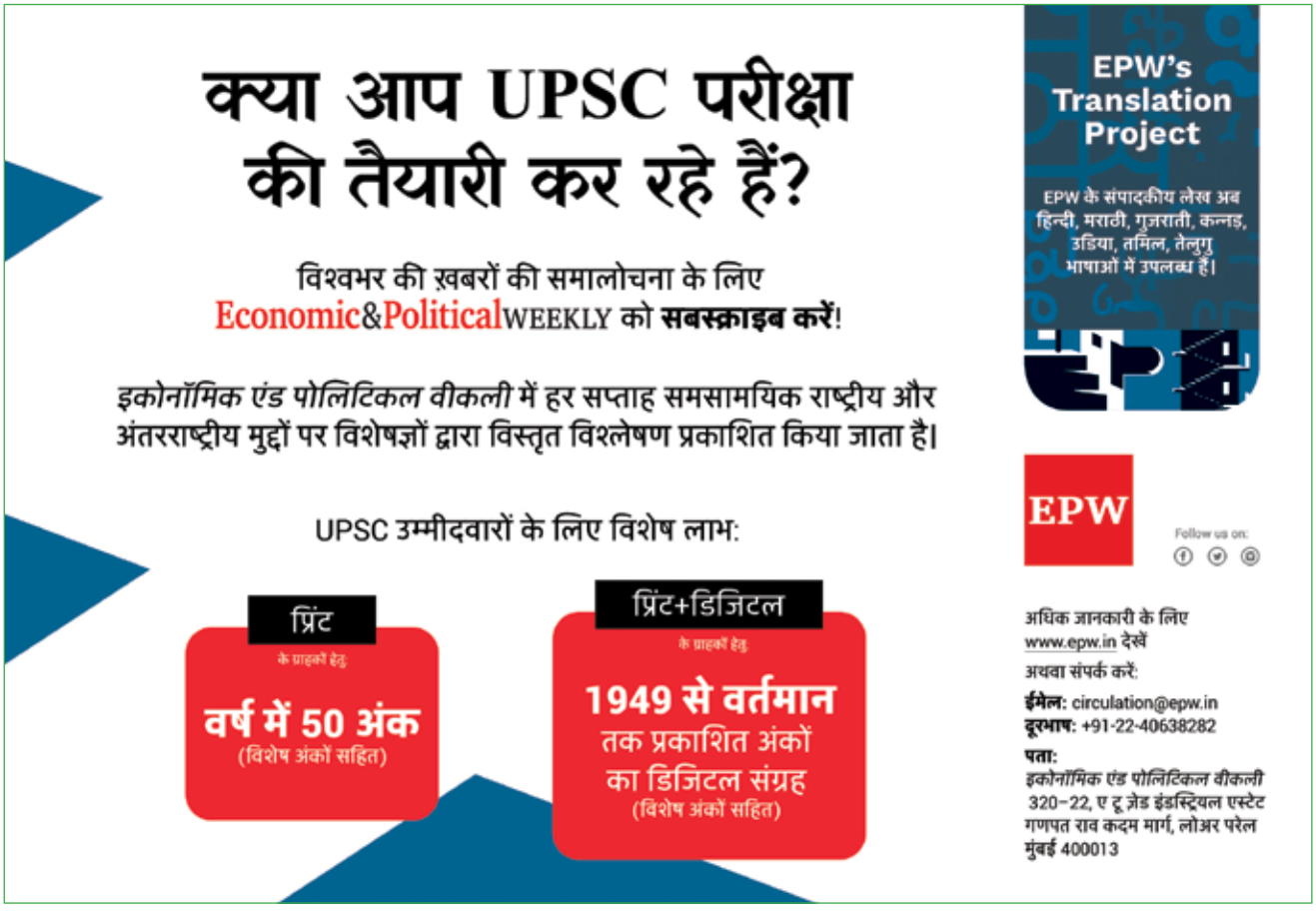

हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

निर्माण IAS

सफलता का पर्याय कमल देव (K.D.)

गुणवत्ता, विश्वसनीयता व सफलता हेतु प्रतिबद्ध

एवं अन्य...

सामान्य अध्ययन
(फाउण्डेशन बैच)

वैकल्पिक विषय
- इतिहास
- भूगोल
- समाजशास्त्र
- हिन्दी साहित्य

प्रत्येक रविवार
समसामयिकी विश्लेषित कक्षाएं
The Hindu, Indian Express, PIB, BBC व अन्य महत्वपूर्ण स्रोत
समसामयिकी मासिक पत्रिका उपलब्ध

TEST SERIES
UPSC/UPPSC/BPSC/MPPSC/RAS

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा)

वैकल्पिक विषय
(इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र एवं हिन्दी साहित्य)

पत्राचार अध्ययन सामग्री की सुविधा उपलब्ध (सम्पर्क सूत्र: 011-47058219)

ENQUIRY OFFICE 631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09
HEAD OFFICE/CLASS ROOM 996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09
PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797

ALLAHABAD	GWALIOR	JAIPUR
10/14, Elgin Road, Civil Line, Allahabad (U.P.):- 211001, Ph:- 09984474888	2/3 Aziz Complex, New Khera Pati Colony Phool Bagh Gwalior (MP), Ph. : 09753002277	Hindaun Heights 57, Riddhi Siddhi Gopalpura Bypass, Jaipur Ph. : 7580856503

You can also visit our digital platform YouTube
Website : www.nirmanias.com E-mail : nirmanias07@gmail.com

YH-1080/2018

कौशल से निखरती कारीगरी

गौरव कपूर

वस्त्र और हस्तशिल्प क्षेत्र तथा इसके संबद्ध उद्योगों में रोज़गार के अवसर बढ़ने से यह क्षेत्र और अधिक समृद्ध बन जायेगा। इसके अलावा, ये क्षेत्र शिल्प में कला और कौशल को अभिव्यक्त करने तथा स्थानीय स्तर पर शिल्प और वस्त्रों से जुड़ी मदें उपलब्ध करवाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं

भारत का गौरव देश के शिल्प और वस्त्र धरोहर में समाहित है। भारतीय बुनकर परंपराएं और हस्तशिल्प प्राचीनकाल से मौजूद हैं और ये देश के भीतर कई अनूठी उप-संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा वस्त्र और गारमेंट्स का उत्पादक है तथा हस्तशिल्प के निर्यात में शीर्ष तीन स्थानों में शामिल है। कपास, ऊन, रेशम और पटसन जैसे कच्चे माल की प्रचुर उपलब्धता के साथ एक कुशल कार्यबल ने देश को वैश्विक वस्त्र बाज़ार के लिये अग्रणी सोर्सिंग हब बना दिया है। भारतीय बुनकरों और शिल्पकारों का संरक्षण समय की ज़रूरत है, क्योंकि दुनिया हमारी बेहद अनोखी विरासत को देख रही है तथा कारीगरों और दस्तकारों के लिये अपनी क्षमता के सदुपयोग का समय आ गया है।

किसी अन्य उद्योग की तरह, हस्तशिल्प और वस्त्र क्षेत्र की भी अपनी चुनौतियां और लाभ हैं। भारतीय वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि यह कृषि के बाद सबसे बड़ा रोज़गार सृजक है। इस क्षेत्र में क़रीब 70 लाख लोगों को रोज़गार मिला है। इन खण्डों में शामिल लोगों को विभिन्न क्षेत्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये उचित तकनीकी का उपयोग करने की आवश्यकता है। दूसरी तरफ, वस्त्र और हस्तशिल्प कंपनियों को उद्योग में विभिन्न रोज़गारों जैसे कि ऑटो करघा बुनकर, पावर लूम ऑपरेटर, शटललेस लूम ऑपरेटर, शटललेस लूम वीवर-प्रोजेक्टाइल, बीम कैरिअर और लोडर, फिटर-ऑटो करघा बुनाई मशीन आदि में अभिनव कौशल शामिल करते हुए पर्याप्त कुशल श्रमशक्ति बनाए रखनी चाहिये।

यह क्षेत्र महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी एक उपयोगी उपकरण है क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश कार्यबल महिलाओं का होता है। प्रौद्योगिकी उन्नयन, अवसंरचना विकास, निर्यात प्रोत्साहन आदि की दिशा में विभिन्न प्रयास किये गये हैं। वस्त्र उद्योग की तात्कालिक आवश्यकता को जानने और पूरा करने के लिये 72 योग्यता बिन्दु (क्वालिफाइंग पैक) विकसित करने के सफल प्रयास किये गये हैं, जिनमें से 71 को राष्ट्रीय कौशल योग्यता समिति (एनएसक्यूसी) ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। ये 71 अर्हकता पैक वस्त्र उद्योगों में, मुख्यत: वस्त्र मिल क्षेत्र में कार्यरत लगभग 80 प्रतिशत कार्यबल की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। टीएसएससी अब अन्य कम आबादी वाले, लेकिन महत्वपूर्ण खंड, जैसे कि ऊन, रेशम, पटसन, तकनीकी वस्त्र और गुणवत्ता नियंत्रण क्षेत्र के कार्यबल के लिये मानकों का विकास कर रहा है।

जब हस्तशिल्प और हथकरघा की बात आती है, तो भारत का शायद ही कोई हिस्सा ऐसा है जो अपनी विशेष रूप से निर्मित और बुनी गई वस्तुओं के लिये नहीं जाना जाता हो। यह एक विशाल और बहुमुखी उद्योग है। चाहे असम से रेशम हो या बंगाल से

लेखक, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम में सीनियर हेड, एडवोकेसी तथा कम्युनिकेशन्स हैं। ईमेल: gaurav.kapoor@nsdcindia.org

वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योग हाल के वर्षों तक पारंपरिक उत्पादन प्रक्रिया के भरोसे था जो कई लंबी और जटिल प्रक्रियाओं के कारण श्रम साध्य है। उद्योग 4.0 के आगमन के साथ-जहां डिजिटलीकरण, विश्व व्यापी वेब, व्यापक अनुकूलन और गति प्रक्रियाओं को आकार दे रहे हैं, इन उद्योगों को भी प्रेरणा और गति मिली है। गुणवत्ता पर अधिक ज़ोर दिये जाने के कारण कुशल श्रमिकों के लिये मांग में भी वृद्धि हुई है।

कपास, कश्मीर से पश्मीना या दक्षिण भारत से कांजीवरम, इन सबकी अपनी कहानी है और बाज़ार में अपना विशेष स्थान है। तकनीक चाहे कितनी भी उन्नत हो जाये, लोगों के हस्त-कौशल का अपना ही सौष्ठव है। ऐसी बहुत सी परंपराएं है जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं और ये कुशल हाथों के एक जादू से कम नहीं है।

भारतीय वस्त्र उद्योग में प्राकृतिक से लेकर मानव निर्मित, फाइबर से लेकर घर की वस्तुओं तक की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला इस क्षेत्र की ताक़त है। इस क्षेत्र का निर्यात से होने वाली देश की आय में लगभग 27 प्रतिशत, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 2 प्रतिशत और राष्ट्र के निर्यात में 13 प्रतिशत का योगदान है। साथ ही साथ, भारत के हस्तशिल्प निर्यात में वर्ष दर वर्ष 1.65 प्रतिशत की वृद्धि के साथ अप्रैल-नवंबर 2018 के मध्य तक 2.42 अरब अमरीकी डॉलर की वृद्धि हुई है।

इस प्रकार, इन उद्योगों के आधुनिकीकरण, विकास और सर्वांगीण विकास तथा कौशलीकरण का भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार पर सीधा असर होता है।

वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योग हाल के वर्षों तक पारंपरिक उत्पादन प्रक्रिया के भरोसे था जो कई लंबी और जटिल प्रक्रियाओं के कारण श्रम साध्य है। उद्योग 4.0 के आगमन के साथ-जहां डिजिटलीकरण, विश्व व्यापी वेब, व्यापक अनुकूलन और गति प्रक्रियाओं को आकार दे रहे हैं, इन उद्योगों को भी प्रेरणा और गति मिली है। गुणवत्ता पर अधिक ज़ोर दिये जाने के कारण कुशल श्रमिकों के लिये मांग में भी वृद्धि हुई है।

लगभग 87 प्रतिशत हथकरघा ग्रामीण भारत में और केवल 13 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में हैं। हथकरघा उद्योग इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोज़गार दिये जाने के कारण महिला सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हथकरघा रेशा उत्पादन का भारत के कुल रेशा उत्पादन में पांचवे हिस्से का योगदान और कुल फैब्रिक निर्यात 35.34 मिलियन अमरीकी डॉलर का है। शिल्पकार और कारीगर स्थिरता पर किसी भी नकारात्मक प्रभाव के बिना असीमित संख्या में वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं। भारत तैयार उत्पादों जैसे कि परिधान, घरेलू इस्तेमाल की वस्तुएं और तकनीकी वस्त्रों की उच्च विकास दर प्राप्त कर सकता है। इससे देश में अधिकतम रोज़गार सृजन और आय सृजन होगा।

यह देखते हुए कि वस्त्र श्रृंखला से संबंधित कुछ क्षेत्र कम पूंजी सघन और परियोजना चालू करने के लिये कम परिपक्वता अवधि वाले होते हैं, भारत में इन क्षेत्रों का विकास न केवल रोज़गार के अधिक अवसर पैदा करने, महिला सशक्तिकरण और ग़रीबी और निराश्रयता उन्मूलन के संदर्भ में सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि राष्ट्रीय आय, निर्यात और उद्यमशीलता को बढ़ाने के संदर्भ में भी विकास का अग्रदूत है।

वस्त्र और हस्तशिल्प क्षेत्र तथा इसके संबद्ध उद्योगों में रोज़गार के अवसर बढ़ने से यह क्षेत्र और अधिक समृद्ध बन जायेगा। इसके अलावा, ये क्षेत्र शिल्प में कला और कौशल को अभिव्यक्त करने तथा स्थानीय स्तर पर शिल्प और वस्त्रों से जुड़ी मदें उपलब्ध करवाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। अमेरिका और यूरोप, जहां भारत के वस्त्रों का लगभग दो तिहाई निर्यात होता है, के अलावा चीन, संयुक्त अरब अमीरात, वियतनाम, श्रीलंका, सऊदी अरब, कोरिया गणराज्य, बांग्लादेश, तुर्की, पाकिस्तान और ब्राज़ील आदि इन निर्यातों के लिये कुछेक प्रमुख बाज़ार हैं।

देश को, केंद्रित प्रयासों के साथ महत्वपूर्ण वैश्विक व्यापार भारत की ओर लुभाने की उम्मीद है। यह आशा की जाती है कि भारतीय बाज़ार अपनी अंतर्निहित ताक़त और व्यापक आर्थिक संचालकों का लाभ उठाते हुए आने वाले वर्षों में नई ऊंचाइयों को छूने का क्रम जारी रखेगा। ❑

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

LIVE / ONLINE
Classes also available

Download VISION IAS app

सामान्य अध्ययन

फाउंडेशन कोर्स 2020

- प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के लिए

DELHI 23rd April

LUCKNOW 9th April

Batches also @ JAIPUR | AHMEDABAD

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम के घटक

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- मुख्य परीक्षा, निबंध, PT, सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन शैली की कक्षाएं
- सीसैट कक्षाएं शामिल
- PT 365, MAINS 365 कक्षाएं
- करेंट अफेयर्स मैगजीन

PT 365

- प्रारंभिक परीक्षा 2019 हेतु 1 वर्ष का समसामयिक घटनाक्रम केवल 60 घंटों में

अंग्रेजी माध्यम: 19th Mar | 5 PM

हिन्दी माध्यम: 3rd Apr | 5 PM

ALL INDIA TEST SERIES

Get the Benefit of Innovative Assessment System from the leader in the Test Series Program

PRELIMS

- ✓ General Studies (हिन्दी माध्यम में भी)
- ✓ CSAT (हिन्दी माध्यम में भी)

Starting: 2nd Mar

MAINS

- ✓ General Studies (हिन्दी माध्यम में भी)
- ✓ Essay (हिन्दी माध्यम में भी)
- ✓ Sociology
- ✓ Geography
- ✓ Anthropology

Starting: 2nd Mar

550+ Selections in CSE 2016

8 in Top 10

38 Selections in Top 50 in CSE 2017

ANMOL SHER SINGH BEDI
AIR-2

SACHIN GUPTA
AIR-3

ATUL PRAKASH
AIR-4

PRATHAM KAUSHIK
AIR-5

SAUMYA PANDEY
AIR-4

KOYA SREE HARSHA
AIR-6

AYUSH SINHA
AIR-7

ANUBHAV SINGH
AIR-8

ABHILASH MISHRA
AIR-5

SAUMYA SHARMA
AIR-9

ABHISHEK SURANA
AIR-10

YOU CAN BE NEXT

/visionias.upsc /Vision_IAS /c/VisionIASdelhi
www.visionias.in

JAIPUR	PUNE	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUCKNOW
9001949244	8007500096	9000104133	9909447040	8468022022
9799974032	020-40040015	9494374078	7575007040	7042413943

DELHI
- 635, Opp. Signature View Apartments, Banda Bahadur Marg, Mukherjee Nagar
- 2nd Floor, Apsara Arcade, Near Metro Gate 6,1/8 B, Pusa Road, Karol Bagh
- Contact : 8468022022, 9019066066, 9650617807

YH-1084/2018

IAS **Join No. 1** PCS

पतंजलि

विश्वसनीय संस्थान, प्रामाणिक टीम, बेहतरीन रिजल्ट्स

हिन्दी माध्यम में तैयारी करने वाले लाखों में मगर रिजल्ट्स लगभग 4% रिजल्ट्स

कारण: सतही अध्यापन, अप्रामाणिक अप्रासंगिक सामग्री की बहुतायत, सोशल मीडिया का मायाजाल

"पढ़िये उनसे जिनकी प्रामाणिकता एवं श्रेष्ठता निर्विवाद है तथा जिनसे हिन्दी माध्यम के साथ-साथ अंग्रेजी माध्यम के टॉपरों ने भी पढ़ा है।"

द्वारा धर्मेन्द्र सर

सारगर्भित, प्रासंगिक, प्रामाणिक सामग्री के साथ

नीतिशास्त्र (GS Paper-IV)

Results prove over unparallel supremacy and leadership in Ethics (Paper-IV)

Eng. Med.

Athar Aamir Khan AIR 2

Eng. Med.

Bharti Dixit AIR 5

हिन्दी माध्यम

Gaurav Kumar AIR 31

हिन्दी माध्यम

Hemant Sati AIR 88

द्वारा धर्मेन्द्र सर

दर्शनशास्त्र

- UPSC/UPPCS एवं BPSC के लिए बेहतरीन विषय
- छोटा सिलेबस
- लाखों तथ्यों को रटने से छुटकारा
- रिवीजन में आसान
- GS और निबंध में उपयोगी
- अंकदायी एवं सफलतादायी विषय

हिन्दी माध्यम के प्रिय अभ्यर्थियों- पिछले कुछ महीनों से Social Media एवं अन्य कुछ जगहों पर दर्शनशास्त्र के संदर्भ में गलत एवं अधूरे आंकड़ों के आधार पर भय और भ्रम का वातावरण पैदा कर अपने स्वार्थों की सिद्धी की जा रही है। जबकि दर्शनशास्त्र आरंभ से ही हिन्दी माध्यम का एक लोकप्रिय वैकल्पिक विषय रहा है। भारत भर में, हिन्दी माध्यम में पहले प्रयास में सफल अनेक युवा अभ्यर्थी दर्शनशास्त्र के साथ रहे हैं। UPSC के साथ-साथ PCS परीक्षाओं में भी दर्शनशास्त्र के साथ बेहतरीन परिणाम रहा है।

67वीं वार्षिक रिपोर्ट UPSC

वैकल्पिक विषय	उम्मीदवारों की संख्या		सफलता दर (प्रतिशत में)
	परीक्षा में बैठे	अनुशंसित	
दर्शनशास्त्र	847	47	5.5%
हिन्दी साहित्य	428	12	2.8%

Manish Kumar Jha (B.Tech)

97th Rank

द्वितीय प्रयास SDM

मैंने दर्शनशास्त्र की तैयारी के लिए [illegible] संस्थान में प्रवेश लिया हालांकि मैं मैकेनिकल इंजीनियरिंग से ग्रेजुएट हूं फिर भी मैंने धर्मेन्द्र सर के कहने पर दर्शनशास्त्र का चयन किया। धर्मेन्द्र सर की विषय को समझाने की अत्यन्त सरल एवं प्रभावपूर्ण शैली ने दर्शनशास्त्र में मेरी गहन समझ विकसित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। पतंजलि IAS के टेस्ट सीरिज एवं सर की व्यक्तिगत मार्गदर्शन ने मुझे BPSC 60वीं-62वीं में 300 में 223 अंक प्राप्त हुए। जो कि मुझे बिहार प्रशासनिक सेवा में SDM के पद पर चयनित होने में प्रमुख भूमिका निभाई। तैयारी के दौरान कई मित्र एवं कोचिंग संस्थानों ने दर्शनशास्त्र को लेकर कई अफवाह फैलाने एवं मुझे भी हतोत्साहित करने का प्रयास किया लेकिन धर्मेन्द्र सर ने लगातार प्रोत्साहित किया एवं उनके प्रामाणिक क्लास नोट्स एवं मार्गदर्शन ने मुझे मेरे सपने को साकार करने में प्रमुख भूमिका निभाई। सही एवं सटीक मार्गदर्शन के लिए धर्मेन्द्र सर को हार्दिक धन्यवाद।

मनीष कुमार झा

DELHI CENTRE

202, 3rd Floor, Bhandari House
(Above Post Office) Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Helpline No.: 9810172345, 9811583851

JAIPUR CENTRE

31, Satya Vihar, Lal Kothi,
Near New Vidhan Sabha, Jaipur
Helpline No.: 72406-72406, 9571456789

http://iaspatanjali.com 8750187505 https://www.facebook.com/patanjaliiasclasses/

YouTube Patanjali IAS ▶ Ethics क्या है? ▶ दर्शनशास्त्र : एक परिचय ▶ Jitendra Kumar Soni IAS ▶ Govind Jaiswal IAS *for* more videos, subscribe our YouTube Channel

YH-1082/2018

खादी की यात्रा: गांधी के खद्दर से फैशन का प्रतीक बनने तक

वी के सक्सेना

भारत की स्वतंत्रता के 70 साल से भी ज्यादा हो जाने के बाद अभी भी खादी दुनिया भर में लोगों को प्रेरित और हैरान कर रही है। साथ ही, हाल में खादी के विस्तार को अगर संकेत माना जाए तो देश में परिधान का अहम प्रतीक फैशन के जरिये आर्थिक बदलाव का औजार बनकर सामने आया है।

जैसा कि गांधी जी का मानना था, खादी न सिर्फ राष्ट्रीयता या आत्म-निर्भरता का प्रतीक है, बल्कि यह देश के आर्थिक विकास में भी अहम भूमिका निभा सकता है। साल 2017 में खादी की बिक्री का आंकड़ा 50,000 करोड़ रुपये रहा। लघु उद्योगों और सामाजिक उद्यमियों द्वारा गांवों में तैयार किए गए उत्पाद की भी बड़ी मांग देखने को मिली। पिछले वित्त वर्ष में ग्रामोद्योग के उत्पादों की बिक्री में भी बढ़ोतरी हुई। हाल के वर्षों में खादी से जुड़े कपड़ों और अन्य चीजों के उत्पादन में जबरदस्त बढ़ोतरी इस बात की पुष्टि करते हैं कि खादी के परिधान सदाबहार हैं और इसकी पसंद तमाम तबके में है।

डिपार्टमेंटल स्टोर्स के जरिये भी खादी की बिक्री में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। साल 2015 से फरवरी 2018 के बीच 30,000 से भी ज्यादा चरखे का वितरण किया गया और इस तरह से 14 लाख रोज़गार का सृजन हुआ। पर्यावरण दिवस से लेकर योग दिवस तक, दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सबसे बड़ा लकड़ी का चरखा लगाने से लेकर अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे, बिहार के पूर्वी चंपारण (मोतिहारी) और नई दिल्ली के कनाट प्लेस स्मारक के तौर पर स्टील का चरखा लगाए जाने तक कई प्रतीक ऐतिहासिक हैं। इसके अलावा खादी जागरूकता के लिए दक्षिण अफ्रीका में किसानों और महिलाओं के बीच मधुमक्खी के बक्से का वितरण और जून 2018 में इसी देश में पेंट्रिच से पीटरमार्टिजबर्ग तक खादी के चित्रों वाली ट्रेन भी चलाई गई।

कपड़ा उद्योग में खादी को फिर से बड़े पैमाने पर स्थापित करने के लिए कॉरपोरेट ब्रांडों और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को भी इस अभियान से जोड़ने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। खादी के विभिन्न संस्थानों में डिजाइन के विकास और प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। साथ ही, रिटेल चेन के सीईओ और डब्ल्यूटीसी मुंबई के डिजाइनरों के साथ हाल में संवाद का आयोजन किया गया, जिसका मकसद प्रमुख मॉल और रिटेल स्टोर्स में खादी की मौजूदगी का विस्तार करना था। इस सिलसिले में 'खादी मित्र' के स्वरूप में एक और नवाचार पर काम किया जा रहा है। इसके तहत घरेलू गृहणियां बेहद छोटी शुरुआती पूंजी के साथ खादी की बिक्री कर सकती हैं।

खादी के कपड़े और इस हस्तशिल्प से जुड़ी अन्य चीजों की बिक्री के लिए देश के बाहर भी खादी की स्टोर खोलने का प्रस्ताव है। दरअसल दुबई, शिकागो, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका जैसे वैश्विक बाजारों में भी

खादी के विस्तार को अगर संकेत माना जाए तो देश में परिधान का अहम प्रतीक फैशन के जरिये आर्थिक बदलाव का औजार बनकर सामने आया है

लेखक खादी ग्रामोद्योग आयोग, नई दिल्ली के चेयरमैन हैं। ईमेल: chairmankvic2015@gmail.com

खादी से जुड़े उत्पादों को लेकर दिलचस्पी देखने को मिली है। इन जगहों पर लोग फ्रेंचाइजी मॉडल के तहत खादी के स्टोर खोलने को इच्छुक हैं।

खादी की बढ़ती अहमियत के मद्देनजर फिल्मी जगत भी इसकी विरासत और खूबसूरती दिखाने से खुद को रोक नहीं पाया। हाल में आई हिट फिल्म 'मणिकर्णिका' में खादी को लेकर नायिका यानि रानी की पसंद के बारे में बताया गया है। इस सदाबहार कपड़े के प्रचार-प्रसार के लिए इस फिल्म के मुख्य किरदारों के परिधान को केवीआईसी ने ही प्रायोजित किया। खादी ने लंबे समय से स्वतंत्रता की आवाज के रूप में काम किया है। हम सब जानते हैं कि गांधी जी ने 1926 में खादी को स्वराज का प्रतीक बताया था और देश के कपड़े की आजादी के लिए धागा तैयार करने की शुरुआत की थी।

हालांकि, शायद कुछ ही लोग जानते हैं कि चरखा के साथ गांधी जी की मुलाकात से सात दशक पहले वाराणसी में मणिकर्णिका या मनु नामक लड़की का जन्म हुआ था, जिसने न सिर्फ वेद पुराणों का अध्ययन किया था और घुड़सवारी व तलवारबाजी सीखी थी, बल्कि झांसी की रानी बनने से पहले कपड़े बुनने का काम भी सीखा था।

खादी संस्थानों में कपास की आपूर्ति बढ़ाने की कोशिश के तहत कपास के 6 संयंत्रों को नई तकनीक से लैस किया गया है। इससे इन संयंत्रों की उत्पादन क्षमता में 40 प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी। फिलहाल यह क्षमता 40 लाख किलोग्राम सालाना है, जो बढ़कर 56 लाख किलोग्राम सालाना हो जाएगी। ज्यादातर संयंत्र तीन दशक से भी ज्यादा पुराने हैं और बेहतर आपूर्ति के लिए तकनीक को बदलना जरूरी है।

खादी कारीगरों की मजदूरी बढ़ाकर इसे कम से कम औसत स्तर पर पहुंचाने की अहमियत को ध्यान में रखते हुए और खादी के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को सतत मदद के लिए मेहनताना को 5.50 रुपये प्रति लच्छा से बढ़ाकर 7 रुपये प्रति लच्छा कर दिया गया है। कुल 143 बीमार खादी इकाइयों को पुनर्जीवित किया गया है। साथ ही, 124 और इकाइयों में उत्पादन शुरू करने प्रक्रिया चल रही है। साल 2015-16 और 2016-17 में क्रमशः 89 और 63 नए खादी संस्थानों का रजिस्ट्रेशन हुआ और इन संस्थानों में उत्पादन शुरू हो चुका है।

निजी लोगों, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों और कॉरपोरेट जगत से चरखा (मुख्य रूप से महिलाओं को) मुहैया कराने की खातिर योगदान करने को कहा गया है। खादी से जुड़े शिल्पकारों और खादी संस्थानों के सशक्तीकरण के लिए सीएसआर फंड उपलब्ध कराने की खातिर सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों से संपर्क किया गया है। सेवापुरी आश्रम की विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए आरईसी (ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड) की मदद लेने का फैसला किया गया है। इसी तरह, पिछले साल ओएनजीसी, आईटीपीओ, आदित्य बिड़ला समूह, जेके सीमेंट, जीएमआर, एनसीसीएल आदि कंपनियों से 7.9 करोड़ रुपये का योगदान प्राप्त किया गया। आईएमसी चैंबर ऑफ कॉमर्स ने हाल में 20 लाख रुपये का दान दिया और खादी संबंधी गतिविधियों के लिए बड़े सीएसआर फंडों की खातिर आईओसी, एचपीसीएल आदि से बातचीत की प्रक्रिया चल रही है। इन फंडों से भविष्य में देशभर में खादी गतिविधियों की सूरत बदल जाएगी।

खादी ब्रांड को लोकप्रिय बनाने के लिए इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और कनाट प्लेस जैसी जगहों पर विशाल चरखे लगाए गए हैं। नई दिल्ली के कनाट प्लेस में चरखा संग्रहालय और खादी हाट खोले गए हैं।

हमें महात्मा गांधी के उन शब्दों को नहीं भूलना चाहिए, जिसमें उन्होंने कहा था कि चरखे का घूमता पहिया उस जनता की उम्मीदों की नुमाइंदगी करता है, जिन्हें आजादी खोई। चरखे ने गांवों में खेती के पूरक के तौर पर काम किया। कोई भी पहिया बदलते वक्त, लोगों की बदलती किस्मत का प्रतीक होता है। साथ ही, यह उस न्याय की याद दिलाता है, जो लोगों या इतिहास की अवधि के बीच भेदभाव नहीं करता है। पहिया को हमेशा अतीत के प्रतिरूप और एकजुट करने वाले के तौर पर देखा जाता है। पहिया को हमेशा भूत, वर्तमान और भविष्य के प्रतिरूप की तरह देखा जाता है। जब सम्राट अशोक ने पहिया का इस्तेमाल 'धर्मचक्र' के रूप में किया और शासनादेश के जरिये अपने साम्राज्य में इसे स्थापित करवाया, तो सम्राट के दिमाग में सिर्फ एक बात थी-सामाजिक न्याय स्थापित करना, हर स्तर पर भेदभाव से मुक्ति और गैर-बराबरी को कम करना। भारतीय समाज में उन्होंने जो प्रतीकात्मता स्थापित की, वह कालजयी विरासत है। 'धर्म' के प्रचारक के रूप में चक्र अब भी हमारी सामाजिक मूल्य व्यवस्था के केंद्र में है। साथ ही, विरासत के मूल्यों में गुजरते वक्त के साथ बदलाव नहीं होता है। ❑

RAVINDRA'S IAS

"Launches"

SUPER-100

(Result Oriented Programme)

ONLY FOR THOSE WHO WANT TO CRACK IAS EXAM

National Talent Search Exam

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा

1st	Rank	1,00,000/-	Prize
2nd	Rank	51,000/-	Prize
3rd	Rank	31,000/-	Prize
4th	Rank	21,000/-	Prize
5th	Rank	11,000/-	Prize
6th-100	Rank	5,000/- each	Prize

Exam Date 9 June 2019

चयनित सभी 100 छात्र/छात्राओं को Cash Prize के साथ 3yr. या 1yr. Foundation Batch में नि:शुल्क कक्षायें दी जाएगी।

One Year Foundation Batch for Graduates

Three Year Foundation Batch for 12th Pass & Under Graduates

For Registration Visit : www.ravindrasinstitute.com Registration Fee -100/-

102, 2nd Floor, 8-9, Ansal Building ,Near Chawla Restaurant, Mukherjee Nagar, Delhi-9

9953101176, 9990962858

YH-1085/2018

उत्तरपूर्व में विकास का ताना-बाना

जेवी मनीषा बजाज

वस्त्र उद्योग देश के सबसे पुराने उद्योगों में से एक है और यह उन परंपराओं और संस्कृतियों से आंतरिक रूप से जुड़ा है, जो देश में मौजूद विविधता को बयां करते हैं। इस उद्योग के दायरे में कई खंड हैं- हाथ से बुनाई से लेकर बड़ी पूंजी वाले उद्योगों तक। भारत जूट का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जबकि रेशम के मामले में पूरी दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

आर्थिक मूल्य के लिहाज से बात करें तो भारत के पूरे उद्योग जगत में वस्त्र उद्योग की हिस्सेदारी 7 प्रतिशत है और यह देश के सकल घरेलू उत्पाद का 2 प्रतिशत है। देश को निर्यात से होने वाली कुल आमदनी में वस्त्र उद्योग का हिस्सा 15 प्रतिशत है। वित्त वर्ष 2017-18 में भारत ने कुल 39.2 अरब डॉलर कपड़े का निर्यात किया।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र अपनी अवस्थिति के कारण कई तरह की खूबियों सै लैस है, लेकिन वहां कारोबार के लिए भी चुनौतियां हैं। हालांकि, पिछले कुछ साल में हालात में काफी सुधार हुआ है। इस क्षेत्र के 8 राज्यों में औद्योगिक गतिविधि में बढ़ोतरी हुई है और मेघालय, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में सबसे ज्यादा औद्योगिक विकास देखने को मिला है। भारत के बाकी राज्यों की तुलना में इस क्षेत्र में विकास संबंधी ज्यादातर सूचकांक का प्रदर्शन बेहतर है। यह विकास की कहानी महज शुरुआत है और वस्त्र उद्योग इस विकास की धुरी के तौर पर काम करेगा

लेखिका दूरदर्शन में प्रमुख एंकर व समाचार वाचिका हैं। उन्हें क्रिएटिव माध्यम में 3 दशक से भी ज्यादा का अनुभव है। उन्होंने उत्तरपूर्व पर काफी कार्य किया है और उत्तरपूर्व से संबंधित विषयों पर लेखन किया है। ईमेल: jvmanisha@gmail.com

उत्तर-पूर्वी भारत की कौशल परंपरा को समझने के लिए आपको इस क्षेत्र, उसके लोगों और उनके जीन के तरीकों के बारे में समझना होगा। भारत के दूसरे हिस्सों की तरह इस इलाके में भी इस कौशल को व्यावसायिक कार्य या शौक की तरह नहीं लिया जाता है, बल्कि यह उनके जीवन और परंपराओं का अटूट हिस्सा है। इस इलाके में कई पारंपरिक कौशल और कलाएं हैं, जो स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से संचालित होती हैं।

कपड़ों के निर्यात के मामले में भारत दुनिया भर में दूसरे नंबर पर है। भारतीय कपड़ों के लिए यूरोपीय संघ सबसे बड़ा बाजार है और उसके बाद अमेरिका है। वित्त वर्ष 2016-17 में भारत के कपड़ों के कुल निर्यात में यूरोपीय संघ की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत थी, जबकि अमेरिका का हिस्सा 21 फीसदी थी।

इन तमाम आंकड़ों में एक दिलचस्प चलन देखने को मिल सकता है। भारत के वस्त्र उद्योग की ताकत हाथ से बुने हुए कपड़ों और मिल क्षेत्र दोनों में है। कपड़ा उद्योग के विकास में हथकरघा, हस्तकला जैसे पारंपरिक क्षेत्रों की भी बड़ी भूमिका है। दरअसल, देश का हस्तकला क्षेत्र बड़ी संख्या में रोज़गार भी मुहैया कराता है और देश के निर्यात में भी इसकी अहम हिस्सेदारी है। भारतीय वस्त्र उद्योग के कुछ अहम बिंदु इस तरह है:

- भारत अंतरराष्ट्रीय वस्त्र उद्योग के 61 प्रतिशत हिस्से से जुड़ा है।
- जूट उत्पादन के मामले में भारत दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक देश है
- भारत पूरी दुनिया में कपास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है
- सूती धागा उद्योग में भारत का हिस्सा 25 प्रतिशत है।
- सूती धागे और कपड़ों के उत्पादन में भारत का योगदान 9-12 प्रतिशत है
- भारत दुनिया भर में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और वह दुनिया के कुल रेशम उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 8 प्रतिशत है।

संक्षेप में कहें तो भारत रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। अगर हम करीबी तौर पर जायजा लें तो हम पाएंगे कि वस्त्र उद्योग के विकास में उत्तर-पूर्व का काफी बड़ा योगदान है। हालांकि, हमारे दिमाग में अगला सवाल यह आता है कि कपड़ों के मामले में राज्यों द्वारा क्या पेशकश की जा सकती है और वस्त्र उद्योग में उनका क्या अहम योगदान हो सकता है।

भारत की स्वदेशी वस्त्र संस्कृति में उत्तर-पूर्व भारत का अनोखा और अहम स्थान है। उत्तर-पूर्व भारत के पहाड़ी और घाटी क्षेत्रों के लोग आर्थिक-सांस्कृतिक और भाषाई मामलों में विविधता का प्रदर्शन करते हैं। हालांकि, आमतौर पर ये सभी मंगोलियाई नस्ल समूह के ही हैं। हालांकि, हर समूह की अपनी अलग विशिष्ट परंपरा, अलग पौराणिक कथाएं, अलग इतिहास और सामाजिक ढांचा है। कपड़ा संभवत: ऐसा सांस्कृतिक पहलू है, जो अलग-अलग जातीय समूहों के बीच समानता और अंतर दोनों को दिखाता है। किसी जातीय समूह की पहचान को प्रदर्शित करने में उसके पारंपरिक वस्त्र की अहम भूमिका होती है। हर जातीय समूह का अपना डिजाइन और रंगों का चुनाव होता है। कपड़ों की अलग-अलग डिजाइन और नमूनों का उत्तर-पूर्व भारत के पारंपरिक और धार्मिक जीवन से रिश्ता है। कपड़े बुनने की प्रणाली भी क्षेत्र और जातीय

समूहों के लिहाज से अलग-अलग है। कपड़ों को तैयार करने में अलग-अलग तरह की विभिन्न सामग्रियों का इस्तेमाल किया जाता है- अलग-अलग जातीय समूहों द्वारा सूती, ऊनी, एंडी, मूगा, पशुओं के बाल आदि का उपयोग किया जाता है।

हथकरघा जनगणना 2009-10 के मुताबिक,पूरे देश में कुल 23.77 लाख हथकरघा हैं, जिनमें से 16.47 हथकरघा (69.28 प्रतिशत) उत्तर-पूर्व क्षेत्र में हैं। दरअसल, हस्तकला और वस्त्र उत्तर-पूर्व के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल है और उत्तर-पूर्वी राज्यों में वस्त्र क्षेत्र के विकास और आधुनिकीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। जब आप इस इलाके की

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में महिलाएं ही मूल रूप से कपड़ा बनाने का काम करती हैं। देश के बाकी हिस्सों में जहां बुनकर पेशे में पुरुषों का दबदबा है, वहीं अरुणाचल प्रदेश के वांचू समुदाय का मामला हो या फिर नगा जनजातीय समूहों या असम के मैदान इलाकों की बात हो, सभी जगहों पर महिलाओं प्रमुख रूप से बुनाई का काम करती हैं।

हस्तकला और वस्त्रों के बारे में ज्यादा जानेंगे तभी इस क्षेत्र की संभावना को समझ पाएंगे।

उत्तर-पूर्वी भारत की कौशल परंपरा को समझने के लिए आपको इस क्षेत्र, उसके लोगों और उनके जीन के तरीकों के बारे में समझना होगा। भारत के दूसरे हिस्सों की तरह इस इलाके में भी इस कौशल को व्यावसायिक कार्य या शौक की तरह नहीं लिया जाता है, बल्कि यह उनके जीवन और परंपराओं का अटूट हिस्सा है। इस इलाके में कई पारंपरिक कौशल और कलाएं हैं, जो स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से संचालित होती हैं।

इन सभी राज्यों को जोड़ने वाले सामूहिक कारक इस तरह हैं:

बुनाई - यह काम अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर और असम की घाटी के सभी जनजातीय समूहों द्वारा किया जाता है। हालांकि, अरुणाचल प्रदेश के एक समूह और मेघालय का खासी समुदाय इस इस मामले में अपवाद है, जो यह काम नहीं करता है।

मेघालय उच्च गुणवत्ता वाली बुनाई की परंपरा स्थापित करने के लिए जाना जाता है। अरुणाचल प्रदेश की बुनाई खूबसूरत रंग संयोजनों के लिए मशहूर है। इसमें शेरदुकपन शॉल, अपतानी जैकेट और स्कार्फ आदि स्कर्ट, जैकेट और थैले, वांचू बैग आदि काफी असाधारण उत्पाद हैं।

नगा शॉल को अंगामी नगा के रूप में भी जाना जाता है और वे चमकीले रंगों और पशुओं की डिजाइन से जुड़ी कसीदाकारी के लिए मशहूर हैं। वस्त्रों की सामग्री आमतौर पर नगा कहानियों को दर्शाते हैं। नगालैंड की विभिन्न जनजातीय समूहों के हाथ से बुने हुए वस्त्र पारंपरिक पैटर्न और समृद्ध रंगों को दिखाते हैं, जिनके संयोजन से आधुनिक परिधान तैयार किए जाते हैं।

त्रिपुरा में पारंपरिक तौर पर हर घर में हथकरघा होता था और राज्य के स्थानीय लोग बाजार से कभी-कभार ही कपड़ा खरीदते थे। हर कपड़े को बड़े प्यार से घर में बुना जाता था और इस पर कसीदाकारी की जाती थी।

त्रिपुरा हैंडलूम की प्रमुख खासियत अलग-अलग रंगों में फैली कसीदाकारी के साथ अलग-अलग किस्म की धारीदार डिजाइन है।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में महिलाएं ही मूल रूप से कपड़ा बनाने का काम करती हैं। देश के बाकी हिस्सों में जहां बुनकर पेशे में पुरुषों का दबदबा है, वहीं अरुणाचल प्रदेश के वांचू समुदाय का मामला हो या फिर नगा जनजातीय समूहों या असम के मैदान इलाकों की बात हो, सभी जगहों पर महिलाएं प्रमुख रूप से बुनाई का काम करती हैं।

रेशम - उत्तर-पूर्व भारत में देश के सबसे बारीक रेशम के उत्पादन की संभावना है। इसका निर्यात भी किया जा सकता है। इससे न सिर्फ उत्तरपूर्वी राज्यों की आर्थिक स्तर और उसकी हैसियत में बढ़ोतरी हो सकती है,बल्कि इस मामले में पूरी दुनिया के नक्शे में उसकी जगह बनने की गुंजाइश है।

गांधी जी ने कहा था, ''असम की

महिला अपने कपड़ों में परियों की कहानियां बुनती हैं।'' बेहतरीन गुणवत्ता वाले रेशम के लिए मशहूर असम में इसकी कई किस्में पाई जाती हैं। इनमें मूगा सबसे खास और बेहतरीन है। अतीत में महिलाओं की शादी के लिए बुनाई को मुख्य योग्यता माना जाता था। आज भी असम के जनजातीय समूहों की रोज़मर्रा की जिंदगी में बुनाई का काम सीधे तौर पर जुड़ा है और विभिन्न जनजातीय समूहों द्वारा बुने गए रेशम की कीमत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी ज्यादा होती है।

बांस और बेंत संबंधी कला – यह एक और पारंपरिक कला है, जो इस क्षेत्र के विभिन्न राज्यों में प्रचलित है। इस क्षेत्र का मौसम बांस के विकास के लिए पर्याप्त माहौल मुहैया कराता है। मिजो लोग बेंत और बांस के अपने काम को लेकर काफी गौरवान्वित महसूस करते हैं। बास्केट बनाने के उस्ताद, बेंत की मुलायम लकड़ियों से डिजाइन तैयार करते हैं और विभिन्न मकसदों से बास्केट का इस्तेमाल करते हैं। नगालैंड में 16 से भी ज्यादा जनजातीय समूहों के लोग रहते हैं। इनमें से ज्यादातर लकड़ी, धातु और बांस के हस्तकौशल में पारंगत हैं। नगालैंड की महिलाएं बांस और बेंत के छिलकों और पतले हिस्सों से खूबसूरत और रंगीन जेवर बनाती हैं।

असम के एक शख्स की जिंदगी बेंत और बांस के सामानों के इर्दगिर्द घूमती है। चूंकि इस क्षेत्र में बांस और बेंत प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए ज्यादातर घरेलू सामान इन्हीं चीजों से बने होते हैं। धूप से बचाव के लिए अब भी पारंपरिक जप्पी सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। मशहूर चीनी यात्रा ह्वेनसांग ने जब 642 ईस्वी के आसपास असम की यात्रा की थी तो उस वक्त भी स्वागत के लिए जप्पी का इस्तेमाल किया जाता था।

कालीन – आपको सिक्किम में कालीन बुनाई का सबसे प्राचीन स्वरूप देखने को मिल सकता है। पारंपरिक डिजाइन की बुनाई का काम 'भूटिया' समुदाय द्वारा किया जाता है, जिसके लिए फ्रेम और खास तरीके से बुनाई की दरकार होती है। आप कालीन की बारीक डिजाइन में स्थानीय लोगों की कड़ी मेहनत को साफ तौर पर देख सकते हैं। अरुणाचल भी कालीनों के लिए काफी मशहूर है। अरुणाचल प्रदेश संस्कृति और हस्तकला के आधार पर तीन प्रमुख समूहों में बंटा हुआ है। बौद्ध धर्म को मानने वाले जनजातीय समूहों में शेरदुक्पेन, मोनापास और कुछ हद तक खोवा शामिल हैं। अका और मिजिस अन्य समूह हैं, जबकि मेंबा, खंबा, खमाती और सिंगफो भी इस कार्य से जुड़े हैं। हर जनजाति की अपनी विशिष्ट संस्कृति है और उनकी हस्तकलाएं उत्तर-पूर्व भारत की यात्रा करने वालों के लिए महत्वपूर्ण निशानी की तरह होती हैं। अगर आप चमकीले रंगों वाली ऐसी कालीन देखते हैं जो ड्रैगन, ज्यामितीय डिजाइन वाली है, तो इस बात की पूरी संभावना है कि यह कालीन अरुणाचल प्रदेश में बनी होगी। हाल के वर्षों में इन कालीनों का निर्यात होना भी शुरू हुआ है। ये कालीन महिलाओं की आजीविका का प्रमुख साधन हैं।

लकड़ी और धातु के उत्पाद – भारत की सच्ची कला के प्रतीक के रूप में मशहूर लकड़ियों पर नक्काशी में सिक्किम का जवाब नहीं है। इस राज्य में शानदार विहारों विरासत भवनों और मंदिरों की भरमार है और इनकी वास्तुकला में आप लकड़ियों की शानदार नक्काशी को देख सकते हैं। आपको सिक्किम के मास्क डांस में इसकी झलक देखने को मिल सकती है। पेमेन्गास्ते विहार (मोनेस्ट्री) लकड़ियों से तैयार मूर्ति कला और नक्काशी का शानदार नमूना है।

लकड़ियों की नक्काशी अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न जनजातियों की संस्कृति और परंपरा से भी जुड़ी हुई है। वांचू जनजाति के लोग भी शौक से यह काम करते हैं। उनके द्वारा लकड़ी के बनाए गए सामानों का अरुणाचल प्रदेश की हस्तकला में प्रमुख स्थान है।

जहां तक लकड़ियों की नक्काशी और डिजाइन का सवाल है, तो नगालैंड की वांचू, कोन्यक और फोम जनजाति के सौजन्य से कुछ सबसे बेहतरीन काम देखने को मिलते हैं। लकड़ी के काम में नगा लोगों का कौशल इंसानी प्रतिमा, हाथी, बाघ की छवियां और कई तरह के उपकरणों की प्रतिकृति के रूप में देखने को मिलता है। लकड़ियों से तरह-तरह की नक्काशी और अन्य डिजाइन तैयार करने का काम उनकी धार्मिक आस्थाओं से भी जुड़ा है। दरअसल, नगा समुदायों के बीच बरछी आदि का प्रचलन होने से नगा हस्तकलाओं में धातु कला लोकप्रिय है। रेन्गमा जनजाति सबसे अच्छा नगा लुहार मानी जाती है और आप इनसे तोहफे के रूप में बेहतरीन रूप से सजा बरछा हासिल कर सकते हैं।

असम में कई तरह के पारंपरिक बरतन और खूबसूरत वस्तुएं बनाई जाती हैं। सोना, चांदी और तांबा भी राज्य की पारंपरिक धातु कला का हिस्सा हैं।

यह क्षेत्र बरतन, खिलौनों के निर्माण और पारंपरिक जेवरों के मामले में पारंपरिक और खूबसूरत उत्पाद मुहैया कराता है। कुछ साल

पहले तक इस क्षेत्र की विभिन्न हस्तकलाओं और परिधानों की परंपरा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। हाल के समय में फैशन उद्योग में नए चेहरे उभरे हैं, जो उत्तर-पूर्व के कपड़ों, बुनाई और डिजाइन को पेश कर रहे हैं।

इस साल के शुरू में लैक्मे फैशन वीक के दौरान रैंप पर इसका नमूना देखने को मिला, जिसमें मेतेई जनजाति की वस्त्र संबंधी हस्तकलाओं से प्रेरणा ली गई थी। दरअसल, मणिपुर की डिजाइनर रिचाना खुमानाथम ने इसके जरिये अपनी मातृभूमि और उसकी परंपराओं की झलक पेश की थी।

फैशन टीकाकार प्रसाद बिदापा का कहना था, ''भारतीय अब ज्यादा समावेशी होना सीख रहे हैं। उत्तर-पूर्व एक जीवंत समाज है, जो अपनी सोच में काफी युवा और अंतरराष्ट्रीय है। आज इस क्षेत्र से डिजाइनर भी आ रहे हैं। कई मॉडल भी इस क्षेत्र से आती हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस क्षेत्र के और ज्यादा से ज्याद लोग इस उद्योग से जुड़ेंगे।''

दो साल पहले तक नगालैंड से ताल्लुक रखने वाले अत्सु सेखोस वहां से एकमात्र मशहूर डिजाइनर थे। अब अरुणाचल प्रदेश के जेनजुम गडी, मणिपुर की खुमानाथम भी इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मेघालय से डैनियल सिएम, त्रिपुरा के अरात्रिक देव वर्मन और सिक्किम से ताल्लुक रखने वाले कर्मा सोनम भी इस सूची में हैं। इन डिजाइनरों खासियत है कि ये स्थानीय स्तर पर बने कपड़ों का उपयोग करते हैं और इस तरह की पहचानों को आगे बढ़ाते हैं।

कुछ डिजाइनरों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नाम कमाया है। डिजाइनरों की दुनिया में उत्तर-पूर्व से एक मशहूर नाम अत्सु सेखोस का है, जिसने 2017 की सर्दियों के कॉकटेल कलेक्शन की पेशकश के साथ इस उद्योग के साथ जुड़ने की अपनी 10वीं सालगिरह मनाई। अनगामी जनजाति से ताल्लुक़ रखने वाले सेखोस के मुताबिक, उनके ज्यादातर डिजाइन का संबंध नगालैंड को उनकी जड़ों से है और वे जनजाति डिजाइन, रंगों और कपड़ों को आधुनिक स्वरूप देने का काम करते हैं।

इसी तरह, मूल रूप से मेघालय के रहने वाले स्टेसी पॉनजेनर सियाम ने अपने शहरी जनजाति फैशन ब्रांड 'लिटिल हिल पीपल' के जरिये खुद की खास पहचान बनाई है। उनके परिधान, एक्सेसरीज आदि नई डिजाइन का शानदार नमूना है, जिसमें उत्तर-पूर्व भारत की जनजातियों की बुनाई और मणिका का इस्तेमाल किया गया है।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र अपनी अवस्थिति के कारण कई तरह की खूबियों सै लैस है, लेकिन वहां कारोबार के लिए भी चुनौतियां हैं। हालांकि, पिछले कुछ साल में हालात में काफी सुधार हुआ है। इस क्षेत्र के 8 राज्यों में औद्योगिक गतिविधि में बढ़ोतरी हुई है और मेघालय, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में सबसे ज्यादा औद्योगिक विकास देखने को मिला है। भारत के बाकी राज्यों की तुलना में इस क्षेत्र में विकास संबंधी ज्यादातर सूचकांक का प्रदर्शन बेहतर है। यह विकास की कहानी महज शुरुआत है और वस्त्र उद्योग इस विकास की धुरी के तौर पर काम करेगा। ❑

YH-1086/2018

SHUBHRA RANJAN
Always Ahead

HOW to make GS Prelims a CAKEWALK?

TO ANSWER this, the idea of MCQ TOOL was mooted by our SELECTED STUDENT, MALLIKARJUN MAMANI (IRS 2014).

MCQ TOOL MOBILE APP FOR UPSC PRELIMS 2019

FEATURES

- 10,000+ MCQs mapped subtopic wise as per UPSC syllabus.
- Answer Explanation for each MCQ.
- Tool can be used in PRACTICE mode and TEST mode.
- Test Results gives Score, Rank and Percentile.
- My Dashboard metrics tracks your progress on each subtopic of UPSC syllabus.
- Tool enables you to REATTEMPT tests on subtopics to improve your performance.
- Tool provides ability to BOOKMARK important MCQs.

PERFECTION comes with PRACTICE.

Subscription Plans :

GET IT ON Google Play

1. GS Prelims Rookie (MCQ Tool): Rs 999/-
2. GS Prelims Master (MCQ Tool+Test Series): Rs 2999/-

GS Prelims will now indeed be a CAKEWALK.

YH-1081/2018

भारत में हस्तशिल्प और दस्तकारी का ऑनलाइन कारोबार

अभिषेक कुमार सिंह

भारत में ऑनलाइन खरीदारी के मुरीदों की कमी नहीं है। घर-दफ्तर की दौड़-भाग और वक्त की कमी के कारण कई लोगों को खरीदारी का यह डिजिटल इंतजाम मन मांगी मुराद के पूरा होने जैसा लगता है। मोबाइल फोन या कंप्यूटर-लैपटॉप के जरिए इन डिजिटल दुकानों को खंगालकर अपने मन माफिक सामान, मनचाही कीमत पर घर बैठे ऑर्डर देने का चलन ऐसे लोगों को काफी सुहा रहा है और इसके बल पर ई-कॉमर्स पोर्टल दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहे हैं। इन सब से ग्राहकों को फायदा हुआ तो ई-कॉमर्स का कुल कारोबार भी बढ़ा और आगे भी तेज़ी से बढ़ने के आसार हैं। मार्च, 2019 में संस्था- ईवाई इंडिया ने 'ई-कॉमर्स एवं उपभोक्ता इंटरनेट क्षेत्र- भारत ट्रेंडबुक 2019' शीर्षक से जारी रिपोर्ट में बताया कि ई-कॉमर्स और उपभोक्ता क्षेत्र की कंपनियों ने वर्ष 2018 में निवेश (प्राइवेट इक्विटी यानी पीई और वेंचर कैपिटल यानी वीसी) के जरिये 7 अरब डॉलर से ज्यादा की रकम जुटाई। इससे पता चला कि भारत में ई-कॉमर्स यानी इंटरनेट के जरिये होने वाली खरीदारी में कितनी ज्यादा बढ़त की संभावना है। असल में यह क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और इसमें कमाई के असीम अवसर खुल रहे हैं।

बुनकरों और कारीगरों के जुनून और कड़ी मेहनत से बनाए गए प्रमाणिक और खूबसूरत हस्तनिर्मित उत्पाद प्रदर्शित करने के लिए दिया गया मंच वेब पोर्टल को भी एक तरह की प्रामाणिकता प्रदान करता है। इससे वेब पोर्टल की साख इस मायने में बढ़ती है कि इस पर वे सच्चे और प्रमाणिक उत्पाद लोगों को घर बैठे मिल जाते हैं, जिन्हें खरीदने के लिए पहले लोगों को संबंधित राज्यों के उन्हीं इलाकों में जाना पड़ता है जहां ये बनाए जाते हैं

तेज़ी से बढ़ता ई-कामर्स बाज़ार

जहां तक इसके बाजार की बात है तो संस्था- इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक भारत में ई-कॉमर्स बाजार का आकार 2017 के 38.5 अरब डॉलर से बढ़कर 2026 तक 200 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा। केवल खुदरा बिक्री की बात करें तो वर्ष 2018 में इसके 31 फीसदी की तेजी के साथ 32.7 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान लगाया था जो काफी हद तक पूरा हुआ।

इसमें सबसे ज्यादा उल्लेखनीय यह है कि ई-कॉमर्स यानी डिजिटल दुकानों से होने वाली खरीद का करीब आधा (48 फीसदी) इलेक्ट्रॉनिक सामान (मोबाइल, टीवी वगैरह) के नाम है, लेकिन इसमें दूसरा नंबर तो कपड़ों का है जो कुल खरीदारी में 29 फ़ीसदी के साथ दूसरे स्थान पर है। यह देखते हुए कि मोबाइल (स्मार्टफोन) की बदौलत देश में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 50 करोड़ तक पहुंच गई है और 2021 तक यह संख्या 82 करोड़ से भी ज्यादा हो जाएगी, ऑनलाइन शॉपिंग में और विस्तार की गुंजाइश बनी हुई है। जहां तक कपड़ों और घर साफ-सफाई से लेकर घरों की साज-सज्जा वाले समानों की बिक्री का मामला है तो अब इनसे जुड़ी वस्तुएं बेचने वाली ज्यादातर वेबसाइटें आर्टिफिशयल इंटेलीजेंस (एआई) की मदद से ग्राहकों की रुचियों और खोजबीन के पैटर्न पर नजर रखती हैं और उन्हीं के मुताबिक सामानों की लिस्ट उपभोक्ताओं के सामने पेश करने लगी हैं। कह सकते हैं कि ये ऑनलाइन शॉपिंग कंपनियां एक तरह का रोचक जाल अपने संभावित ग्राहकों के इर्दगिर्द बुन देती हैं, जिससे बचकर बाहर आना आसान नहीं होता। इधर, समय की कमी ने भी लोगों को ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ प्रेरित किया है। ऊपरी तौर पर ऑनलाइन शॉपिंग के उत्सव में सभी का फायदा दिखता है। ग्राहक को कम कीमत पर सामान मिलता है, तो रिटेलर को

लेखक संस्था एफआईएस ग्लोबल से संबद्ध हैं। ईमेल: abhi.romi20@gmail.com

बिना झंझट सामान बेचने का आसान जरिया। चूंकि इसमें सप्लाई चेन (उत्पादित सामान को उपभोक्ता तक पहुंचाने की शृंखला) बेहद छोटी होती है, इसलिए कमीशन और ट्रांसपोर्टेशन पर होने वाले खर्च में कटौती हो जाती है। इससे कोई सामान बेहद कम कीमत में बेचने के बाद भी मुनाफा होता है। कह सकते हैं कि ई-कॉमर्स के विस्तार से जहां ग्राहकों की चांदी हो रही है तो उत्पादकों को भी अपना सामान उन क्षेत्रों में भी बेचने का प्लेटफार्म मिल गया है जहां तक उनकी पहुंच पहले कभी नहीं थी।

ग्रामीण हाट का सामान ई-मंच पर

साफ है कि ई-कॉमर्स की इस धूम का फायदा छोटे शिल्पकार और हस्तशिल्प कारीगर से लेकर निर्यातक तक उठाना चाहते हैं। पिछले कुछ अरसे में इस काम में एमेज़ॉन, फ्लिपकार्ट जैसी वेबसाइटों ने कई उल्लेखनीय आयोजन भी किए हैं। इन वेबसाइटों के संचालकों ने देश के हस्तशिल्प और दस्तकारी के छोटे-छोटे कारीगरों और व्यापारियों को अपने मंच (प्लेटफार्म) पर आने के बेशुमार मौके दिए हैं। साथ ही यह भी बताया है कि इस अरसे में कैसे छोटे से व्यापारी या लघु उद्यमी ने अपने यहां बनाए बैग, सजावटी सामान, कपड़े आदि देश-विदेश में बेचने का मौका हासिल किया और लाखों-करोड़ों का कारोबार करने में सफलता अर्जित की। खास तौर से एमेज़ॉन इंडिया की बात करें, तो इस पोर्टल की तरफ से वर्ष 2018 में देश के हैंडलूम उत्पादों के लिए एक खास ई-कॉमर्स स्टोर वीव्समार्ट खोला गया। इस ऑनलाइन स्टोर पर हैंडलूम ब्रांड और हैंडलूम मार्क उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए वस्त्र मंत्रालय ने एमेज़ॉन इंडिया के साथ साझीदारी की है। इस ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से बुनकरों के साथ गठबंधन किए जा रहे हैं और बताया गया कि एक साल से कम की छोटी सी अवधि में ही अभी तक इस नेटवर्क से 3000 से अधिक बुनकर जुड़ चुके हैं। इन बुनकरों के 20 हजार से ज्यादा उत्पाद वीव्समार्ट पर उपलब्ध हैं। माना जा रहा है कि वीव्समार्ट के जरिये देश के इन बुनकरों का सामान दुनिया भर में लाखों ग्राहकों तक पहुंचने और उनकी रचनात्मकता को बड़े स्तर पर प्रदर्शित किया जा सकेगा।

गौरतलब है कि वीव्समार्ट जैसे प्लेटफार्म का विचार एमेज़ॉन के अधिकारियों को वर्ष 2017 में 'कला हाट' कार्यक्रम की शुरुआत से आया था। 'कला हाट' के तहत भारत के शिल्पकारों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया गया था। इसमें खास तौर से डीसी हैंडलूम और गुजरात जनजातीय विकास विभाग जैसे विभिन्न सरकारी निकायों के साथ साझेदारी की गई थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत देश के 11 राज्यों में 1100 से अधिक बुनकर व सहकारी समितियों में 35 लाख कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसके आधार पर दावा है कि 1.5 लाख से ज्यादा बुनाई और कारीगर परिवारों को सीधे तौर पर फायदा मिला था। जहां तक ई-कॉमर्स के पोर्टलों द्वारा दस्तकारी और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने वाले आयोजनों का सवाल है, तो इसके लिए एमेज़ॉन ने तेलंगाना सरकार के साथ भी एक समझौता किया था। तेलंगाना में एमेज़ॉन ने एप्को (हैंडलूम) और लेपाक्षी (हस्तशिल्प) को दुनिया के मंच पर अपने उत्पाद प्रदर्शित करने और बेचने का जरिया दिया था। इसके बाद कुछ ऐसी ही पहलकदमी अन्य राज्यों में हुई। जैसे पश्चिम बंगाल और ओड़िशा में तन्तुजा (हैंडलूम), जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया और बोयानिका (हैंडलूम) ने एमेज़ॉन के जरिये अपने उत्पाद बेचना शुरू किया। इसके अलावा कर्नाटक

ऑनलाइन खरीदारी - दूसरा पहलू

यह मानना सही नहीं है कि ऑनलाइन शॉपिंग में सब कुछ अच्छा ही है। असल में, देश में अब ऐसे लोगों की भारी तादाद है जो ऑनलाइन बेचे जाने वाले सामानों से नाखुश हैं। वर्ष 2017 में 18 हजार लोगों पर किए गए एक सर्वेक्षण में 62 फीसदी लोगों ने कहा कि ई-कॉमर्स कंपनियों की वेबसाइटों पर किसी सामान को जिस समीक्षा (रिव्यू) में दी गई रेटिंग के आधार पर खरीदा गया, बाद में वह सामान रिव्यू के मुकाबले कमतर या असल में घटिया निकला। संस्था- सिटिजन एंगेजमेंट प्लेटफार्म लोकलसर्किल्स के इस सर्वेक्षण में कई ग्राहकों ने कहा कि ई-कॉमर्स वेबसाइटों पर लिखी गईं ज्यादातर समीक्षाएं नकली या जानबूझकर डाली गई होती हैं। यही नहीं, कुछ ई-कॉमर्स साइटें उपभोक्ताओं द्वारा लिखी गई किसी उत्पाद की खराब समीक्षाओं को प्रकाशित भी नहीं करती हैं। यही नहीं, कुछ वेबसाइटों पर (जिनमें कुछ कथित तौर पर प्रतिष्ठित भी हैं) बड़े ब्रांड के नकली सामानों के बेचे जाने की घटनाएं भी देश में हुई हैं। वर्ष 2017 में एक अमेरिकी लाइफस्टाइल और फुटवियर ब्रांड ने भारत की इलेक्ट्रॉनिक सामान बेचने वाली वेबसाइट को इस बात के लिए अदालत में घसीटा था कि उसकी वेबसाइट पर अमेरिकी ब्रांड के नकली सामान धड़ल्ले से बेचे जा रहे थे। इसके बाद कोर्ट की मदद से स्थानीय अधिकारियों की निगरानी में दिल्ली और अहमदाबाद में उक्त वेबसाइट के सात गोदामों पर छापे मारे गए थे।

हजारों ग्राहक इससे परेशान हैं कि उन्होंने जो प्रीपेड ऑर्डर दिया था, वह उन तक कभी पहुंचता ही नहीं है लेकिन उन्हें ऑनलाइन शॉपिंग कंपनी की तरफ से सामान डिलीवरी का मैसेज भेज दिया जाता है। ऐसा मैसेज भेजने के बाद ये वेबसाइट प्रायः अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं स्वीकारती, इसलिए इनसे सतर्क रहने की जरूरत है। ऐसे असंख्य ग्राहक इन वेबसाइटों के कॉल सेंटरों से जूझते

रहते हैं और ये कंपनियां हजारों ग्राहकों का पैसा लूटती रहती हैं। सोशल मीडिया पर ऐसी शिकायतों का अंबार है। अगस्त, 2018 में ई-कॉमर्स सेक्टर को नियंत्रित और व्यवस्थित करने के लिए एक नियामक (रेग्युलेटर) का प्रस्ताव दिया गया था जो इससे जुड़ी कंपनियों के कारोबार पर नजर रखेगा। मसौदे में भारतीय ऑनलाइन कंपनियों को बढ़ावा देने की बात कही गई थी। ब्रांडेड मोबाइल फोन, वाइट गुड्स और फैशन आइटम्स की थोक खरीदारी पर रोक लगाने का सुझाव दिया गया था। ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा बड़ी खरीद के बल पर सामानों की कीमत कम रखने का जो नुकसान डीलरों को उठाना पड़ रहा था, उस पर नियंत्रण पाने के लिए नीति में भारतीय और भारतीयों के नियंत्रण वाले ऑनलाइन मार्केटप्लेस को इन्वेंट्री रखने की इजाजत देने की बात कही गई थी, बशर्ते वे सामान भारत में ही खरीदे गए हों। विदेशी नियंत्रण वाली कंपनियों को यह छूट नहीं मिलेगी। नए नियमों के मुताबिक, किसी सामान के बारे में लंबे-चौड़े दावे करने और फर्जी ग्राहकों से सामानों की झूठी समीक्षा (रिव्यू) लिखवाना अनुचित वाणिज्यिक गतिविधि के दायरे में आएगा। यही नहीं, अगर कोई सामान जाली निकलता है या उसकी क्वॉलिटी ठीक नहीं होती तो इसकी जवाबदेही ई-कॉमर्स कंपनी और विक्रेता (यानी डीलर) दोनों की होगी। अभी तक ऑनलाइन कंपनियां यह कहकर बच जाती थी कि वे तो सिर्फ बिक्री का प्लेटफार्म मुहैया कराती हैं, सामान की गुणवत्ता को लेकर उनकी जिम्मेदारी नहीं है, लेकिन अब वे इतने सस्ते में नहीं छूट पाएंगी। ऐसे में टूटा हुआ सामान, गलत, नकली या जैसा विवरण वेबसाइट पर दिया था, वैसा सामान न होने पर उपभोक्ता के पास उसे वापस करने का अधिकार होगा और कंपनी को 14 दिन में रिफंड देना होगा। सामान लौटाने की पॉलिसी भी कंपनी को अपनी वेबसाइट पर प्रदर्शित करनी होगी।

और तमिलनाडु में भी एमेज़ॉन ने केंद्र सरकार की विभिन्न एजेंसियों जैसे ट्राईफेड, क्राफ्ट कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन के साथ काम करना शुरू किया। उत्तर प्रदेश में भी यूपी खादी एंड हैंडलूम्स ऑनलाइन पोर्टल के साथ मिलकर खादी समितियों को सबल बनाया जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व ऐसी ही एक पहल गुजरात में भी हुई थी, जहां गुजरात राज्य हथकरघा और हस्तशिल्प विकास निगम ने ग्लोबल ई-कॉमर्स पोर्टल ईबे (मठंल) के साथ समझौता किया था। राजस्थान आदि कई अन्य राज्यों में भी ऐसी ही पहलें हुई हैं।

बढ़ी प्रामाणिकता

ऊपरी तौर पर लगता है कि जब कोई वेब पोर्टल किसी कस्बाई या ग्रामीण परिवेश के बुनकर-दस्तकार को ई-कॉमर्स के किसी मंच से जोड़ता है तो इसका ज्यादातर फायदा गरीब हस्तशिल्प कारीगरों को ही होता है। इसमें दो राय नहीं कि इससे देश-दुनिया के असंख्य ग्राहकों तक उनका सामान पहुंचने लगता है। लेकिन इसकी एक सच्चाई यह भी है कि इससे वेब पोर्टल भी अर्जित करते हैं। एमेज़ॉन के पोर्टल वीव्समार्ट की सीईओ का इस बारे में मत है कि भारतीय बुनकर और हस्तशिल्पी बहुत बेहतरीन स्तर के उत्पाद बना रहे हैं जिन्हें दुनिया भर के खरीदार हाथोंहाथ लेते हैं। इससे बुनकरों एवं ग्राहकों को एक मंच पर लाया जा सका है, लेकिन इसका दूसरा पक्ष यह है कि बुनकरों और कारीगरों के जुनून और कड़ी मेहनत से बनाए गए प्रमाणिक और खूबसूरत हस्तनिर्मित उत्पाद प्रदर्शित करने के लिए दिया गया मंच वेब पोर्टल को भी एक तरह की प्रामाणिकता प्रदान करता है। इससे वेब पोर्टल की साख इस मायने में बढ़ती है कि इस पर वे सच्चे और प्रमाणिक उत्पाद लोगों को घर बैठे मिल

जाते हैं, जिन्हें खरीदने के लिए पहले लोगों को संबंधित राज्यों के उन्हीं इलाकों में जाना पड़ता है जहां ये बनाए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि देश के कई क्षेत्रों में ऐसी लघु और मझोले किस्म की एसएमई इकाइयां मौजूद हैं जो उच्च कोटि के परिधान, हस्तशिल्प और जैविक उत्पाद एक समृद्ध विरासत के रूप में पेश करती हैं। लेकिन उन्हें खरीद पाना पहले आसान नहीं था और इसके लिए ट्रांसपोर्टेशन आदि लागत के कारण ऊंची कीमत भी चुकानी पड़ती थी। पर अब वे उत्पाद ग्राहकों की आसान पहुंच में हैं और इससे बुनकरों, कारीगरों और हस्तशिल्पियों हस्तशिल्पिओं को ई-कॉमर्स का लाभ भी मिलने लगा है।

विदेशी बाजारों तक धमक

भारतीय हस्तशिल्प के अमेरिका व यूरोप सबसे बड़े खरीदार हैं। पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक मंदी के दौरान हस्तशिल्प का यह कारोबार पूरी तरह से चौपट हो गया। हस्तशिल्प की मांग कम होने से भारतीय निर्यातक से लेकर कारीगर तक की रोज़ी-रोटी का संकट गहरा गया था। लेकिन इधर हालात संभलने के बाद एक बार फिर अमेरिका व यूरोप में हस्तशिल्प की मांग बढ़ने लगी है। इसका फायदा लेने के लिए हस्तशिल्प कारोबारियों की नई पीढ़ी ई-कामर्स के कायदे-कानून समझते हुए और लोगों की अभिरुचियों को जानकर डिजाइन आदि में बदलाव के साथ इस उद्योग को दोबारा खड़ा करने में जुटी हुई है। इससे विदेशी बाजारों में हस्तशिल्प की मांग बढ़ने लगी है जिससे निर्यातक खुश हैं। हस्तशिल्प कारोबारियों को समझ में आ गया है कि ई-कॉमर्स के किसी मंच से जुड़ने के दो सीधे फायदे हैं। एक तो उत्पाद को किसी स्टोर की बजाय ई-कामर्स के जरिये ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक पहुंचाया जा सकता है। इससे उत्पाद की पहुंच बढ़ती है। दूसरे बिचौलियों की भूमिका समाप्त होने से कीमतों पर भी अंतर पड़ता है। उत्पाद की ज्यादा मांग होने से उसका उत्पादन बढ़ता है, जिससे लागत में कमी आती है। इससे कीमतें घट जाती हैं। यही वजह है कि आज भारतीय निर्यातकों की नई पीढ़ी ई-कॉमर्स में कारोबार के लिए असीम संभावनाएं देख रही है। इधर चूंकि कपड़ा मंत्रालय ने विदेश और देसी बाजार में कारोबार के लिए ईकॉमर्स का मंच उपलब्ध करा दिया है, इसलिए अब इसके जरिए अंतिम ग्राहक तक उत्पाद को सीधे पहुंचाया जा सकता है। इससे कारोबार की नई संभावनाएं पैदा हुई है। निर्यातकों और ग्राहकों दोनों को फायदा हुआ है। ❑

हस्तशिल्प कारोबारियों को समझ में आ गया है कि ई-कॉमर्स के किसी मंच से जुड़ने के दो सीधे फायदे हैं। एक तो उत्पाद को किसी स्टोर की बजाय ई-कामर्स के जरिये ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक पहुंचाया जा सकता है। इससे उत्पाद की पहुंच बढ़ती है। दूसरे बिचौलियों की भूमिका समाप्त होने से कीमतों पर भी अंतर पड़ता है। उत्पाद की ज्यादा मांग होने से उसका उत्पादन बढ़ता है, जिससे लागत में कमी आती है। इससे कीमतें घट जाती हैं। यही वजह है कि आज भारतीय निर्यातकों की नई पीढ़ी ई-कॉमर्स में कारोबार के लिए असीम संभावनाएं देख रही है।

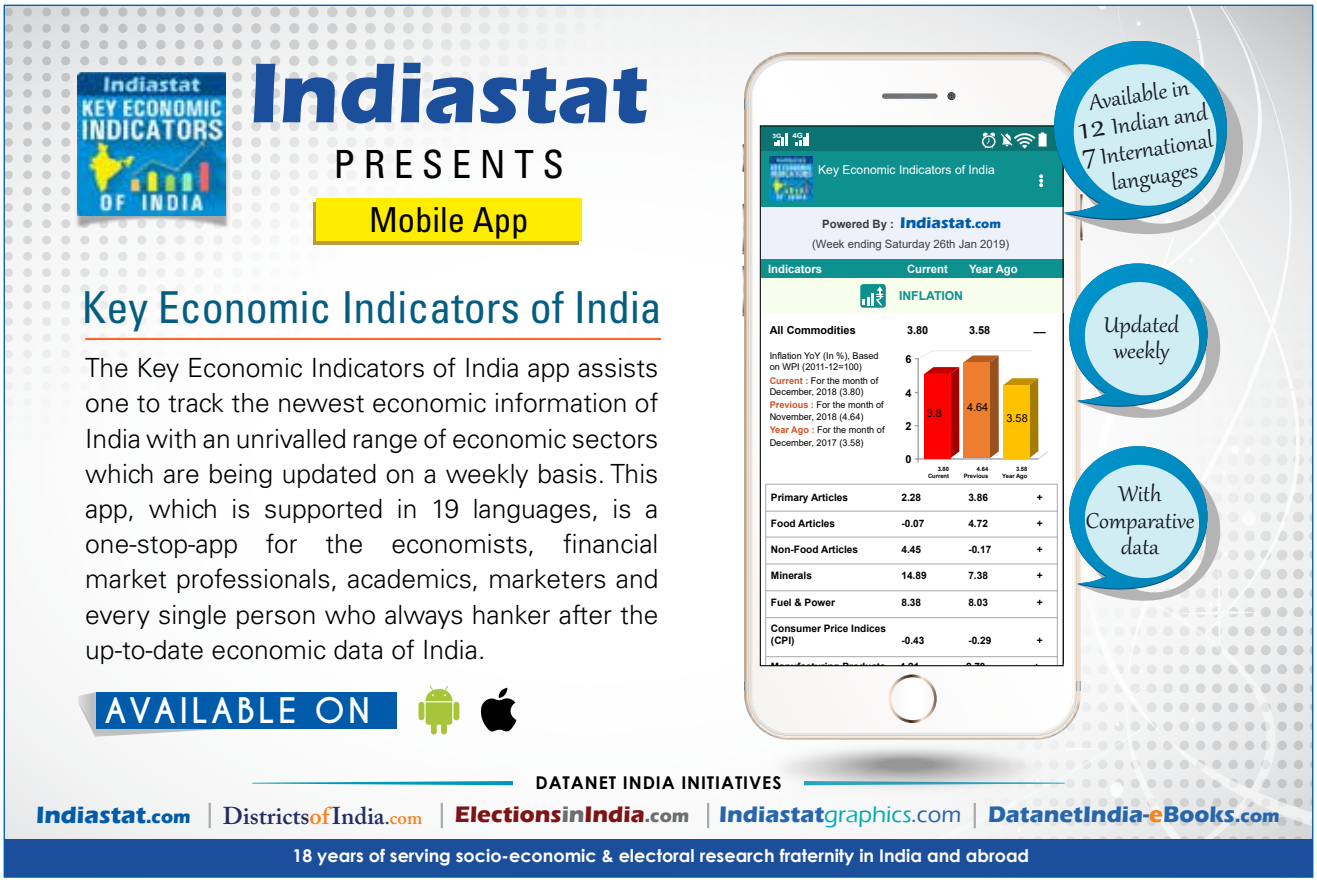

हस्तशिल्प – गांवों की खुशहाली का अनुपम स्रोत

अरुण तिवारी

''यदि भारत के ग़रीबों को खुशहाल होना है, तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्त्रोत की आवश्यकता है। वे केवल कृषि पर निर्भर नहीं रह सकते।'' महात्मा गांधी की यह उक्ति आज भी उतनी प्रासंगिक है जितनी 100 वर्ष भी ज्यादा पहले, जब यह बोली गई थी।

कोई शक नहीं कि आज हम गांव, ग़रीब, किसान और पर्यावरणीय चिंताओं से चिंतित होने के दौर में हैं। ऐसे में हमे सोचना चाहिए कि भारत के गांव-ग़रीब और प्रकृति को खुशहाल करने वाले व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्त्रोत क्या और कैसे हों?

इसका उत्तर है – हस्तशिल्प।

हस्तशिल्प यानी हाथों की कारीगरी। हस्तशिल्प उत्पाद मुख्यत: हाथ तथा हस्तनिर्मित अत्यंत सरल औजारों की मदद से बनाये जाते हैं। इनके उत्पादन में किसी मशीन का उपयोग नहीं किया जाता। सूत, कागज़, लकड़ी, मिट्टी, पत्थर, धातु, कांच, सीपी जैसा प्रकृति प्रदत् कच्चा माल ही उपयोग में लाया जाता है। उपयोग के उद्देश्यों के आधार पर हस्तशिल्प एक लोकशिल्प भी है, आध्यात्मिक शिल्प भी और वाणिज्यिक शिल्प भी। हस्तशिल्प की परिभाषा, उत्पाद के लिए उपयोग होने वाला कच्चा माल, निर्माण की प्रक्रिया और उपयोग के उद्देश्यों में वे सभी सीमायें व परिणाम आज भी मौजूद हैं, जो इसे गांव-गरीब को खुशहाल करने वाला व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्त्रोत के रूप में स्थापित करते हैं। स्थानीय कच्चा माल, स्थानीय कारीगर, स्थानीय खपत और इन तीनों पर स्थानीय नियंत्रण – ये चारों मिलकर हस्तशिल्प को ग्राम स्वराज के उस सपने को सच करने की दिशा में मील का पत्थर बनाते हैं, जो कभी राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचन्द गांधी जी की आंखों से भारत के करोड़ों निवासियों ने देखा था।

स्व-निर्भरता, स्व-विनियमन का सशक्त माध्यम

गांधी जी का मानना था कि हस्तशिल्प से व्यक्ति और गांव के समग्र संसाधनों में वृद्धि होगी। दोनो स्व-निर्भर तथा स्व-विनियमित बन जायेंगे। समाज में ताक़त और रुतबे की असमानता समाप्त हो जाएगी। समाज के बीच

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। ईमेल: amethiarun@gmail.com

हस्तशिल्प, कारीगरी भी है, रोज़गार भी और स्वावलंबन हासिल करने का माध्यम भी। पलायन, जनसंख्या वितरण में असंतुलन, संसाधनों की छीना-झपटी और इसके कारण उपज रही वैश्विक अशांति को नियंत्रित करने का भी हस्तशिल्प एक अनुपम माध्यम है

समुचित रूप से परस्पर आदान-प्रदान होगा। इससे धन का संकेन्द्रण केवल कुछ लोगों हाथों में न होकर सभी के हाथों में होगा। इससे उद्योगवाद के बुरे प्रभावों से लड़ने के महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति हो जाएगी। इससे शोषण-विहीन समाज की स्थापना का सपना साकार हो सकेगा। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए महात्मा गांधी ने लिखा था, ''उद्देश्य अक्सर व्यक्ति से बड़ा होता है। निश्चित तौर पर चरखा मुझसे बड़ा है।...चरखे में तिरंगे के तीन रंग मौजूद हैं।''

मैनचेस्टर ऑफ ईस्ट-सुआलकूची

भारतीय संदर्भ में हस्तशिल्प को लेकर गांधी का यह आकलन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि 100 वर्ष से भी अधिक पूर्व था। इसका सबसे नायाब प्रमाण है, असम का गांव - सुआलकूची। 10वीं-11वीं शताब्दी के पाल शासक राजा धर्मपाल ने कताई, बुनाई, शिल्प को बढ़ावा देने के लिए शिल्पी समुदाय को तांतीकूची से लाकर सुआलकूची में बसाया था। राजा स्वर्गदेव प्रताप सिंह (1603-1641) शासनकाल में सुआलकूची को बाकायदा एक रेशम बुनाई गांव के रूप में प्रतिष्ठित करने का काम शुरु किया गया। प्रारम्भ में तांती समुदाय की महिलाएं ही बुनकर थी। कालांतर में यह काम इतना लोकप्रिय हुआ कि पुरुष भी बुनकर बनने को लालायित हो उठे। 1930 के बाद के वर्षों में मछुआरा से लेकर ब्राह्मण समुदाय तक बुनाई के पेशे में शामिल हो गये। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान बढ़ी मांग के कारण लगभग पूरा सुआलकूची गांव ही बुनकरों के गांव में तब्दील हो गया। सूती, सिल्क और खादी वस्त्र उत्पादन की अपनी विशालता के कारण सुआलकूची आज दुनिया के नक्शे में 'मैनचेस्टर ऑफ ईस्ट' के रूप में खास रुतबा रखता है। मूंगा, इरी और श्वेत पट रेशम पर खास शिल्पकारी में सबसे धनी होने के कारण, सुआलकूची को मिला दूसरा दर्जा मशहूर 'सिल्क विलेज' का है। इस तरह अब बुनाई, सुआलकूची का पेशा नहीं, परम्परा है। समाज के इस बदले डिज़ायन का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि सुआलकूची में आज सब की पहचान, इनकी जातियों से पहले एक ही है। यहां सभी बुनकर हैं। इसका लाभ सभी के सबलीकरण के रूप में सामने आया है। यही कारण है कि सुआलकूची में हरकरघों में अब सामाजिक असमानता अथवा भेदभाव नहीं, बल्कि नारायण चन्द्र दास द्वारा रचित गीत बजता है - ''खट खट खट खटसालरे सबदे प्रिय मोर नीते...।'' 9 जनवरी, 1946 को यहां आये महात्मा गांधी ने इसे देखते हुए ही कहा था कि यहां लोग कपड़े पर सपना उतारते है।

कहना न होगा कि हस्तशिल्प, कारीगरी भी है, रोज़गार भी और स्वावलंबन हासिल करने का माध्यम भी। पलायन, जनसंख्या वितरण में असंतुलन, संसाधनों की छीना-झपटी और इसके कारण उपज रही वैश्विक अशांति को नियंत्रित करने का भी हस्तशिल्प एक अनुपम माध्यम है। बुंदेलखंड, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा जैसे तेजी से कई इलाकों में भूजल के गिरते स्तर को देखते हुए ये क्षेत्र खेतिहरों के लिए हस्तशिल्प पुनरोत्थान का माध्यम बन सकता है। हस्तशिल्प को अपनाकर ही जैविक तथा प्राकृतिक खेती को पूरे मनोयोग से अपनाने का मार्ग प्रशस्त होगा।

अनुकूल परिस्थितियां

सुखद है कि हस्तशिल्प विकास के लिए भारत में सभी अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं। कश्मीर की आरी, कशीदाकारी

व स्वर्णकारी, चंबा के रुमाल, पंजाब की फुलकारी, अलीगढ़ की फूल-पत्ती, मुरादाबाद का पीतल उद्योग, खुर्जा का पॉट्री उद्योग, बरेली का बेंत, लखनऊ की चिकनकारी, मऊ की तांत साड़ी, बनारस का ज़री वाली साड़ियां, चित्रकूट के काठ-खिलौने, अंबाला-पानीपत की खादी, राजस्थान-गुजरात की बंधेज, राबरी व शीशाकारी, जयपुरी गोटा, जैसलमेर का छापा उद्योग, नाथद्वारा की पिचवाई, उड़ीसा की पिपली, आंध्र प्रदेश की बंजारा एम्ब्राडयरी, कांचीपुरम साड़ियां, तमिलनाडु की टोडा, बंगाल का कांठा, पूर्वोत्तर का रेशम व बांस शिल्प और मणिपुर की शामिलामी, भारत भर में कहीं भी निगाह दौड़ाइये, परम्परागत हस्तशिल्प का आसमान खुला पड़ा है।

हस्तशिल्प के भारतीय उत्पादों की भारत के भीतर-बाहर, दोनों जगह मांग बढ़ी है। भारत हस्तशिल्प निर्यात कमोबेश हर वर्ष बढ़ रहा है। वर्ष-दर-वर्ष 1.65 प्रतिशत वृद्धि के साथ भारत द्वारा अप्रैल-नवम्बर, 2018 के दौरान 1,69,14,34 हज़ार करोड़ रुपये का हस्तशिल्प निर्यात का आंकड़ा है। इस बढ़ी हुई मांग के बावजूद हम हस्तशिल्प उत्पादों के कुल वैश्विक कारोबार में मात्र दो प्रतिशत की ही आपूर्ति कर पा रहे हैं।

जाहिर है कि संभावनायें अपार हैं।

हस्तशिल्प के भारतीय उत्पादों की भारत के भीतर-बाहर, दोनों जगह मांग बढ़ी है। भारत हस्तशिल्प निर्यात कमोबेश हर वर्ष बढ़ रहा है। वर्ष-दर-वर्ष 1.65 प्रतिशत वृद्धि के साथ भारत द्वारा अप्रैल-नवम्बर, 2018 के दौरान 1,69,14,34 हज़ार करोड़ रुपये का हस्तशिल्प निर्यात का आंकड़ा है। इस बढ़ी हुई मांग के बावजूद हम हस्तशिल्प उत्पादों के कुल वैश्विक कारोबार में मात्र दो प्रतिशत की ही आपूर्ति कर पा रहे हैं।

संभावना को सच में बदलने की सहयोगी भूमिका निभाने के लिए निर्यात संवर्द्धन परिषद है। केन्द्रीय खादी-ग्रामोद्योग है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम है। रोशनी, राष्ट्रीय हरकरघा विकास कार्यक्रम, बुनकर मित्र, बुनकर मुद्रा योजना, बुनकर मुद्रा पोर्टल, अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना, पहचान पहल, हस्तशिल्प पुरस्कार और प्रदर्शनियां भी हैं। किंतु हस्तशिल्प को ग्राम्य स्वावलंबन और समरसता का वास्तविक औजार बनाने के लिए कुछेक सावधानियां और कुछेक कदम ज़रूरी होंगे :

ज़रूरी कदम

1. मौजूदा हस्तशिल्पियों का ग्रामीण तहसील/ब्लॉक स्तरीय आंकड़ा कोष (डाटाबेस) बने। उनकी अभिरुचि सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण तहसील/ब्लॉक स्तर पर कार्यशालाएं हों। मौजूदा कारीगरी की गुणवत्ता, संभावित उत्पाद, कच्चे माल की स्थानीय उपलब्धतता, ढांचागत् व्यवस्था आदि के बारे में जानकारी लें। गुणवत्ता उन्नयन की दृष्टि से अपेक्षित प्रशिक्षण की ज़रूरत का आकलन करें। उन्हें उनसे संबंधित हस्तशिल्प में मौजूदा संभावनाओं, योजनाओं के बारे मे बतायें।

2. सभी जानकारियों के आधार पर सभी ग्रामीण तहसीलों को भिन्न उत्पाद क्लस्टरों में बांटें।

3. हस्तशिल्पी समूहों को उनके क्लस्टर उत्पाद के उत्पादन की कार्यनीति, योजना तथा आवश्यकता विवरण तैयार करने हेतु प्रेरित व प्रशिक्षित करें।

4. उत्पाद की गुणवत्ता से समझौता किए बगैर न्यूनतम लागत सुनिश्चित करने के सभी तरीके अपनाने हेतु प्रशिक्षण तथा प्रोत्साहन के लिए सफल हस्तशिल्पियों तथा डिज़ायन, हस्तशिल्प व विपणन से जुड़े संस्थानों को जोड़ें।

5. हस्तशिल्प से जुड़े उत्पाद 100 फीसदी शुद्ध होने के बावजूद, मशीनी मिलावटी उत्पादों की तुलना में कम कीमत पर बिकने को विवश होते हैं। कारण कि मशीनी उत्पाद की तुलना में उनकी कारीगरी कम महीन तथा कम साफ होती है। अत: इसके लिए फिनिशिंग उपकरणों के उपयोग की छूट देनी चाहिए।

6. भिन्न स्तरीय बिक्री व्यवस्था सुनिश्चित के लिए भिन्न स्तरीय योजना बने। ग्राम हाट में हस्तशिल्प उत्पादों को समुचित स्थान देकर उन्हें क्लस्टर ब्रांड की तरह प्रचारित करने के भिन्न माध्यमों का उपयोग करें।

7. ग्राम्य सेवाओं से जुड़े अधिकारी-कर्मचारियों तथा स्थानीय विद्यालयों की वर्दी आदि में स्थानीय स्तर पर बुने कपड़े का उपयोग अनिवार्य करके भी बिक्री सुनिश्चित जा सकती है।

8. यदि शासकीय खरीददारी में एक सुनिश्चित प्रतिशत हस्तशिल्प उत्पादों के लिए तय कर दिया जाए। उपहार और ख़ास मौकों की ख़रीददारी के लिए हस्तशिल्प उत्पादों को समुदाय स्वयं प्राथमिकता देना शुरु करें। गांव में फैक्टरी के बने फावड़े, कुदाल, तसले, प्लास्टिक की रस्सी, प्लास्टिक की प्लेट, दोने व गिलास की बजाय गांव के बने फावड़े, कुदाल, टोकरी, पत्तल-दोनों के उपयोग का संकल्प जग जाए। तो हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री के मार्ग स्वयंमेव प्रशस्त हो जायेंगे।

9. हस्तशिल्प व परंपरागत हस्तकलाओं की इसी महत्ता को देखते हुए महात्मा गांधी ने स्कूलों में 'नई तालीम' की वकालत की थी। इसके तहत् सात वर्ष की उम्र तक के बच्चों को, उनके पर्यावरण को ध्यान मे रखते हुए, उनके द्वारा चुने गए हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केन्द्रित शिक्षा को मातृभाषा के माध्यम से तथा नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा बनाने का प्रस्ताव मंजूर किया गया था। यदि हम चाहते हैं कि भविष्य में हस्तशिल्प एक सरकारी कार्यक्रम न होकर, एक स्वयंसिद्ध परम्परा बनकर गांवों की आजीविका का सहायक स्त्रोत बन जाये, तो 'नई तालीम' के उक्त प्रस्ताव को अनिवार्य रूप से सभी सरकारी-गैर सरकारी ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में लागू करना चाहिए।

ज़रूरी सावधानियां

1. ग्रामीण हस्तशिल्प को विकसित करने का निर्णय, नियोजन तथा क्रियान्वयन स्थानीय समुदाय को सौंपा जाए।

2. स्थानीय समुदाय को इसके लिए तैयार करने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। किंतु जब तक स्थानीय समुदाय स्वयं इसकी जवाबदेही व नेतृत्व लेने को तैयार न हो जाए, इसे उस क्लस्टर में क्रियान्वित नहीं करना चाहिए।

3. ऐसे हर प्रयास व प्रावधान को प्राथमिकता दें जो इस प्रयोग को स्वावलम्बी दिशा में ले जाने में सहयोगी हो, किन्तु इसे परावलम्बी बनाने वाले हर कदम से परहेज करें।

4. चूंकि हस्तशिल्प को गांवों में व्यवसाय व आजीविका का सहायक स्त्रोत के रूप में विकसित करने का मकसद सिर्फ आय बढ़ाना न होकर, खुशहाली के विविध आयामों को हासिल करना है। अत: इसके नियोजन, निर्माण और बिक्री में किसी भी तरह के अनैतिक तौर-तरीके यानी बेईमानी को स्थान न मिलने पाए। इससे यह धीमी, किंतु मज़बूत नींव बनकर गांव ही नहीं समस्त भारत का हित करेगा।

5. गलाकाट बाज़ारू प्रतियोगिता के इस युग में स्वयं सहायता समूहों के अनुभव प्रमाण हैं कि अच्छी से अच्छी प्रेरणा तथा उत्पाद निर्माता समूह तब तक सफल नहीं होता। जब तक उसकी बिक्री की सुनिश्चित व्यवस्था न हो। यूं भी कहा ही जाता है कि कम पूंजी, धन्धे को खा जाती है। अत: बिक्री को लेकर ठोस व स्वयं-नियंत्रित कार्ययोजना बनायें। इस कार्ययोजना में स्थानीय खपत को प्रोत्साहित करने के कारकों पर विचार अवश्य करें। ❑

लंदन पुस्तक मेला

लंदन पुस्तक मेले-2019 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के भारतीय पैविलियन में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर विशेष ज़ोर रहा। लंदन पुस्तक मेला वैश्विक पुस्तक मेलों में अहम स्थान रखता है। इस मेले का आयोजन 12 से 14 मार्च, 2019 के दौरान हुआ। लंदन पुस्तक मेले में भारतीय पैविलियन का उद्घाटन प्रकाशन विभाग की महानिदेशक और सूचना व प्रसारण मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री विक्रम सहाय ने 12 मार्च 2019 को किया। भारतीय पैविलियन की प्रदर्शनी में 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' (सीडब्ल्यूएमजी) को रखा गया। प्रकाशन विभाग गांधी साहित्य का सबसे बड़ा प्रकाशक है। 100 खंडों की यह शृंखला आज भी गांधी पर छपने वाली ज्यादातर पुस्तकों का प्रमुख आधार है। यह शृंखला 55,000 पृष्ठों से भी ज्यादा की है और गांधी जी के शब्दों (जो उन्होंने बोला और लिखा) का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। इस मूल शृंखला को तैयार करने में 38 साल (1956-94) लगे और प्रकाशन विभाग इसे सफलतापूर्वक डिजिटाइज भी कर चुका है।

गांधी जी पर कुछ और पुस्तकों को भी मेले में पेश किया गया। इनमें गांधी जी पर डी जी तेंदुलकर द्वारा लिखी शृंखला 'महात्मा' (8 खंडों में) और उन्हीं की एक अन्य किताब 'गांधी इन चंपारन', 'रोमां रोलां एंड गांधी कोरस्पॉन्डंस', जोसेफ डोक की किताब 'एम. के. गांधी- एन इंडियन पैट्रियट इन साउथ अफ्रीका' और जे. बी. कृपलानी की किताब 'गांधी-हिज़ लाइफ एंड थॉट' शामिल थीं। भारतीय पैविलियन में 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' (सीडब्ल्यूएमजी) के डिजिटल संस्करण को भी प्रदर्शित किया गया, जिसे प्रकाशन विभाग ने तैयार किया है। इसके अलावा, भारत की संस्कृति, इतिहास और पौराणिक कथाओं पर आधारित कई किताबों को भी यहां पेश किया गया। पैविलियन में महात्मा गांधी का जीवन और काल, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी और भारत की अन्य उपलब्धियों पर डिजिटल मीडिया संवाद भी उपलब्ध था।

इस दौरान लंदन ओलंपिया में एक सेमिनार का भी आयोजन भी किया गया, जो लंदन पुस्तक मेले का ही हिस्सा था। सेमिनार का विषय था- 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' (सीडब्ल्यूएमजी) के प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों का निर्माण। सेमिनार के दौरान वैश्विक समुदाय के साथ गांधी जी के नजरिये और कार्यों को साझा किया गया। सेमिनार में भाग लेने वालों को बताया गया कि सीडब्ल्यूएमजी की 100 खंडों की शृंखला संस्कृति मंत्रालय के गांधी पोर्टल पर सर्च के फॉर्मेट में मुफ्त ब्राउजिंग के जरिये उपलब्ध है। साथ ही, यह गांधी हैरिटेज पोर्टल पर भी उपलब्ध है, जिसका संचालन साबरमती आश्रम संरक्षण और स्मारक ट्रस्ट करता है।

इस अभियान को और आगे बढ़ाते हुए सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भारतीय उच्चायोग, लंदन के साथ मिलकर इंडिया हाउस, लंदन में प्रमुख गांधीवादी, प्रोफेसर सतीश कुमार के साथ वार्ता का भी आयोजन किया, जिसका विषय था, 'सतत विकास के लिए गांधीवादी मॉडल'। ❑

महिलाओं पर हमारी पुस्तकें

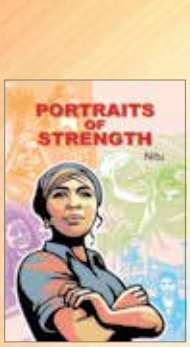

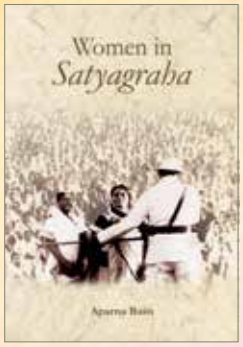

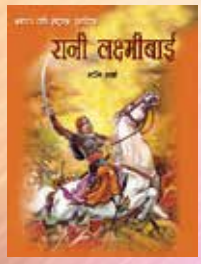

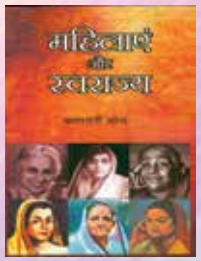

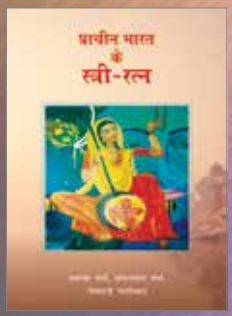

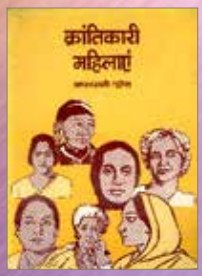

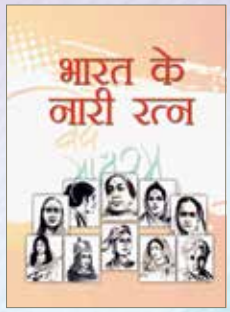

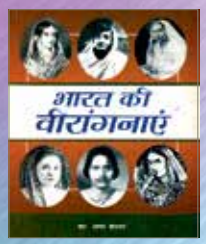

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली -110003
वेबसाइट: www.publicationsdivision.nic.in

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260, 24365610
ई-मेल : **businesswng@gmail.com**
हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए
कृपया **www.bharatkosh.gov.in** पर जाएं।
चुनिंदा ई-बुक एमेज़ॉन और गूगल प्ले पर उपलब्ध।

फॉलो करें **@ DPD_India**

रजि.सं.डीएल (एस)-05/3231/2018-20
Reg.No. D.L. (s)-05/3231/2018-20 at RMS, Delhi
29 मार्च, 2019 को प्रकाशित
• 2-3 अप्रैल, 2019 को डाक द्वारा जारी

Licenced under U (DN)-55/2018-20
आर.एन.आई. 951/57
R.N.I. 951/57

Just Released

नवीन पैटर्न व पाठ्यक्रमानुसार

NTPC Graduate & Under Graduate Posts

(गत वर्षों के प्रश्न-पत्र हल सहित)

उपकार

रेलवे भर्ती बोर्ड

कम्प्यूटर आधारित परीक्षा

(प्रथम एवं द्वितीय चरण)

Code 2400 ₹ 225.00

- जूनियर क्लर्क-कम-टाइपिस्ट
- एकाउन्ट्स क्लर्क-कम-टाइपिस्ट
- ट्रेन क्लर्क
- कॉमर्शियल-कम-टिकट क्लर्क
- ट्रैफिक असिस्टेंट
- गुड्स गार्ड
- सीनियर कॉमर्शियल-कम-टिकट क्लर्क
- सीनियर क्लर्क-कम-टाइपिस्ट
- जूनियर एकाउन्ट असस्टेंट-कम-टाइपिस्ट
- जूनियर/सीनियर टाइम कीपर
- कॉमर्शियल अप्रेन्टिस
- स्टेशन मास्टर आदि

Code 2197 ₹ 260.00

Code 2198 ₹ 385.00

English Edition

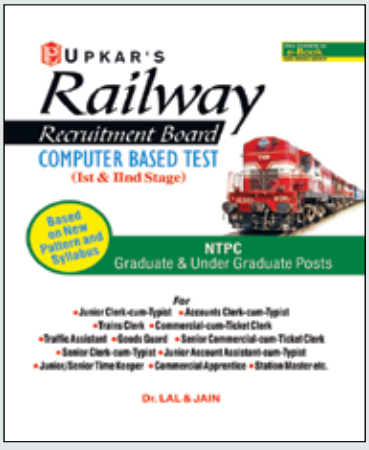

Code 1766 ₹ 290.00

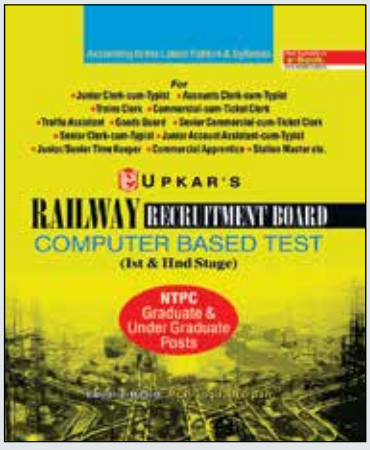

Code 1767 ₹ 335.00

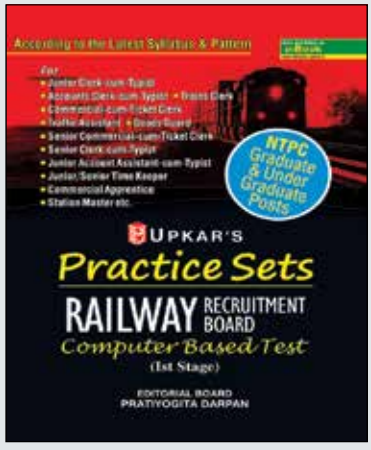

Code 1898 ₹ 230.00

UPKAR PRAKASHAN | 2/11 A, Swadeshi Bima Nagar, Agra-282 002. Ph. : 4053333, 2530966, 2531101; Fax : (0562) 4053330
• E-mail : care@upkar.in • Website : www.upkar.in
• New Delhi 23251844, 43259035 • Hyderabad 24557283 • Patna 2303340 • Kolkata 25551510 • Lucknow 4109080 • Haldwani M. 07060421008 • Nagpur M. 09370877776 • Indore 9203908088

YH-811/12/2018

प्रकाशक व मुद्रक: डॉ. साधना राउत, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा प्रकाशन विभाग के लिए जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित एवं प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. परिसर, लोधी रोड, नयी दिल्ली-110003 से प्रकाशित। वरिष्ठ संपादक: कुलश्रेष्ठ कमल